

अभिव्यक्ति

हिंदी गृह पत्रिका अंक 17



अंतरिक्ष उपयोग केंद्र, अहमदाबाद

“आज़ादी का अमृत महोत्सव” के अंतर्गत राष्ट्रीय एकता दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित विविध कार्यक्रमों की झलकियाँ

अंतरिक्ष उपयोग केंद्र में 25-31 अक्टूबर 2021 के दौरान आज़ादी का अमृत महोत्सव के अंतर्गत राष्ट्रीय एकता दिवस के उपलक्ष्य में विविध कार्यक्रमों का आयोजन किया गया, जिनमें निबंध, स्लोगन लेखन, देशभक्ति गीत, भाषण और प्रश्नमंच प्रतियोगिताएँ शामिल थीं। सभी प्रतियोगिताएँ हिंदी में आयोजित की गईं।

31 अक्टूबर 2021 को सैक के कर्मचारी एवं उनके परिवार के सदस्य प्रभात फेरी, पदयात्रा, एकता दौड़, सायकल यात्रा और पुरस्कार वितरण में शामिल हुए। सभी ने बहुत उत्साह से प्रतियोगिताओं और अन्य कार्यक्रमों में भाग लिया। निदेशक, सैक व अन्य अधिकारियों ने लौहपुरुष श्री वल्लभभाई पटेल को पुष्पांजलि अर्पित की। निदेशक महोदय ने अपने उद्बोधन में कहा कि राष्ट्र की एकता व अखंडता को बनाए रखना सभी का कर्तव्य है। हमें सदैव इस दिशा में कार्य करते रहना चाहिए। समाह के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं के विजेताओं को निदेशक महोदय के कर-कमलों से पुरस्कार वितरित किए गए।



अभिव्यक्ति

हिंदी गृह पत्रिका
अंतरिक्ष उपयोग केंद्र
वर्ष: 2021
अंक: 17

परम संरक्षक

श्री नीलेश एम. देसाई, निदेशक एवं
अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति

संरक्षक

श्री पीयूष वर्मा^{भा.दू.से.}, नियंत्रक एवं
सह-अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति

सलाहकार मंडल

श्री रणधीर कुमार, प्रधान-का. एवं सा. प्र.
श्री आशिष सोनी, प्रधान-एमसीबीडी, मीसा
श्री मुकेश कुमार मिश्र, पुस्तकालय अधिकारी

प्रधान संपादक

श्रीमती नीलू सेठ, उप निदेशक (राजभाषा)

संपादक

श्री सोनू जैन, सहायक निदेशक (राजभाषा)

प्रबंध संपादक

सुश्री सोमा करनावट, कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी

सहयोग

सुश्री रजनी सेमवाल, वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी
श्री जी. एल. त्रिवेदी, वरि. परियोजना सहायक
श्री विक्रम कुमार, कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी
श्री पवन गुप्ता, वरि. सहायक (तदर्थ)

आवरण पृष्ठ:

आवरण पृष्ठ आजादी के अमृत महोत्सव के
उपलक्ष्य में स्वतंत्रता सेनानियों को समर्पित
है, कुछ चित्र साभार इंटरनेट से लिए गए हैं।

नोट – इस पत्रिका में प्रकाशित विचार लेखकों के
अपने हैं। संपादक मंडल का उससे सहमत होना
आवश्यक नहीं है।

संपादकीय

कोरोना वैश्विक महामारी से पूरी दुनिया पिछले लगभग 2 वर्षों से जूझ रही है। इस स्थिति ने हमारी जीवनशैली को नाटकीय रूप से बदल कर रख दिया। कोरोना की वजह से बहुत-से कामों में इतना ज्यादा बदलाव आ गया है कि 2019 और 2020 को कोरोना-पूर्व (बी.सी.) और कोरोना-पश्च (ए.सी.) कहकर संबोधित किया जा रहा है। कोरोना के इस दौर में लोगों को बहुत बुरी स्थिति से गुजरना पड़ा। कहीं पर लोग अपने बुजुर्गों के साए से वंचित हुए तो कहीं छोटे-छोटे बच्चे अनाथ हो गए। बीमार होने पर इलाज में लाखों रुपए खर्च हो गए। नौकरी-व्यापार पर भी लॉकडाउन आदि का बुरा असर पड़ा, जिसकी भरपाई करने में लंबा समय निकल जाएगा।

लेकिन कोरोनाकाल के कुछ अच्छे पहलू भी हैं। इस दौरान साफ-सफाई और स्वास्थ्य के प्रति हम जितने सचेत रहे हैं, उतने शायद पहले नहीं थे। इसी प्रकार, शादी-विवाह और अन्य सामाजिक कार्यक्रम कम लोगों की उपस्थिति में, बिना तड़क-भड़क के आयोजित किए गए। इससे मेजबान पर पड़ने वाला अतिरिक्त आर्थिक बोझ कम हुआ, जिसके कारण कई परिवार कर्ज में डूबने से बच गए। लोग कई मामलों में आत्मनिर्भर बने और स्वदेशी वस्तुओं के इस्तेमाल पर जोर दिया गया। घर के काम आदि स्वयं करने में होने वाली हिचकिचाहट कुछ हद तक दूर हुई।

आशा है कि महामारी का दौर गुजर जाने के बाद भी इस तरह की अच्छी आदतें बनी रहेंगी। अपने स्वास्थ्य और साफ-सफाई के प्रति लोगों की जागृति इसी प्रकार जारी रहे। अपने स्वयं के काम अपने हाथ से करने में किसी प्रकार की हिचकिचाहट न हो। सामाजिक कार्यों में अपनी क्षमतानुसार व्यय हो, दबाव में आकर कर्ज लेकर अनावश्यक बोझ तले कोई न दबे। वर्तमान परिस्थिति से सीख लेकर, आपातकाल के लिए बचत की आदत अवश्य डालें। आड़े वक्त पर अपनी बचत ही काम आती है।

आने वाला वर्ष मंगलमय हो, इन्हीं शुभकामनाओं के साथ....

—संपादक मंडल

अनुक्रमणिका

| | | | |
|--|----|--|----|
| संदेश : निदेशक, सैक | 1 | पुस्तक समीक्षा : Why Mars and | 27 |
| संदेश : नियंत्रक, सैक | 2 | Venus Collide? | |
| पाठकों की कलम से | 3 | हिंदी कार्यशाला के मेरे अनुभव | 28 |
| अभिव्यक्ति के 16वें अंक की पृरस्कृत रचनाएं | 3 | मेरे अरमान, एहसास | 29 |
| अंतरिक्ष उपयोग केंद्र में राजभाषा गतिविधियाँ | 4 | माँ | 30 |
| ऊष्मा की कुछ रोचक बातें – 11 | 6 | भारत, मेक-इन-इंडिया, योग | 31 |
| योग की महत्ता | 8 | वो 25 दिन | 32 |
| अंतर्राष्ट्रीय चार्टर : अंतरिक्ष एवं प्रमुख | | सोशल मीडिया की लत | 33 |
| आपदाएँ | 9 | एक कहानी : शायद किन्हीं अपनों की... | 35 |
| इच्छा तो होगी न!! | 10 | कोरोना का कहर, कोरोना से रक्षण, | |
| मृदा की ईंटों का निर्माण एवं उपयोग से पूर्व | | चिड़िया का स्वप्न | 37 |
| की सावधानियाँ | 11 | संघर्ष और परिणाम, माँ | 38 |
| नदी की आत्मकथा | 14 | छत से एसी तक, दोस्त | 39 |
| उत्पाद परीक्षण तत्वज्ञान | 15 | अपना-अपना आसमान | 40 |
| वातानुकूलन : तकनीकी परिचय, अनिवार्यता | | मुख दर्पण | 41 |
| एवं अनैच्छिक भविष्य | 16 | मेरी आकांक्षा 2020 के बाद | 42 |
| कृत्रिम उपग्रह | 18 | मासूम बचपन, एक गृहिणी की दिशा | 43 |
| शुक्रयान-1 : पहला कदम पृथ्वी की बहन की | | चित्र | 44 |
| ओर | 19 | वर्ग पहेली | 45 |
| मेरी याद किसी के पास नहीं, वीर जवान | 20 | चित्र | 46 |
| किस्मत, बेटी की विदाई के बाद वाला घर | 21 | आशा, वर्षा गीत, बदलता समय | 47 |
| मेरे पापा – मेरे पहले गुरु | 22 | रिपोर्ट – हिंदी माह-2021 | 48 |
| मेरी अभिलाषा, | | रिपोर्ट – भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम की | |
| कोरोना काल में सस्ता हुआ इंसान | 23 | झलकियाँ | 50 |
| दूधसागर की यात्रा | 24 | झलकियाँ – राजभाषा कार्यशाला | 51 |
| कोरोना से कुछ सवाल, | 26 | झलकियाँ – स्वतंत्रता दिवस समारोह | 53 |
| नारी – विवशता या विशेषता | | अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन | 54 |

**नीलेश एम. देसाई,
निदेशक, सैक एवं
अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति, सैक**



वैश्विक महामारी के दौरान भी केंद्र में अनुसंधान व विकास कार्य निरंतर होते रहे हैं। पिछले कुछ महीनों में हमने न्यू बॉपल परिसर में अत्याधुनिक एवं विशाल नीतभार समाकलन एवं चेकआउट सुविधा का निर्माण पूरा कर उपयोग शुरू किया। सैक ने सीएमएस-02 (जीसैट-24), सीएमएस-04 (आईडीआरएसएस-1), ईओएस-4 (आरआईसैट-1ए), ईओएस-5 (जीआईसैट-2 डेटा प्रेषित्र), ईओएस-6 (ओशनसैट-3), जीसैट-7आर, एआईएस-2 इत्यादि के लिए पेलोड तैयार करने में महत्वपूर्ण प्रगति की है। जीसैट-24 उन्नत ईआईआरपी के साथ राष्ट्र की डीटीएच क्षमता को संवर्धित करेगा। आईडीआरएसएस गगनयान, भारत के प्रथम समानव अंतरिक्ष उड़ान मिशन के लिए डेटा प्रसारण उपग्रह प्रणाली प्रदान करेगा। जीसैट-7आर, भारत के प्रथम सैन्य उपग्रह जीसैट-7 द्वारा प्रदत्त सेवाओं को संवर्धित करेगा। जीसैट-32 राष्ट्र की एमएसएस सेवाओं को संवर्धित करेगा।

अपनी तकनीकी व वैज्ञानिक प्रकृति के मूल कार्यों के साथ-साथ पिछले डेढ़ से अधिक वर्षों से चली आ रही कोरोना त्रासदी के दौरान अंतरिक्ष उपयोग केंद्र ने मानवता की सेवा का बीड़ा उठाया। अहमदाबाद तथा आसपास के क्षेत्रों के अस्पतालों को ऑक्सीजन प्रदान करने के उद्देश्य से सैक टीम ने सभी आवश्यक सुरक्षा प्रमाण-पत्र प्राप्त करने के बाद 2 तरल नाइट्रोजन टैंकों को ऑक्सीजन टैंक में परिवर्तित किया। इसी प्रकार केंद्र के कर्मचारियों व उनके परिवार के सदस्यों की सहायता के उद्देश्य से सैक में स्वयंसेवकों की विभिन्न टीम तैयार हुईं, जिन्होंने कोरोना मरीजों की दवाई, अस्पताल में भर्ती व परिवहन के साथ उनके भोजन आदि की व्यवस्था भी की गई।

इस वर्ष हम स्वतंत्रता के 75वें वर्ष के उपलक्ष्य में “आज़ादी का अमृत महोत्सव” के अंतर्गत विभिन्न गतिविधियाँ भी आयोजित कर रहे हैं। इसमें सैक के कर्मचारियों और विद्यार्थियों व आम जनता के लिए भी विविध प्रतियोगिताएँ तथा व्याख्यान शामिल हैं। इनमें से अधिकांश गतिविधियाँ हिंदी में आयोजित की गई हैं जिससे अधिक-से-अधिक संख्या में लोग शामिल हों और स्वतंत्रता के 75वें वर्ष का उत्सव मनाएँ।

“अभिव्यक्ति” भी इन विषम परिस्थितियों के बावजूद आगे बढ़ रही है। इस अंक में कर्मचारियों और परिवार के सदस्यों से सर्वाधिक मात्रा में वैविध्यता और गुणवत्तापूर्ण रचनाएँ प्राप्त हुई हैं। पत्रिका के कलेवर में भी कई परिवर्तन कर इसे अधिक रोचक व ज्ञानवर्धक बनाने के प्रयास किए गए हैं। मुझे आशा है कि पिछले अंकों की भांति इस अंक को भी पाठकों से अच्छा प्रतिभाव प्राप्त होगा।

पत्रिका के संपादक मंडल व प्रकाशन में सहायक सभी कर्मचारियों को बहुत-बहुत बधाई व शुभकामनाएँ।

(नीलेश एम. देसाई)

पीयूष वर्मा, भा.दू.से.
नियंत्रक, एवं
सह-अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति, सैक



देश की प्रगति के लिए कई चीजें आवश्यक होती हैं। उनमें से एक अपनी भाषा भी है। जितना ज्यादा कामकाज अपनी भाषा के जरिए होगा, आगे बढ़ने की संभावना उतनी ही अधिक होगी। यह बात केवल कहने की नहीं है, विश्व के अनेक विकसित राष्ट्र इसका जीता-जागता उदाहरण हैं। इसी बात को ध्यान में रखकर हमारे संविधान निर्माताओं ने हिंदी को देश की राजभाषा बनाने का निर्णय लिया।

राजभाषा विभाग द्वारा सरकारी कामकाज में हिंदी का प्रयोग बढ़ाने के लिए अनेक प्रयास किए जा रहे हैं। अंतरिक्ष विभाग ने इसे आगे बढ़ाते हुए कई योजनाएँ जारी की हैं, जिन्हें अंतरिक्ष उपयोग केंद्र में लागू किया गया है। इसके अतिरिक्त ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों के लिए “भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम की झलकियाँ”, तकनीकी विषयों पर मौलिक पुस्तक लेखन, हिंदी तकनीकी संगोष्ठी आदि कार्यक्रमों का आयोजन नियमित रूप से किया जाता है, जिससे तकनीकी क्षेत्र में राजभाषा आगे बढ़े।

इस वर्ष भी कोरोना महामारी के प्रभाव के बावजूद हिंदी माह, भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम की झलकियाँ, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के लिए प्रतियोगिता आदि कार्यक्रम आयोजित किए गए। हिंदी तकनीकी संगोष्ठी भी जनवरी 2022 में आयोजित की जाने वाली है, जिसमें 80 से अधिक तकनीकी आलेख हिंदी में लिखे गए हैं। इतनी बड़ी संख्या में हिंदी में लेखन यह दर्शाता है कि हमारे वैज्ञानिक हमारी भाषा में तकनीकी ज्ञान का प्रचार करने के लिए कितने तत्पर हैं।

अभिव्यक्ति का 17वां अंक देखकर बहुत प्रसन्नता हो रही है। निस्संदेह, अभिव्यक्ति ने अपने सफर में कई सोपान चढ़े हैं और इसकी सामग्री की गुणवत्ता तथा विविधता में निखार आया है। पत्रिका के संपादक मंडल को सफल प्रकाशन के लिए बहुत-बहुत बधाई।

(पीयूष वर्मा)

➤ दिनांक 22.06.2021 को ईमेल के माध्यम से आपके कार्यालय की हिंदी गृह-पत्रिका 'अभिव्यक्ति' का ई-संस्करण प्राप्त हुआ।

सदैव की भांति प्रस्तुत अंक में भी विविध साहित्य सामग्री, तकनीकी लेख तथा राजभाषा गतिविधियों से संबंधित लेखों से पत्रिका संपन्न है। विशेष रूप से पृष्ठ क्रमांक 11 पर 'कैंसर से मेरी जंग' यह लेख बहुत ही साहसिक एवं जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण रखने हेतु प्रभावशाली है।

इस पत्रिका को सूक्ष्म एवं स्थूल रूप प्रदान करने वाले सभी कार्मिकों को बधाइयाँ। शुभकामनाओं सहित,

- सरला

संयुक्त निदेशक (रा.भा.)

इसरो मुख्यालय/अंतरिक्ष विभाग

➤ सर्वप्रथम आप सभी को राजभाषा के श्रेष्ठ कार्यान्वयन के पुरस्कार के लिए हार्दिक बधाई! आपके संस्थान की पत्रिका "अभिव्यक्ति" के इस अंक में सभी कृतियों के विषय-स्वरूप एवं गुणवत्ता सराहनीय हैं। पत्रिका का मुखपृष्ठ, अहमदाबाद शहर के विभिन्न भाव-स्वरूपों को दर्शाता है। इसमें छपी कविताएं बहुत ही वास्तविक एवं हृदयस्पर्शी हैं। श्री

सोनू जैन जी की कविता "प्रलय एवं सृजन" एवं श्री विष्णु कुमार सेन जी की "धन्य धन्य भारत माता" कविताएं विशेष उल्लेखनीय हैं। कैंसर जैसी मारक बीमारी से श्रीमती नीलू सेठ जी की आपबीती, उनका जीवनयुद्ध बहुत ही मार्मिक है। कई बार अपने ऊपर आए संकट को शब्दों में व्यक्त करना, पिरोना बहुत ही कठिन होता है। आपका लेख महिलाओं को और सजग एवं सचेतन करेगा। परिवार के सदस्यों का योगदान भी प्रशंसनीय है। सुश्री सोमा करनावट जी का चीजों को रीयूज़ करने के विषय में लेख वर्तमान एवं भावी प्रजन्म के लिए संवेदीकरण स्वरूप है। इसके अतिरिक्त डॉ. आभा छाबड़ा जी का वेद संबंधी एवं सुश्री अंकिता रानी जी का भारत की कृषि के विषय में लेख अत्यंत रोचक एवं तथ्यपूर्ण हैं।

इस पत्रिका में विज्ञान, साहित्य, राजभाषा की कृतियों का बढ़िया सामंजस्य देखने को मिलता है। अभिव्यक्ति पत्रिका उत्तरोत्तर समृद्ध होती जा रही है। इसके लिए अंतरिक्ष उपयोग केंद्र के राजभाषा अनुभाग एवं संपूर्ण संपादक मंडल को साधुवाद। आगे भी पत्रिका प्रगति पथ पर अडिग रहे, इसके लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

- रुमकी दत्ता

सहायक निदेशक (राजभाषा)
भौतिक अनुसंधान प्रयोगशाला

अभिव्यक्ति अंक-16 के विशेष पुरस्कार विजेता

| रचना का शीर्षक | लेखक (श्री/श्रीमती/सुश्री) | गद्य/पद्य |
|--------------------------------------|------------------------------------|--------------|
| ऊष्मा की कुछ रोचक बातें-10 | कमलेश कुमार बराया | गद्य |
| भारत का पहला सौर अभियान – आदित्य एल1 | दिनेश अग्रवाल | गद्य |
| भारत में कृषि की स्थिति – तब और अब | अंकिता रानी | गद्य |
| माँ बी॥ | गीतांजलि दुबे, बहन – प्रियंका दुबे | पद्य |
| कैसी है यह जिंदगी | सोनाली जैन | पद्य |
| धन्य धन्य भारत माता | विष्णु कुमार सेन | पद्य |
| कैंसर से मेरी जंग | नीलू सेठ | विशेष सराहना |
| वर्ग पहेली | आशिष सोनी | विशेष सराहना |



राजभाषा संबंधी गतिविधियाँ

पुरस्कार

- नराकास, अहमदाबाद के तत्वावधान में 25 जून 2021 को भौतिक अनुसंधान प्रयोगशाला (पीआरएल) द्वारा आयोजित ऑनलाइन चित्र वर्णन प्रतियोगिता के हिंदीतर भाषा वर्ग में **सुश्री दिव्या मणिकंदन को प्रोत्साहन पुरस्कार**, 27 अक्टूबर 2021 को आयकर कार्यालय द्वारा आयोजित हिंदी काव्यपाठ प्रतियोगिता में **श्रीमती सुमेधा गोयल को द्वितीय पुरस्कार** और 30 नवंबर 2021 को अंतरिक्ष उपयोग केंद्र द्वारा आयोजित अपनी हिंदी परखें प्रतियोगिता के 'क' भाषा वर्ग में **श्री सत्यनारायण धाकड़ को प्रोत्साहन पुरस्कार**, 'ख' भाषा वर्ग में **श्री देवांग मांकड़ को प्रथम पुरस्कार** और **श्री आशिष सोनी को तृतीय पुरस्कार** तथा 'ग' भाषा वर्ग में **श्री बी.एन. शर्मा को प्रथम पुरस्कार** प्राप्त हुआ।
- सीएसआईआर-एनएएल, बंगलूरु द्वारा आयोजित अंश-2021 वेबिनार में **श्रीमती श्वेता शर्मा एवं श्री दिनेश कुमार अग्रवाल को उत्तम लेख प्रस्तुति के लिए पुरस्कार** प्रदान किया गया।

भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम की झलकियां

- दिनांक 25 नवंबर 2021 को गुजरात के कच्छ जिले के ढोरी गांव में स्कूल छात्रों के लिए श्री सरकारी हाईस्कूल में अंतरिक्ष उपयोग केंद्र द्वारा भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर विक्रम साराभाई अंतरिक्ष प्रदर्शनी का आयोजन भी किया गया। कार्यक्रम में 1200 स्कूली छात्रों ने भाग लिया जिनमें से लगभग 250 छात्र विशेष पंजीकरण के माध्यम से कार्यक्रम में सक्रिय रूप से सहभागी रहे। कार्यक्रम के मुख्य आकर्षणों में सैक के वैज्ञानिकों द्वारा 02 व्याख्यान, प्रश्नोत्तर सत्र, वक्तृत्व, विज्ञान प्रदर्शनी एवं प्रश्नमंच प्रतियोगिता थी।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति प्रतियोगिता

- नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, अहमदाबाद के सदस्य कार्यालयों के कर्मचारियों के लिए 30 नवंबर 2021 को ऑनलाइन माध्यम से 'अपनी हिंदी परखें' प्रतियोगिता का

आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में हिंदी भाषा, साहित्य एवं राजभाषा प्रावधानों से संबंधित रोचक बहु-विकल्पी प्रश्न पूछे गए। प्रतियोगिता में विभिन्न कार्यालयों के लगभग 150 कर्मचारियों ने भाग लिया।

हिंदी माह

- केंद्र में विगत कई वर्षों से हिंदी माह का आयोजन किया जाता है जिसमें कार्यालय के कर्मचारी अत्यंत उत्साह से प्रतिभागिता करते हैं। वर्ष 2021 में सितंबर माह के दौरान कोविड-19 परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए अधिकांश प्रतियोगिताएँ ऑनलाइन माध्यम से आयोजित की गईं। गत 2 वर्षों की भांति हिंदी माह के दौरान आयोजित सभी प्रतियोगिताओं में 'क', 'ख' एवं 'ग' क्षेत्र भाषा वर्ग के कर्मचारियों को अलग-अलग पुरस्कार प्रदान किए गए। हिंदी माह के दौरान आयोजित इन प्रतियोगिताओं में सैक/डेकू के 1200 से भी अधिक स्टाफ सदस्यों ने भाग लिया। इस वर्ष कर्मचारियों के लिए 9 प्रतियोगिताएँ और उनके परिवार के सदस्यों के लिए 6 प्रतियोगिताएँ आयोजित की गईं। 30 सितंबर को सांस्कृतिक कार्यक्रम के साथ पुरस्कार वितरण समारोह हाइब्रिड मोड में आयोजित किया गया।

राजभाषा कार्यशाला

- सैक में प्रत्येक तिमाही के दौरान राजभाषा कार्यशाला का आयोजन किया जाता है। दिनांक 02 जून 2021 को अप्रैल-जून तिमाही, 28 जुलाई 2021 को जुलाई-सितंबर तिमाही एवं 27 अक्टूबर 2021 को अक्टूबर-दिसंबर तिमाही के लिए नवनियुक्त तकनीकी सहायक, वैज्ञानिक सहायक एवं तकनीशियन-बी को संघ की राजभाषा नीति, नियम, कार्यान्वयन तथा कंप्यूटर पर हिंदी में काम करने संबंधी प्रशिक्षण प्रदान किया गया।
- 26 नवंबर 2021 को प्रभाग प्रधान वर्ग के अधिकारियों के लिए विशेष राजभाषा कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें उन्हें तिमाही प्रगति रिपोर्ट भरने तथा शत-प्रतिशत कार्य हिंदी में करने हेतु आंतरिक राजभाषा निरीक्षण के संबंध में जानकारी प्रदान की गई।

प्रकाशन

- निदेशक, सैक द्वारा 24 मई 2021 को केंद्र की हिंदी गृह पत्रिका 'अभिव्यक्ति' के 16वें अंक की ई-प्रति का विमोचन किया गया। पत्रिका की ई-प्रति अन्य इसरो केंद्रों/यूनिटों को प्रेषित की गई तथा सैक राजभाषा पोर्टल पर अपलोड की गई।

आंतरिक राजभाषा निरीक्षण

- केंद्र में राजभाषा कार्यान्वयन को बढ़ावा देने के लिए शत-प्रतिशत कार्यालयीन कार्य हिंदी में करने हेतु तकनीकी क्षेत्र के नए अनुभागों को नामित किया गया। इस प्रकार कुल 31 प्रभागों/ अनुभागों को राजभाषा कार्यान्वयन बढ़ाने के संबंध में सुझाव दिए गए।

राजभाषा कार्यान्वयन समिति बैठक

- राजभाषा कार्यान्वयन समिति, सैक की 165वीं बैठक 24 मई 2021 को, 166वीं बैठक 06 सितंबर 2021 को और 167वीं बैठक 30 नवंबर 2021 को आयोजित की गई। निदेशक, सैक की अध्यक्षता में आयोजित इन बैठकों में संबंधित तिमाहियों के दौरान केंद्र में राजभाषा नीति के अनुपालन की समीक्षा की गई। बैठकों में राजभाषा कार्यान्वयन से संबंधित चर्चा की गई तथा केंद्र में प्रभावी राजभाषा कार्यान्वयन के लिए महत्वपूर्ण निर्णय लिए गए।

हिंदी प्रशिक्षण

- हिंदी शिक्षण योजना के अंतर्गत फरवरी-जुलाई 2021 सत्र के लिए कंप्यूटर पर हिंदी टंकण प्रशिक्षण प्राप्त 01 प्रशासनिक सहायक हिंदी टंकण परीक्षा में सम्मिलित हुए।
- अगस्त-जनवरी 2022 सत्र के लिए 02 प्रशासनिक सहायकों को टंकण प्रशिक्षण के लिए नामित किया गया है।
- वर्ष के दौरान हिंदी भाषा प्रशिक्षण के अंतर्गत अगस्त 2021 से मई 2022 के सत्र के लिए 01 स्टाफ सदस्य को प्रबोध प्रशिक्षण, 02 स्टाफ सदस्यों को प्रवीण प्रशिक्षण प्रदान किया जा रहा है।

विविध प्रोत्साहन योजनाएँ

- वर्ष 2021-22 के दौरान अधिकतर कार्यालयीन काम हिंदी में करने हेतु अंतरिक्ष राजभाषा प्रोत्साहन योजना

(सोलिस) लागू की गई। वर्ष 2020-21 की प्रोत्साहन योजना (सोलिस) के अंतर्गत 61 स्टाफ सदस्यों तथा 04 ड्राइवर/अटेंडेंट वर्ग कर्मचारियों के नामांकन प्राप्त हुए।

- हिंदी माह के दौरान अधिकाधिक कार्य हिंदी में करने के लिए विशेष प्रोत्साहन योजना लागू की गई।

- कक्षा 1 से 12 के विद्यार्थियों को हिंदी विषय में सर्वाधिक अंक प्राप्त करने के लिए योग्यता पुरस्कार प्रदान किए गए। इस योजना के अंतर्गत कुल 38 विद्यार्थियों को पुरस्कृत किया जाएगा।

- सोलिस के अंतर्गत पुस्तक पठन योजना लागू की गई।

तकनीकी एवं प्रशासनिक अनुभागों में हिंदी कार्यान्वयन को बढ़ावा देने के उद्देश्य से वर्ष के दौरान प्रोत्साहन योजना लागू की गई।

- केंद्र में अधिकारियों द्वारा हिंदी में डिक्टेशन देने हेतु प्रोत्साहन योजना लागू की गई।

अन्य गतिविधियाँ

- सैक के एमआईएसडी प्रभाग के सौजन्य से बनाए गए हिंदी ज्ञान प्रबंधन अनुप्रयोग के माध्यम से कोवा से इनपुट प्राप्त कर कर्मचारियों के हिंदी ज्ञान तथा हिंदी प्रशिक्षण का अद्यतन रोस्टर तैयार किया जाता है।

- अंतरिक्ष विभाग द्वारा जारी विक्रम साराभाई मौलिक हिंदी पुस्तक लेखन योजना के अंतर्गत 12 पुस्तकें लिखी जानी प्रस्तावित हैं। अब तक केंद्र के वैज्ञानिकों द्वारा लिखी गई 5 पुस्तकें प्राप्त हो चुकी हैं। आंतरिक समीक्षा समिति द्वारा मूल्यांकन के पश्चात् इन्हें इसरो मुख्यालय, बेंगलुरु भेजा जाएगा।

- केंद्र के सेवानिवृत्त होने वाले कर्मिकों के लिए प्रत्येक माह आयोजित होने वाले विदाई समारोह संबंधी सभी कार्य हिंदी में किए गए।

- केंद्र की मासिक प्रगति रिपोर्ट का हर माह नियमित रूप से हिंदी रूपांतरण तैयार कर विभाग को प्रेषित किया गया।

ऊष्मा की कुछ रोचक बातें - 11

- कमलेश कुमार बराया



1. काला रंग (Black paint) गर्म माना जाता है फिर भी उपग्रहों की आंतरिक सतहों पर काला रंग क्यों किया जाता है?

किसी भी रंग का गर्म या ठंडा होना इस बात पर निर्भर करता है कि उस रंग की सतह का सूर्य के प्रकाश के सामने कैसा व्यवहार होता है। काले रंग की सतह सूर्य के प्रकाश के सामने सफेद रंग की सतह की तुलना में अधिक गर्म हो जाती है, इसलिए काले रंग को गर्म और सफेद रंग को ठंडा माना जाता है। सूर्य की सतह अत्यधिक उच्च तापमान (लगभग 5500°C) पर होने के कारण उसके प्रकाश में दृश्यविकिरण (Visible light) की सर्वाधिक तीव्रता होती है जिसकी तरंगदैर्घ्य (Wave length) 0.4 से 0.7 माइक्रॉन होती है। सौर प्रकाश में लगभग आधी ऊर्जा 0.7 माइक्रॉन से कम तरंगदैर्घ्य के विकिरण की होती है। किसी सतह का तापमान कम होने पर उससे उत्सर्जित विकिरणों की तरंगदैर्घ्य बढ़ जाती है। उपग्रहों में उपकरणों की सतहों का तापमान लगभग 10 से 40°C की रेंज में रखना होता है। इन तापमानों पर सतहों से अवरक्त विकिरणों (Infrared or IR radiation) का उत्सर्जन होता है। अवरक्त विकिरणों की तरंगदैर्घ्य (3 से 50 माइक्रॉन) दृश्य विकिरणों की तरंगदैर्घ्य की तुलना में अधिक लंबी होती है। इन अवरक्त विकिरणों में 8 से 10 माइक्रॉन तरंगदैर्घ्य के विकिरणों की सर्वाधिक तीव्रता होती है। सफेद रंग की सतह सौर प्रकाश के बड़े भाग को परावर्तित कर देती है इसलिए सूर्य के प्रकाश के सामने ठंडी रहती है जबकि काले रंग की सतह 95 प्रतिशत से अधिक सौर प्रकाश को अवशोषित कर लेती है, इसलिए वह सूर्य के प्रकाश के सामने गर्म हो जाती है।

उपग्रह की आंतरिक सतहों पर सौर प्रकाश अनुपस्थित होता है लेकिन उपग्रह की बाहरी सतहों पर ऊष्माधारों में समय के साथ भारी उतार-चढ़ाव होते रहते हैं। एक ही समय उपग्रह के किसी फलक (Panel) पर सूर्य का प्रकाश गिरता है, तो कोई फलक केवल ठंडे अंतरिक्ष को देखता है और कुछ फलकों पर ऊष्मारोधी चादरों का आवरण होता है। इसके अतिरिक्त उपग्रह की

भारी असमानता हो सकती है। इसलिए बाहरी एवं आंतरिक दोनों सतहों पर ऊष्माधारों में विषमता होने के कारण उपग्रहों की आंतरिक सतहों के तापमानों में भी विषमता होती है। उपग्रह के ऊष्मा नियमन तंत्र का यह प्रयास रहता है कि उसकी विभिन्न सतहों पर तापमानों की विषमता न्यूनतम हो जाए। उपग्रह की सतहों से अवरक्त विकिरणों का ही उत्सर्जन होता है। जो सतह अवरक्त विकिरणों की अच्छी अवशोषक होती है, वो उन विकिरणों की अच्छी उत्सर्जक भी होती है, अर्थात् अवरक्त विकिरणों के लिए सतहों का अवशोषणांक एवं उत्सर्जनांक का मान समान होता है। किसी सतह द्वारा विकिरण को अवशोषित एवं उत्सर्जित करने की क्षमता को क्रमशः अवशोषणांक एवं उत्सर्जनांक द्वारा जाना जाता है। काले रंग की सतह अवरक्त विकिरणों की उत्कृष्ट अवशोषक एवं उत्सर्जक दोनों ही होती है।



उपग्रह के फलक (Panel) पैनल की सतहों पर काला रंग

काले रंग की सतह उसके ऊपर गिरने वाले 90 प्रतिशत अवरक्त विकिरणों को अवशोषित कर लेती है। ये सतह अवरक्त विकिरणों का उत्सर्जन भी 90 प्रतिशत दक्षता के साथ करती है। इसलिए उपग्रहों के अंदर काले रंग की सतहों के मध्य ऊष्मा विनिमय भी बेहतर होता है। ऊष्मा हमेशा अधिक तापमान से कम तापमान की ओर प्रवाहित होती है। इसलिए ऊष्मा का यह प्रवाह अधिक तापमान की सतहों से कम तापमान की सतहों की ओर होता है। इस तरह ऊष्मा विनिमय के कारण अधिक तापमान वाली सतहों का तापमान कम होने लगता है तथा कम तापमान वाली सतहों का तापमान अधिक होने लगता है।

इस प्रकार उपग्रहों की सतहों पर काला रंग, उनके तापमानों को एक समान लाने का प्रयास करता है। उपग्रह की सतहों पर एक समान तापमान होने से उसका ताप नियंत्रण आसान हो जाता है। उपग्रह की संरचना की सुगढ़ता के लिए भी उपग्रह की सतहों पर तापीय विषमता न्यूनतम होनी चाहिए।

काले रंग की सतहों के विपरीत धातु की पॉलिश की हुई सतहों का उत्सर्जनांक बहुत कम होता है। इसीलिए उपग्रह के उपकरणों में सतहों के मध्य विकिरण द्वारा ऊष्मा संचरण को न्यूनतम करने के लिए सतहों पर स्वर्ण परत या अल्युमिनियम टेपों का उपयोग किया जाता है।

2. हमारे शरीर के तापमान को हम प्रायः फारेन्हाइट स्केल पर ही क्यों देखते हैं?

हम मौसम, उद्योगों एवं वैज्ञानिक प्रयोगों के संदर्भ में तापमान की बात करते हैं तब डिग्री सेल्सियस (° से.) या केल्विन (के.) स्केल में ही बात करते हैं, लेकिन जब हमें बुखार आ जाता है तो थर्मामीटर में हम हमारा तापमान डिग्री फारेन्हाइट (° फा.) में देखते हैं तथा चिकित्सक को भी शरीर का तापमान फारेन्हाइट में ही बताते हैं। ऐसा क्यों? पानी शून्य डिग्री सेल्सियस पर बर्फ के रूप में जमने लगता है और 100 डिग्री सेल्सियस पर उबलने लगता है। सेल्सियस स्केल में जल के जमाव बिंदु से उबाल बिंदु तक के तापमान की रेंज को 100 भागों में बांटा गया है, इस रेंज को 100 ग्रेड में विभाजित होने के कारण सेल्सियस को सेन्टीग्रेड भी कहा जाता है। फारेन्हाइट स्केल पर पानी का जमाव बिंदु 32 डिग्री फारेन्हाइट एवं उबाल बिंदु 212 डिग्री फारेन्हाइट होता है। फारेन्हाइट स्केल में जमाव बिंदु और उबाल बिंदु के मध्य तापमान में 180 डिग्री फारेन्हाइट का अंतर होता है। जिन तापमानों की रेंज को सेल्सियस स्केल में 100 भागों में विभाजित किया गया है फारेन्हाइट स्केल में उन्हीं तापमानों की रेंज को 180 भागों में विभाजित किया गया है। एक डिग्री फारेन्हाइट तापमान में अंतर एक डिग्री सेल्सियस के तापमान में अंतर से कम होता है। इसलिए फारेन्हाइट में हम तापमान के सूक्ष्म परिवर्तन को भी बेहतर सटीकता से बता सकते हैं। 95° फा. 35° से. होता है। लेकिन 96° फा. 35.55° से. होता है। सेल्सियस में 10 डिग्री तापमान की बढ़ोतरी फारेन्हाइट में 18 डिग्री की बढ़ोतरी के बराबर होती है। इसलिए फारेन्हाइट में दशमलव बिंदु का उपयोग किए बिना भी तापमान को अधिक परिशुद्धता के साथ मापा जा सकता है। जो आमजन के लिए बहुत ही सुविधाजनक होता है।

हमारे दैनिक जीवन में 100° फा. तापमान अधिक व्यावहारिक है। हमारे शरीर का सामान्य तापमान 98.6° फा. या इससे थोड़ा ही कम होता है। शरीर का सामान्य तापमान 100° फा. के नजदीक होने से यह अंक आमजन के लिए अलार्म का कार्य करता है। जैसे ही तापमान 100° फा. के नजदीक आने लगता है, हम चौकन्ने हो जाते हैं कि शरीर में कुछ असामान्य है। जबकि सेल्सियस में 100° फा. के समकक्ष अंक 37.7 होता है, जो कि आमजन के लिए उपयोग में भी कठिन है। 100° से. पानी का उबाल बिंदु होता है, लेकिन इस तापमान का दैनिक जीवन में कम ही उपयोग होता है।

तापमान में अंतर के हिसाब से सेल्सियस और केल्विन समान होते हैं। 1 डिग्री सेल्सियस तापमान में अंतर 1 केल्विन तापमान में अंतर के समान ही होता है। केल्विन स्केल तापमान की परम स्केल है अर्थात् यह शून्य से प्रारंभ होती है, इसमें कोई ऋणात्मक तापमान नहीं होता है। शून्य केल्विन पर गैसों का दाब भी शून्य हो जाता है तथा शून्य केल्विन के ऊपर गैसों का दाब केल्विन स्केल पर तापमान के साथ समानुपातिक संबंध रखता है। कई वैज्ञानिक सिद्धांत परम तापमान पर आधारित होने के कारण केल्विन स्केल का उपयोग वैज्ञानिक गणनाओं में किया जाता है।

3. कुओं, नलकूपों का जल गर्मी में ठंडा और सर्दियों में गर्म क्यों लगता है?

कुओं तथा नलकूपों के द्वारा भूमिगत जल को कई उपयोगों के लिए निकाला जाता है। आपने महसूस किया होगा कि चाहे कड़ाके की ठंड हो या झुलसा देने वाली गर्मी, दोनों ही परिस्थितियों में भूमिगत जल का तापमान आरामदायक लगता है। कड़ाके की ठंड में भूमिगत जल हमें गरमाहट तथा गर्मी में शीतलता प्रदान करता है। ऐसा क्यों? हमारे देश में कई स्थानों पर गर्मी में तापमान 45° से. से अधिक तथा तथा ठंड के मौसम में शून्य डिग्री सेल्सियस तक भी पहुंच जाता है। वर्षभर भूमि की सतह तथा उसके ऊपर वायु का तापमान तो मौसम के अनुसार बदलता रहता है लेकिन जैसे जैसे हम धरती की सतह के अंदर जाते हैं तो तापमान में उतार-चढ़ाव भी कम होते जाते हैं। आजकल भूमिगत जल सैकड़ों फीट गहराई से निकाला जाता है। इतनी गहराई पर भूमिगत जल के तापमान में उतार-चढ़ाव बहुत कम या नगण्य होते हैं।

वास्तव में भूमिगत जल का तापमान वातावरण के तापमान की तुलना में वर्षभर लगभग स्थिर रहता है। यह तापमान उस स्थान पर भूमि की सतह के वर्षभर के औसत तापमान के नजदीक ही रहता है। कुओं तथा नलकूपों के जल तक सौर प्रकाश शून्य या अतिअल्प मात्रा में पहुंचता है। यह जल भूमि के अंदर कई फीट गहराई में होता है। भूमि की मिट्टी की ऊष्मीय चालकता बहुत कम होती है। हम गर्म चाय या दूध से भरे मिट्टी के कुल्हड़ को आसानी से हाथ में पकड़ सकते हैं लेकिन गर्म चाय या दूध से भरे स्टील के गिलास को हाथ से पकड़ना मुश्किल होता है। ऐसा मिट्टी की ऊष्मीय चालकता कम होने के कारण ही होता है, परिणामस्वरूप मिट्टी एक अच्छे ऊष्मारोधक की तरह कार्य करती है। इसलिए भूमिगत जल और भूमि की सतह के मध्य में ऊष्मा का आदान प्रदान बहुत कम होता है। इसके अतिरिक्त जल की विशिष्ट ऊष्मा अर्थात ऊष्मा ग्रहण करने की क्षमता बहुत अच्छी होती है। 1 किलोग्राम जल का तापमान 1 डिग्री बढ़ाने के लिए 1000 कैलोरी ऊष्मा की आवश्यकता होती है जबकि 1 किलोग्राम तांबे का तापमान 1

डिग्री बढ़ाने के लिए केवल 92 कैलोरी ऊष्मा की आवश्यकता होती है। इसी कारण समुद्रों के जल के तापमान में भी उतार-चढ़ाव भूमि की सतह के तापमानों के उतार-चढ़ाव से कम होते हैं। इसलिए भूमिगत जल के द्वारा आस-पास के परिवेश से थोड़ी ऊष्मा का आदान प्रदान होने पर भी जल के तापमान में परिवर्तन नगण्य ही होता है। इन कारणों से भूमिगत जल का तापमान वर्ष भर लगभग स्थिर ही बना रहता है। अगर किसी स्थान का वर्षभर का औसत तापमान 25° से. है तो भूमिगत जल तापमान भी 25° से. के आसपास ही बना रहता है। गर्मी में वातावरण का तापमान 45° से. पहुंचने पर हमें यह जल ठंडा महसूस होता है क्योंकि उस जल का तापमान वातावरण के तापमान से कम होता है। सर्दियों में जब वातावरण का तापमान 5 से 10° से. होता है तो भूमिगत जल का तापमान वातावरण के तापमान से अधिक होने के कारण गर्म महसूस होता है। इसलिए वातावरण के तापमान में भूमिगत जल के तापमान की तुलना में बहुत अधिक उतार-चढ़ाव होने के कारण हमें भूमिगत जल गर्मी में ठंडा और सर्दियों में गर्म महसूस होता है।

योग की महत्ता

- डॉ. प्रज्ञा कुशवाहा



आज पश्चिमी सभ्यता से प्रभावित होकर योग सिर्फ शरीर को स्वस्थ रखने के लिए किया जाने वाला व्यायाम बन कर रह गया है। हमारे वेदों में योग के माध्यम से कुण्डलिनी जागरण कर आध्यात्मिक उत्थान (परम-शक्ति का ज्ञान) के तरीके हजारों-लाखों साल पहले ही लिपिबद्ध किये जा चुके हैं। इनके अनुसार, योग सिर्फ शरीर ही नहीं बल्कि मन को स्वस्थ रखने के लिए भी किया जाना चाहिए। योग के ज्ञान के बिना मानव शरीर एक ऐसे स्मार्ट फोन की तरह बन चुका है जिसका उपयोग हम सिर्फ पेपर को दबा कर रखने वाले पेपर-वेट की तरह कर रहे हों। योग की महत्ता को एक बचपन की कहानी के माध्यम से समझा जा सकता है।

एक दिन गोपाल अपने माता पिता के साथ मेला देखने गया। उसने कभी मिठाई, तो कभी गुब्बारों को खरीदने की मांग की। हर खिलौने की जिद करता हुआ गोपाल, अपनी सभी बातों को रो-रोकर मनवा रहा था। उसे कोई चिंता नहीं थी कि कितना पैसा खर्च हो रहा है? या कितना पैसा बचाना

होगा घर वापिस जाने के लिए? एक खिलौने वाले के पीछे दौड़ने की हडबड़ाहट में गोपाल ने अचानक अपने माता-पिता का हाथ छोड़ दिया।

उस एक घंटे में गोपाल को किसी भी खिलौने से खेलने का मन नहीं हुआ, कोई भी मिठाई खाने का जी नहीं किया। अंत में हार के उसने रोना और अपनी माँ को पुकारना शुरु कर दिया। एक सज्जन ने गोपाल का रोना सुनकर, मेले के प्रबंधक से उसके माता-पिता का नाम पुकारने की गुजारिश की और फिर गोपाल के पिता ने मंच पर आकर गोपाल को अपनी गोद में उठा लिया। उस क्षण गोपाल की खुशी का कोई ठिकाना नहीं रहा था।

कुछ ऐसा ही चमत्कार 'योग' करता है हमारी जिंदगी में। योग का अर्थ होता है जोड़ना, अपने तन-मन को उस परम शक्ति से जोड़ना, जो हमारे अस्तित्व का कारण है। योग के माध्यम से, हम उस परम शक्ति का हाथ पकड़ कर, जीवन में आने वाली कठिनाइयों का सामना आसानी से कर सकते हैं। गोपाल की ही तरह, हमें भी यह समझना होगा कि असली खुशी परम शक्ति (माता-पिता) का हाथ पकड़े हुए ही मिलती है। तब हमें भविष्य की चिंताएं नहीं सताती हैं, क्योंकि हमें हर समय यह अहसास होता है कि परम शक्ति हमारा ध्यान रख रही है।

अन्तर्राष्ट्रीय-चार्टर: अंतरिक्ष एवं प्रमुख आपदाएं

- सी. पी. सिंह



हमारी पृथ्वी पर प्राकृतिक अथवा मानव-जनित आपदाओं की कमी नहीं है और हर साल तरह-तरह की आपदाओं की वजह से लाखों लोग जान-माल गंवा देते हैं। ज्यादातर आपदाओं में संचार माध्यम भी ठप्प पड़ जाते हैं या फिर आपदा स्थल दूरदराज के इलाके एवं दुर्गम स्थानों में होने की वजह से भी राहत एवं आपदा प्रबंधन का कार्य दूभर हो जाता है। ऐसे में राहत कार्यों में लगे हुए लोगों तक सटीक एवं समय रहते जानकारी मुहैया कराने में कृत्रिम उपग्रहों का इस्तेमाल ही एक मात्र विकल्प होता है। सत्तर के दशक में ही सुदूर संवेदन की इस उपयोगिता को समझ लिया गया था और धीरे-धीरे वैज्ञानिकों ने कुछ प्रमुख आपदाओं के लिए अंतरिक्ष से अवलोकित आंकड़ों के अलग-अलग प्रारूप बना कर बहुत ही उपयोगी सिद्ध कर लिया। लेकिन अभी भी उपग्रहों से प्राप्त चित्रों को पाने के लिए या तो उपग्रह को आपदा स्थल की कक्षा में आने के बाद चित्र लेने तक का इंतजार करना पड़ता था या उनको खरीदने की प्रक्रिया से गुजरना पड़ता था जिसमें बहुमूल्य समय निकल जाता था।

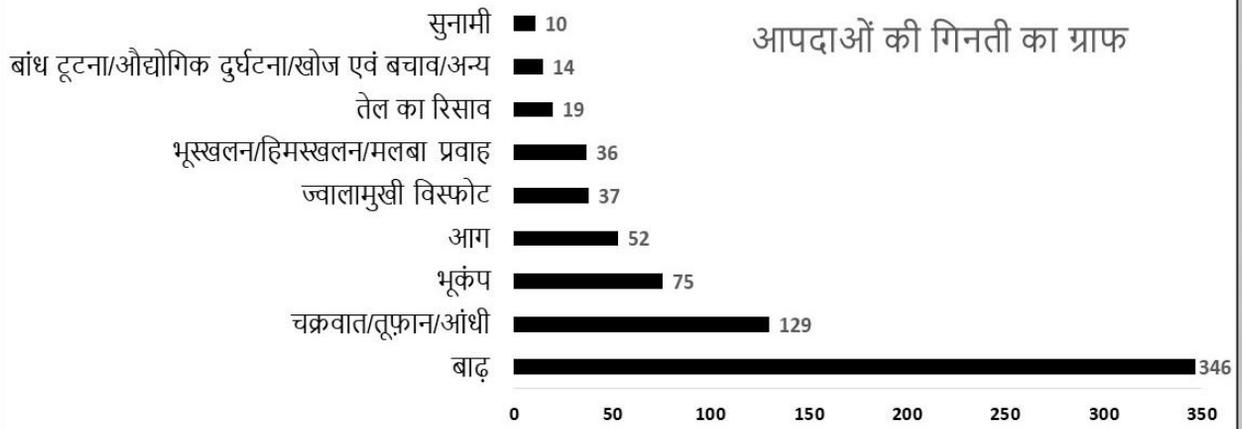
अंततोगत्वा 1999 में एक अन्तर्राष्ट्रीय चार्टर की परिकल्पना की गयी और एक ऐसा गैर-बाध्यकारी चार्टर बनाया गया जो कुछ प्रमुख आपदाओं के समय राहत संगठनों के काम आ सके। उपग्रहों के डेटा को निःशुल्क देने और उपग्रहों को आपदा स्थल का चित्र लेने के लिए वरीयता देने की सुविधा रखी गयी। उपग्रहों को उनकी नियत कक्षा से मोड़ के भी चित्र लिए जाते हैं ताकि समय रहते आपदा की विभीषिका का आकलन किया जा सके। इस अन्तर्राष्ट्रीय-चार्टर का शुभारंभ ऑस्ट्रेलिया के वियेना में जुलाई 1999 को आयोजित यूनिस्पेस-3 सम्मेलन के बाद यूरोपियन अंतरिक्ष एजेंसी तथा फ्रांस की अंतरिक्ष एजेंसी सीएनईएस ने किया था। हालाँकि यह अक्टूबर 2000 में कैनैडियन अंतरिक्ष एजेंसी द्वारा चार्टर पर हस्ताक्षर करने के बाद औपचारिक रूप से नवंबर 01, 2000 को मुख्य रूप से प्रचलन में आया। चार्टर के लागू होने के कुछ दिनों बाद 27 नवंबर को ही इसे सक्रिय करने की जरूरत आ गई जब स्लोवेनिया में एक भूस्खलन की घटना घटी। इस शुरुआती दौर में ईआरएस, एन्विसैट, स्पॉट, फॉर्मसैट एवं रेडारसैट उपग्रह ही इस्तेमाल में आते रहे। अब तो इस चार्टर में यूरोपीय देशों के साथ 12

देशों की 17 अंतरिक्ष कार्यक्रमों से जुड़ी संस्थाएं साथ आ चुकी हैं। भारत भी इसरो के साथ इस चार्टर का एक अभिन्न अंग है। आजकल तो विभिन्न निजी अंतरिक्ष एजेंसियों के उपग्रह भी आकस्मिक आपदाओं के समय मानवीय हितों की रक्षा के लिए काम में लाये जा रहे हैं। आपदा प्रबंधन के काम में लाये जा रहे कुल सक्रिय उपग्रहों की संख्या अब 61 है।

सर्वप्रथम दिसंबर 2001 में उत्तर-पूर्वी फ्रांस में बाढ़ के लिए चार्टर को सक्रिय किया गया था तथा इसके बाद मलेशिया एयरलाइन फ्लाइट-370 की खोज में भी उपयोग में लाया गया। इसके अलावा वर्ष 2014 में दक्षिणी अफ्रीका में इबोला विषाणु के प्रसार के मानचित्रण हेतु भी इसका उपयोग किया गया। यह चार्टर भूकंप, ज्वालामुखी विस्फोट, तूफान, दावाग्रि, सुनामी, तेल के रिसाव, औद्योगिक दुर्घटना, हिमपात एवं भूस्खलन के दौरान उपयोग करने में प्रमुख भूमिका निभाता है। यह चार्टर सिर्फ आपदा प्रबंधन के शुरुआती दौर में ही मदद प्रदान करता है और यह सही भी है क्योंकि एक बार राहत कार्य शुरू हो जाने के बाद जमीनी स्थिति का ज्ञान भी हो जाता है। ज्यादातर मामलों में चार्टर से एक से चार हफ्तों का सहयोग मिलता है।

चार्टर को सक्रिय करने के लिए सदस्य देशों को अधिकार प्राप्त होते हैं और जरूरत पड़ने पर आपदा प्रबंधन से जुड़े हुए सदस्य संस्थान के एक अधिकृत अधिकारी द्वारा चार्टर को सक्रिय किया जा सकता है। चार्टर के सफलतापूर्वक सक्रियण के बाद, आपदा के प्रकार और उपलब्ध उपग्रह संसाधनों के आधार पर, आपदा प्रबंधन के लिए प्रभावित क्षेत्रों का डेटा कुछ घंटों या एक दो दिन के भीतर ही मिलने लगता है। यह डेटा चार्टर सक्रियण की पूरी अवधि के दौरान अबाधित तरीके से चार्टर के पोर्टल पर रखा जाता रहता है जो आपदा के बारे में बहुमूल्य जानकारियां प्रदान करता है, जिसे जमीन पर कम समय में एकत्र करना संभव नहीं है। यह लेख लिखे जाने तक 129 देशों में घटित आपदाओं के लिए इस चार्टर को 718 बार सक्रिय किया जा चुका है। अभी मई 2021 में दो बड़े चक्रवातों की वजह से इसरो द्वारा इस चार्टर को दो बार सक्रिय किया गया। सबसे पहले चक्रवात "ताउते" की वजह से यह 16 मई को सक्रिय किया

आपदाओं की गिनती का ग्राफ



गया और दूसरी बार 25 मई को चक्रवात "यास" की वजह से। इसके बाद हाल ही में जून के पहले हफ्ते में हमारे पड़ोसी देश श्रीलंका में आई दो आपदाओं (बाढ़ और तेल के रिसाव) के लिए भी इसे सक्रिय किया गया है।

इन सारी आपदाओं के डेटा पर अगर एक नज़र डालें तो पता चलता है कि विश्व भर में बाढ़ की विभीषिका सबसे ज्यादा है। बाढ़ की वजह से ही कुल 346 बार इस चार्टर को सक्रिय करना पड़ा है और उसके बाद आंधी-तूफान और चक्रवात का नंबर आता है। भूकंप, आग एवं ज्वालामुखी विस्फोट की घटनाओं की वजह से चार्टर को तुलनात्मक रूप से काफी कम बार सक्रिय करना पड़ा है। अगर विभिन्न देशों की बात करें तो चार्टर सक्रिय करने में अमेरिका पहले नंबर पर और भारत दूसरे नंबर पर आता है और तो और बाढ़ की वजह से ही इन दोनों देशों में सबसे ज्यादा बार चार्टर को सक्रिय करना पड़ा है।

इस पृथ्वी का कोई भी महाद्वीप ऐसा नहीं रहा है जहाँ पर चार्टर द्वारा आपदा प्रबंधन के लिए उपग्रहों से मदद न की गयी हो। कुछ समय पूर्व तक अंटार्कटिका ही एक मात्र ऐसा महाद्वीप था जहाँ पर इस चार्टर के सक्रिय करने की जरूरत नहीं आई थी, लेकिन 10 दिसम्बर 2019 को इस चार्टर को सक्रिय करना पड़ा जब पता चला कि 9 दिसम्बर 2019 को चिली से अंटार्कटिका (किंग जॉर्ज द्वीप) के लिए उड़ान भरने के बाद एक हवाई जहाज (C-130) गायब हो गया है।

जहाज गंतव्य स्थान पर पहुँचने से पहले ही दुर्घटनाग्रस्त हो गया था, जो आगे चल कर 12 दिसम्बर 2019 को उपग्रहों के चित्रों की मदद से, हवाई जहाजों और समुद्री जहाजों द्वारा खोज करने पर पता चला।

संख्यात्मक रूप से अगर वर्षों को देखें तो सर्वाधिक घटनाएँ वर्ष 2020 में (55) और वर्ष 2010 में (53 बार) हुईं, और अभी हम वर्ष 2021 की अर्ध-वार्षिक स्थिति में 25 बार चार्टर को सक्रिय करके राहत कार्यों में मदद दे चुके हैं। अंतरिक्ष उपग्रहों का यह उपयोग एक अद्वितीय उदाहरण प्रस्तुत करता है जो परोपकारी एवं मानवीय लक्ष्यों को प्राप्त करने के उद्देश्य की ओर उन्मुख है। हमारी इच्छा यही है कि इस अन्तर्राष्ट्रीय-चार्टर को सक्रिय करने की जरूरत ही न पड़े।

इच्छा तो होगी न!!



- आशिष सोनी

पाई पाई बचाई है हमने जब पैदल चलकर,
देखकर "मर्सिडीज़" बैठने की...
इच्छा तो होगी न!

एक टंक भूखे रहकर चल रहा था जीवन,
पेट के प्रज्ज्वलित अग्नि को शांत करने की...
इच्छा तो होगी न!

कंजूसी से नहीं पर करकसर से जी रहे थे,
पर कुछ पैसे बचने पर खर्च करने की...
इच्छा तो होगी न!

बांसुरी के सुर सीखना बहुत महंगा था कभी,
पर राधा को मनाने के लिए सीटी बजाने की...
इच्छा तो होगी न!

जानता है 'आश' कि इच्छा ही दुःख का है मूल कारण,
पर क्या करे? आखिर है तो इंसान ही न...
इच्छा तो होगी न!

मृदा की ईंटों का निर्माण एवं उपयोग से पूर्व की सावधानियाँ



- पुरुषोत्तम गुप्ता

सारांश—

ईंट भवन निर्माण में उपयोग की जाने वाली एक महत्वपूर्ण सामग्री है। ईंटों द्वारा निर्मित दीवारों न केवल स्थान विभाजन एवं बाहरी वातावरण से रक्षा का काम करती हैं वरन् भवन का भार भी वहन करती हैं। प्रायः ईंटों के निर्माण की प्रक्रिया का संपूर्ण ज्ञान न होने पर भवन निर्माण में निम्न गुणवत्ता की ईंटों का उपयोग कर लिया जाता है, जिससे भवन की सुरक्षा एवं सुंदरता पर विपरीत प्रभाव पड़ता है।

मानक से कम गुणवत्ता की ईंटों का उपयोग करने से दीवारों में दरारें, दाग-धब्बे और स्राव (leakage) की समस्याएं उत्पन्न हो जाती हैं, जिनकी मरम्मत (repair) अत्यंत खर्चीली और समय लेने वाली होती है। अतः उपयोग की गई ईंटों की गुणवत्ता-जांच आवश्यक होती है। अच्छी गुणवत्ता वाली ईंटों की दीवारें भवन पर भूकंप के प्रभाव को रोकने में भी सहायक होती हैं।

भवनों की संरचनात्मक अभिकल्पना (structural design) दो प्रकार से की जाती है- पहली, भार वाहक (load bearing) संरचना और दूसरी, चौखट (framed) संरचना। भार वाहक संरचना में भवन का भार दीवारों द्वारा भी वहन किया जाता है। कम ऊंचाई वाले भवनों की संरचनात्मक अभिकल्पना सामान्यतः भार वाहक प्रकार की होती है।

इस प्रकार की अभिकल्पना में निम्न गुणवत्ता की ईंटों से निर्मित दीवारें अत्यंत घातक सिद्ध होती हैं। साथ ही इन भवनों की दीवारों में अभिकल्पना के अतिरिक्त खिड़कियाँ एवं दरवाजे बनाने से पूर्व संरचनात्मक अभियंता की सलाह अवश्य लेनी चाहिए।

चौखट संरचना में भवन का भार मुख्यतः आरसीसी संरचना के शहतीरों (beam) और खंभों (column) द्वारा वहन किया जाता है। दीवारें मुख्यतः विभाजन का कार्य करती हैं। अतः इन्हें भार उठाने के लिए अभिकल्पित नहीं किया जाता है।

1.0 ईंटों का इतिहास

निर्माण कार्यों के लिए ईंटों का उपयोग लगभग 7000 से

8000 ईसा पूर्व से शुरू हुआ था। ये मृदा (clay-चिकनी मिट्टी) और घास मिश्रित होती थीं और इन्हें सूर्य के प्रकाश में सुखाकर उपयोग किया जाता था।

लगभग 3500 ईसा पूर्व में पकी हुई ईंटों के आविष्कार के बाद ये ठंडे प्रदेशों में भी बनाई और उपयोग की जाने लगीं, जहां सूर्य का प्रकाश बहुत कम होता था। 19 वीं शताब्दी के अंत तक ईंटों को हाथ से बनाया जाता था।

धीरे-धीरे ईंटों के उत्पादन में मशीनों और उन्नत किस्म की भट्टियों का उपयोग किया जाने लगा। इसके साथ ही विभिन्न प्रकार के पदार्थ जैसे चूना, मैग्नीशिया, आयरन ऑक्साइड, सिलिका आदि सही मात्रा में मिश्रित कर और उचित तापमान पर पकाकर ईंटों की गुणवत्ता बढ़ाई गई।

2.0 निर्माण कार्य में प्रयुक्त विभिन्न प्रकार की ईंटें

आधुनिक निर्माण कार्यों में भवन की डिज़ाइन की आवश्यकता अनुसार विभिन्न प्रकार की ईंटों का उपयोग किया जाता है। ईंटों को समान आकार के आयताकार साँचों में मिट्टी डालकर, सुखाकर और पकाकर तैयार किया जाता है।

इनके निर्माण में प्रयुक्त सामग्री के अनुसार इन्हें निम्न प्रकारों में विभाजित किया जा सकता है-

2.1 मृदा की ईंटें

2.1.1 निर्माण प्रक्रिया

ईंट निर्माण के लिए मृदा का उपयोग किया जाता है। इस प्रकार की मिट्टी में बारीक कणों की बहुतायत होती है। इन कणों की साइज 2 माइक्रोन से छोटी होती है। साथ ही मृदा में एल्यूमीनियम और सिलिका के खनिज पदार्थ होते हैं। इन कारणों से मृदा की यह विशेषता होती है कि इसमें उचित मात्रा में जल मिलाकर किसी भी आकार में ढाला जा सकता है। जब इस ढली हुई मृदा को पकाया जाता है तो यह निर्जलीकरण (dehydration) के कारण और मजबूती से अपना आकार ले लेती है और इस आकार पर जल का भी कोई असर नहीं होता है।

प्रागैतिहासिक मानव ने मृदा के इन उपयोगी गुणों की खोज की और इसका उपयोग बर्तन आदि बनाने के लिए किया। कुछ शुरुआती मिट्टी के बर्तनों को 14,000 ईसा पूर्व के आसपास दिनांकित किया गया है।

2.1.2 मृदा से ईंट निर्माण की पूर्व तैयारी

मृदा के निक्षेप (deposit) की लगभग 200 मिलीमीटर की उपरी सतह का उपयोग ईंट निर्माण में नहीं किया जाता क्योंकि इसमें अशुद्धता होती है। इसके नीचे की मिट्टी को खोदकर 600 से 1200 मिलीमीटर तक ढेर बनाए जाते हैं। इस मृदा को कंकड़, पत्थर, वनस्पति द्रव्य (vegetable matter) आदि निकालकर साफ किया जाता है तथा मिट्टी के बड़े ढेलों को चूर्ण कर दिया जाता है। इस मृदा में उचित मात्रा में चूना एवं सिलिका युक्त मिट्टी, राख आदि में पानी मिलाकर मिश्रण बनाया जाता है।

2.1.3 मृदा को जल मिश्रित कर नर्म बनाना (tempering of clay)

मिट्टी को मिट्टी पीसने की चक्की (pug mill) में या पैरों से अच्छी तरह कुचल कर गूँथा जाता है। सामान्यतः 25 से 30 प्रतिशत पानी इस प्रक्रिया के लिए पर्याप्त होता है।

2.1.4 सांचे में ढालना (moulding)

भारतीय मानक (BIS) के अनुसार ईंट का आकार 19x9x9 सेंटीमीटर होता है। इसके लिए 20x10x10 सेंटीमीटर के सांचे का उपयोग किया जाता है। ढलाई हाथ या मशीन द्वारा की जाती है।

2.1.5 सुखाना

ईंटों को प्राकृतिक विधियों जैसे सूर्य की गर्मी एवं हवा द्वारा, अप्राकृतिक विधियों जैसे विशेष प्रकार के गर्मी प्रदान करने वाले कक्षों में रखकर सुखाया जाता है।

2.1.6 ईंटों की पकाई (burning of bricks)

ईंटों में कठोरता और मजबूती प्रदान करने हेतु उचित तापमान पर पकाया जाता है। इससे इनका घनत्व भी बढ़ जाता है। कच्ची ईंटों को पकाने से इनमें निम्नलिखित परिवर्तन होते हैं। लगभग 640 डिग्री सेल्सियस तक गर्म करने पर इसके तत्वों में केवल भौतिक परिवर्तन होता है, जैसे जल का निष्कासन आदि। इसके बाद लगभग 1000 डिग्री सेल्सियस तक गर्म करने पर रासायनिक परिवर्तन होते हैं। इस दौरान ईंट में मौजूद एलुमिना एवं सिलिका पिघल कर इनकी संरचना को मजबूत और स्थिर बनाती है।

लगभग 1300 डिग्री सेल्सियस के तापमान के बाद ईंटें अपना आकार खो कर जलने लगती हैं। इसलिए ईंटों को उचित तापमान पर पकाना जरूरी है।

2.1.7 अच्छी गुणवत्ता वाली ईंटों के घटक

अच्छी गुणवत्ता वाली ईंटें बनाने के लिए ईंटों की मिट्टी में निम्नलिखित घटक होने चाहिए-

सिलिका

यह कच्ची ईंटों को टूटने-सिकुड़ने से बचाता है। अधिक मात्रा में उपस्थित होने पर ईंटों को भंगुर कर देता है। यह मिट्टी में लगभग 50% तक होना चाहिए।

एल्यूमिना

यह मिट्टी में 20-30% तक होना चाहिए। इससे मृदा में लचीलापन आ जाता है और ढालने में सुविधा होती है। यह अधिक मात्रा में होने पर ईंटों में सूखने के बाद सिकुड़न आ जाती है।

चूना

यह मिट्टी में 5-10% होना चाहिए। यह सूखने पर ईंटों की सिकुड़न कम करता है और ईंटों के दहन के दौरान सिलिका को पिघलाने में मदद करता है। इससे ईंटों की मजबूती बढ़ जाती है। चूना अधिक होने के पर दहन के दौरान ईंट अपना आकार खो देती है।

आयरन ऑक्साइड

यह लगभग 5-7% तक होना चाहिए। इससे ईंटों में कठोरता व मजबूती आती है और ईंटों का रंग लाल हो जाता है। अधिक होने पर ही ईंटें कालिख लिए हुए या गहरी नीली हो जाती हैं। यह यदि कम है तो ईंटों का रंग पीलापन लिए हुए होता है।

2.2 कंक्रीट की ईंटें

कंक्रीट की ईंटें सीमेंट, रेत, पत्थर और जल के साथ मिश्रित करके बनाई जाती हैं। ये वजन में अन्य ईंटों की तुलना में भारी होती हैं लेकिन उनसे अधिक मजबूत होती हैं।

2.3 उड़न राख (fly ash) और मृदा की ईंटें

इस प्रकार की ईंटें, उड़न राख (बिजली घरों आदि से निकलने वाली राख -fly ash), सीमेंट, रेत एवं जल के मिश्रण द्वारा बनाई जाती हैं। सूखने के बाद इन्हें लगभग 1000 डिग्री सेल्सियस तापमान तक पकाया जाता है। इस प्रकार की ईंटों द्वारा उड़न राख का निपटान (disposal) हो जाता है और पर्यावरण की रक्षा करने सहायता मिलती है।

2.4 ए.ए.सी. ब्लॉक (autoclaved aerated concrete block) चित्र-1

ए.ए.सी. ब्लॉक, दीवार बनाने के लिए मृदा की दहन की हुई ईंटों का अच्छा विकल्प है। ए.ए.सी. ब्लॉक का पेटेंट 1920 के दशक के मध्य में स्वीडिश वास्तुकार और आविष्कारक डॉ. जोहान एक्सल एरिकसन द्वारा किया गया।

इन्हें बनाने हेतु रेत, उड़न राख, पानी, चूना, सीमेंट, जिप्सम और एलुमिनियम के चूर्ण का उपयोग किया जाता है। चूना, एलुमिनियम चूर्ण और पानी की रासायनिक क्रिया से हाइड्रोजन गैस निकलती है, जिससे ए.ए.सी. ब्लॉक छिद्रित (porous) हो जाते हैं। इनका घनत्व जल के घनत्व से भी कम होता है। अतः इन्हें जल में तैराया भी जा सकता है।



चित्र-1 ए.ए.सी. ब्लॉक से निर्मित भवन की दीवारें

ए.ए.सी. ब्लॉक अपनी अच्छी ताप और ध्वनि प्रतिरोधक क्षमता के कारण एक अद्वितीय और उत्कृष्ट प्रकार की निर्माण सामग्री है। इनकी मजबूती दहन की हुई ईंटों के समकक्ष होती है।

3.0 मृदा निर्मित पकी ईंटों के परीक्षण (tests on fired clay bricks)

उपयोग से पूर्व ईंटों की गुणवत्ता जाँच की जाती है। इस जाँच में सामान्यतः निम्नलिखित परीक्षण किए जाते हैं -

3.1 संपीडन सामर्थ्य (compressive strength) परीक्षण:

यह परीक्षण ईंट की संपीडन सामर्थ्य को जानने के लिए किया जाता है। आम तौर पर ईंटों के 5 नमूनों (2001 से 10000 ईंटों के समूह में से) को परीक्षण के लिए

प्रयोगशाला में ले जाया जाता है और एक-एक करके परीक्षण किया जाता है।

इस परीक्षण में एक ईंट का नमूना संपीडन सामर्थ्य परीक्षण मशीन पर लगाया जाता है और इसे तोड़ने तक दबाव डाला जाता है।

अंतिम दबाव जिस पर ईंट टूट जाती है, उसे संपीडन सामर्थ्य कहा जाता है। सभी पांचों ईंटों के नमूनों का एक-एक करके परीक्षण किया जाता है और औसत परिणाम को ईंट के संपीडन सामर्थ्य के रूप में लिया जाता है। श्रेणी 35 की ईंटों की संपीडन सामर्थ्य 35N/mm^2 या उससे अधिक होती है।

3.2 जल अवशोषण (water absorption) परीक्षण:

इस परीक्षण में ईंटों की शुष्क स्थिति में तोला जाता है और उन्हें 24 घंटे के लिए साफ पानी में डूबा रहने दिया जाता है। 24 घंटे पानी में डूबने के बाद इन्हें पानी से निकाला जाता है और कपड़े से पोंछ दिया जाता है। फिर ईंट को तोला जाता है। वजन में वृद्धि ईंट द्वारा अवशोषित पानी है। उसके बाद जल अवशोषण के प्रतिशत की गणना की जाती है।

कम पानी अवशोषित करने वाली ईंट की गुणवत्ता अधिक होती है। श्रेणी 12.5 तक की ईंटें अपने वजन के 20% से अधिक पानी को अवशोषित नहीं करती हैं।

3.3 उत्फुल्लन (efflorescence) परीक्षण:

ईंटों में क्षार की उपस्थिति हानिकारक होती है और वे नमी को अवशोषित करके ईंट की सतह पर एक धूसर या सफेद परत बनाते हैं (चित्र -2)। ईंटों में क्षार की उपस्थिति का पता लगाने के लिए उत्फुल्लन परीक्षण किया जाता है। इस परीक्षण में एक ईंट को 24 घंटे के लिए ताजे पानी में डुबोया जाता है और फिर इसे पानी से बाहर निकालकर छाया में सूखने दिया जाता है।



चित्र-2 मृदा की ईंटों में उत्फुल्लन (efflorescence)

यदि सफेद परत सतह पर दिखाई नहीं देती है तो यह इस बात का प्रमाण है कि ईंट में क्षार का अभाव है। यदि सफेद परत लगभग 10% ईंट की सतह पर दिखाई देती है, तो क्षार की उपस्थिति मामूली है। यदि यह सतह का लगभग 50% है तो यह मध्यम है। यदि क्षार की उपस्थिति 50% से अधिक है तो ईंट क्षारीय रूप से बुरी तरह प्रभावित होती है।

3.4 कठोरता (hardness) परीक्षण:

इस परीक्षण में एक कठोर वस्तु के द्वारा ईंट की सतह पर एक खरोंच बनाई जाती है। अगर यह ईंट पर कोई निशान नहीं छोड़ती है तो ईंट को अच्छी गुणवत्ता वाली माना जाता है।

3.5 आकार, माप और रंग परीक्षण:

इस परीक्षण में बेतरतीब ढंग से एकत्र की गई 20 ईंटों (2001 से 10000 ईंटों के समूह में से) को लंबाईवत, चौड़ाईवत और ऊंचाईवत लगाया जाता है और फिर उन्हें मानक के अनुसार आकारों की भिन्नता जानने के लिए मापा जाता है।

अच्छी गुणवत्ता वाली ईंटें आकार में समान, उज्ज्वल और समान रंग वाली तथा इनके किनारे पैसे (sharp) और सीधे होना चाहिये।

3.6 ध्वनि (ringing) परीक्षण:

इस परीक्षण में दो ईंटों को दोनों हाथों से पकड़कर एक दूसरे से टकराया जाता है। यदि ईंटें स्पष्ट धात्विक ध्वनि देती हैं और टूटती नहीं हैं, तो वे अच्छी गुणवत्ता वाली ईंटें मानी जाती हैं।

3.7 आंतरिक संरचना (structure) परीक्षण:

इस परीक्षण में एक ईंट को तोड़ा जाता है या टूटी हुई ईंटों को एकत्र किया जाता है और बारीकी से देखा जाता है। टूटे हुए तल पर अगर कोई दरार या छेद मौजूद नहीं है तो यह अच्छी गुणवत्ता वाली ईंट होती है।

4.0 उपसंहार

मृदा की बनी एवं पकी हुई ईंटों के निर्माण कार्यों में बहुतायत से उपयोग के कारण पर्यावरण को हानि होती है, क्योंकि इनमें मृदा के साथ, सिलिका, चूने आदि प्राकृतिक पदार्थों का उपयोग भी होता है। इसके अतिरिक्त ईंट पकाने के दौरान निकलने वाले धुएं से भी पर्यावरण दूषित होता है।

आधुनिक ईंटें जैसे कि ए.ए.सी. ब्लॉक आदि में बिजली घरों से निकलने वाली उड़न राख (fly ash) का उपयोग होता है, अतः इनका उपयोग पर्यावरण की रक्षा करने में सहयोगी है। साथ ही ए.ए.सी. ब्लॉक के निर्माण में मृदा की बनी एवं पकी हुई ईंटों के निर्माण की अपेक्षा ईंधन की खपत कम होती है।

संदर्भ सूची--

1. IS: 1077 -1992 भवन निर्माण की सामान्य पकी मिट्टी की ईंटों की विशिष्टि
2. IS: 3495 (Parts 1 to 4) : 1992 निर्माण के लिए पकी मिट्टी की ईंटों की परीक्षण पद्धति
3. IS: 5454 -1918 METHODS FOR SAMPLING OF CLAY BUILDING BRICKS
4. <https://en.wikipedia.org/wiki/Brick>

नदी की आत्मकथा



- प्रतिभा तिवारी

मैं नदी, पहाड़ों से जन्मी, करोड़ों वर्ष पुरानी,
सुनाती हूँ अपनी कथा, मेरी अपनी कहानी।

कहीं कल-कल बहती जाती, तो कहीं रहती शांत,
कहीं खूब उफनती हूँ, कहीं पर करती हूँ बात,
कहीं बाढ़ बनकर हरती प्राण,
तो वहीं नई मिट्टी और मछली देकर देती जीवन दान।

सफर तो शुरू होता है पहाड़ों से, पर पूरा होता है सागर
में मिलकर,
न रुकी कभी, न थकी कभी, चाहे रोका कितना ही बड़े
पत्थरों ने मिलकर,
कहीं उन्हें तोड़ती, तो कभी बीच से राह निकालती,
पर चलती रहती, चलती रहती, दम लेती हूँ केवल
मंजिल से मिलकर।

मानव जीवन के मूल्य को उजागर करती मैं,
सफलता के राज़ बताती मैं,
न रुकी कभी, जब तक न पा जाओ मंजिल तुम,
लगे रहो अपने प्रयासों में, उसमें कमी न लाना तुम।

उत्पाद परीक्षण तत्वज्ञान

- बी.एल. मीणा



परीक्षण, जाँच या परख। एक छोटा-सा शब्द लेकिन अति महत्वपूर्ण विषय है, जिसका व्यापक उपयोग गुणवत्ता में सुधार और विश्वसनीयता की परख के लिए किया जाता रहा है। इसी को संक्षेप में समझने का प्रयास करते हैं।

किसी ने कहा है; एक परीक्षण 100 राय से बेहतर है (One test is better than 100 opinions)। यह बिलकुल सत्य है। राय लेने या राय देने से वस्तु की गुणवत्ता की परख असंभव है। गुणवत्ता की जाँच, उचित परीक्षणों द्वारा ही की जा सकती है। अतः उत्पाद का उचित परीक्षण अनिवार्य (mandatory) है।

उदाहरणार्थ : नमक, शक्कर एवं फिटकरी घुले पानी के तीन भिन्न ग्लास, तीनों ग्लास समान आकार-प्रकार के, पारदर्शी पानी का घोल, कैसे ज्ञात हो कि घोल कौनसे पदार्थ का है, नमक, शक्कर या फिटकरी?... जवाब सिर्फ एक ही है, चख कर देख लो.. यानी परीक्षण। चख तो लिया लेकिन स्वाद का मानक (standard) क्या? निर्दिष्ट उदाहरण में परीक्षणकर्ता को ज्ञात होना चाहिए कि नमक, शक्कर और फिटकरी का स्वाद कैसा होता है। अर्थात् स्वाद किसी वस्तु विशेष के स्वाद जैसा हो तो निश्चित तौर पर कहा जायेगा कि अमुक वस्तु शक्कर है या नमक जैसी है या फिर शक्कर या नमक ही है।

परीक्षण का एक ही मूलमंत्र है, वस्तु विशेष में निहित गुणों की पहचान करना जबकि पहचान के पैरामीटर उस वस्तु के लिए निर्धारित मापदंड के समकक्ष हों।

अब यदि किसी उद्देश्य हेतु किसी वस्तु का चुनाव करना हो तो एक प्रचलित बात याद आती है- सस्ती, सुंदर एवं टिकाऊ। तात्पर्य यह है कि वस्तु की लागत कम हो, देखने में अच्छी हो और ज्यादा समय तक चलती रहे... तो इसी आधार पर वस्तु के चयन के चार स्तंभ पाए गए हैं:

1. वस्तु की कम लागत (cost effective)
2. समय की बचत (time saving)
3. कच्चे पदार्थ की उपलब्धता (availability of raw material) और

4. उत्पाद की विश्वसनीयता (Reliability of product)

भिन्न वस्तुओं के लिए भिन्न प्रकार के टेस्ट हो सकते हैं। उदाहरणार्थ मोबाइल फोन पर शॉक एवं कंपन (Shock and vibration) टेस्ट अनिवार्य है। जबकि मोटर कार के कल-पुर्जों पर शॉक एवं कंपन टेस्ट के अतिरिक्त बारिश टेस्ट (Rain test) भी अनिवार्य है, क्योंकि मोटर कार को शॉक एवं कंपन के अतिरिक्त बारिश भी सहन करनी पड़ती है। तो सवाल यह है कि उत्पाद के लिए कौनसा परीक्षण जरूरी है और वह कहाँ उपलब्ध होगा, इसकी जानकारी उत्पादनकर्ता को होनी चाहिए।

गुणवत्ता हासिल करने या उत्पाद को सुधारने के लिए लगभग हर वस्तु का परीक्षण अनिवार्य है, चाहे वह खान-पान की वस्तु हो या फिर उपग्रह में लगने वाला नीतभार। परीक्षण करना या करवाना उत्पाद निर्माता का कार्य है। उपभोक्ता सिर्फ इस बात की पुष्टि कर सकता है कि वस्तु का परीक्षण हुआ या नहीं। वस्तुओं पर टेस्टेड या ओके (Tested or OK) लिखा होना चाहिए। खान-पान की वस्तुओं पर एफ.एस.एस.ए.आई. (FSSAI, Food Safety and Standard Authority of India) द्वारा निर्धारित जानकारी उपलब्ध कराई जानी चाहिए, जिससे उपभोक्ता उत्पाद के विषय में आवश्यक जानकारी पा सके।

निर्धारित परीक्षणों के बिना उत्पाद को बाजार में लाना या विक्रय करना, जान एवं माल को हानि पहुँचा सकता है।

जरूरत है उत्पाद परीक्षण नीति की जो प्रत्येक उत्पादनकर्ता पर लागू हो और उत्पादनकर्ता को स्पष्ट निर्देश हो कि परीक्षण नहीं तो विक्रय नहीं।

1. बी.आई.एस: भारतीय मानक ब्यूरो (BIS: Bureau of Indian Standards) और कई अन्य अंतर्राष्ट्रीय मानक, विभिन्न उत्पादों की गुणवत्ता के निर्धारण और परीक्षण के लिए उपलब्ध हैं।

वातानुकूलक : तकनीकी परिचय, अनिवार्यता एवं अनैच्छिक भविष्य



- बी.एल. मीणा

वर्तमान युग आराम प्रदायी उपकरण एवं तीव्र गतिशील संसाधनों का युग है। मनुष्य मिनटों में एक से दूसरे स्थान पर पहुँच सकता है। धरती के किसी भी स्थान पर घटित घटना के दर्शन एवं उससे संबंधित विस्तृत जानकारी कुछ ही पलों में हासिल कर सकता है। हर कोई साधन संपन्न व्यक्ति, इन संसाधनों को आत्मसात कर लेना चाहता है। इसी कड़ी में वातानुकूलक भी आता है। वातानुकूलक, अब उच्च वर्ग ही नहीं मध्यमवर्गीय परिवारों की भी मूलभूत आवश्यकता बनता जा रहा है। वातानुकूलक क्या है और यह कैसे काम करता है, इसे सरल भाषा में समझने का प्रयास करते हैं।

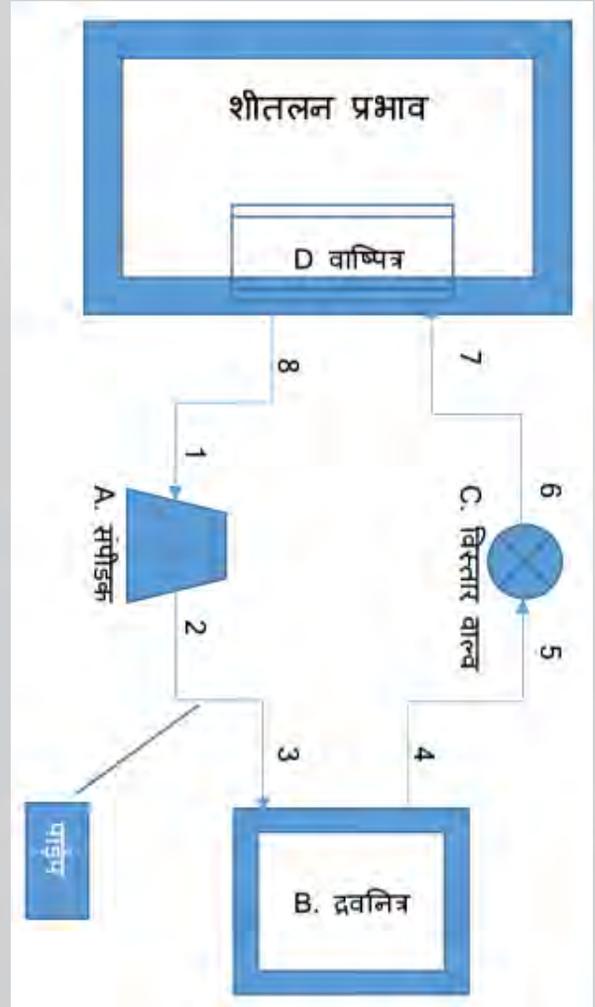
विन्डो एसी, स्प्लिट एसी या सेंट्रल एसी, सभी का एक ही सिद्धांत है, ठंडक करने वाले स्थान से ऊष्मा को निकालना और गर्म स्थान पर छोड़ देना। तापमान कम करने के अतिरिक्त एक और कार्य वातानुकूलक करता है। वह है वायु में विद्यमान नमी की मात्रा को कम करना या नियंत्रित करना। इसे समझने के लिए, इससे जुड़ी तकनीक को सरल भाषा में समझने का प्रयास करते हैं।

दाहिनी ओर एक आकृति दिखाई गयी है जिसे तकनीकी भाषा में सरल प्रशीतन² चक्र (Simple refrigeration cycle) कह सकते हैं।

सरल प्रशीतन चक्र मुख्य तौर पर चार अवयवों का समायोजन होता है जिन्हें चित्र में संपीडक (A. Compressor), द्रवनित्र (B. Condenser), विस्तार वाल्व (C. Expansion Valve) एवं वाष्पित्र (D. Evaporator) कहा जाता है। इन चारों अवयवों को एक पाइप द्वारा जोड़ दिया जाता है। पाइप साधारण तौर पर कॉपर या अलुमिनियम का हो सकता है। इस पाइप में एक ऐसी गैस का संचार किया जाता है जो अवस्था प्रवर्तित कर सके, जो अवस्था परिवर्तन में गुप्त ऊष्मा का विनिमय करती हो और जिसका क्वथनांक (BOILING POINT) ऋणात्मक हो।

इस गैस को तकनीकी भाषा में प्रशीतक कहा जाता है। अब प्रशीतन चक्र की क्रिया विधि समझने का प्रयास करते हैं।

प्रशीतन चक्र के बिंदु 1 से निम्न ताप एवं निम्न दाब वाली गैस अवस्था में विद्यमान प्रशीतक को संपीडक की सहायता से संकुचित करके उच्च ताप एवं उच्च दाब पर बिंदु 2 पर धकेला जाता है। यह प्रशीतक जब द्रवनित्र से गुजरता है (बिंदु 3 से 4), जो सामान्य रूप से वायु कूलित (Air cooled) होता है जहाँ यह अपनी संवेदनशील एवं गुप्त ऊष्मा (Sensible and Latent Heat) पृथक कर देता है और द्रव अवस्था में प्रवर्तित हो जाता है। ऊष्मा को पृथक करने के लिए वायु या जल का सहयोग आवश्यक है।



तत्पश्चात द्रव रूप में विद्यमान उच्च दाब वाले प्रशीतक को विस्तार वाल्व (Expansion valve) से प्रसारित किया जाता है (बिंदु 5 से बिंदु 6)। जैसे ही द्रव रूपी उच्च दाब धारित प्रशीतक, विस्तार वाल्व से प्रसार करता है तो अपना उच्च दाब खो देता है और निम्न दाब धारण कर लेता है।

जब यह निम्नदाब धारी द्रव विस्तृत क्षेत्र वाले वाष्पित्र से प्रसार करता है (बिंदु 7 से बिंदु 8) तो वाष्पित होने लगता है और वाष्पन के लिए आवश्यक गुप्त ऊष्मा शीतलन क्षेत्र से शोषित (ABSORB) करता है और गैस में प्रवर्तित हो जाता है। चलायमान संपीडक निरंतर अपना कार्य करता है और बिंदु 1 से खींच लेता है और पुनः संकुचित करके संपीडक द्वारा किया गया कार्य निम्न ताप से उच्च ताप की ओर उष्मा विनियम में सहायता करता है। नियंत्रित एवं अभीष्ट आरामदायक ताप पाने के लिए इस क्रिया को नियंत्रित किया जाता है जिसके लिए आवश्यकता अनुसार अन्य नियंत्रण युक्तियों को प्रशीतक प्रणाली में समायोजित किया जाता है।

संक्षेप में कहा जाए तो सभी तरह के पारंपरिक विंडो एसी, स्प्लिट एसी एवं सेंट्रल एसी इसी सिद्धांत पर कार्य करते हैं। प्रभावी आरामदायक क्षेत्र में तापमान को नियंत्रित करने के लिए मुख्य अवयवों के अलावा कंट्रोल प्रणाली, सुरक्षा प्रणाली के साथ संवेदकों को समायोजित किया जाता है। हवा में विद्यमान आद्रता³ के आधिक्य को कम करने के लिए निराद्रिकारक का उपयोग किया जाता है जो वाष्पित्र का ही एक हिस्सा हो सकता है। सिद्धांततः यही एक वातानुकूलक की कार्य प्रणाली है।

बाजार में उपलब्ध लगभग सभी वातानुकूलक इसी कार्यशैली पर कार्य करते हैं। वातानुकूलक में उपयोग किये जाने वाले अवयवों का चुनाव, कूलित स्थान के आकार, कूलिंग की तीव्रता एवं पर्यावरण की सुरक्षा को ध्यान में रखकर किया जाता है।

वातानुकूलक की शीतलन क्षमता को जिस इकाई से मापा जाता है उसे मैट्रिक प्रणाली में 'प्रशीतन का टन' (Ton of Refrigeration)⁴ से आंका जाता है। सामान्य नियम (According to Thumb rule) के अनुसार 10x10 वर्ग फीट के सामान्य कमरे के लिए 1 टन का वातानुकूलक पर्याप्त पाया गया है किन्तु तकनीकी दृष्टि से यह उचित नहीं

है। कमरे में रखे सामान, खिड़की-दरवाजे, कमरे की ऊंचाई और उसकी उपयोगिता के अनुसार वातानुकूलक का चयन किया जाना चाहिए। स्प्लिट या विंडो एसी का चयन, कमरे में उपलब्ध खिड़की या उपयोगकर्ता की पसंद पर निर्भर करता है। सेंट्रल एसी का उपयोग सामान्य तौर पर प्रोसेस कार्य या वाणिज्यिक इमारतों में किया जाता है किन्तु दिन प्रतिदिन उपयोगकर्ता अपनी पसंद बदल रहे हैं। जैसे कि मोटर कार उपयोगकर्ताओं में देखने को मिल रहा है। छोटी कारों का प्रचलन लुप्त होने लगा है। लंबी और लकजरी कारों का कारोबार एकदम से बढ़ गया है, जबकि देखने में आता है कि कार एक ही व्यक्ति उपयोग कर रहा होता है। इसी तरह कुछ लोग विंडो एवं स्प्लिट एसी को छोड़कर बड़े घरों में मिनी सेंट्रल एसी लगाने लगे हैं।

अंततः यही कहा जा सकता है कि वातानुकूलक वर्तमान जीवन शैली का अहम हिस्सा है और इसे रोकना असंभव है। आने वाले समय में इनका उपयोग उत्तरोत्तर बढ़ेगा और कुछ नयी समस्याओं को जन्म देगा जो ग्लोबल वार्मिंग एवं ओजोन डिप्लिसन (Global warming and Ozone Deplision) से भिन्न होंगी। घरेलू वातानुकूलकों की मांग निरंतर बढ़ रही है। ऐसी संभावना व्यक्त की जा रही है कि अगले हर सेकंड पर 10 घरेलू वातानुकूलक बिक सकते हैं जो 2050 तक विकट संकट पैदा करेंगे। इस संकट को फ़िलहाल अंग्रेजी में 'कोल्ड क्रंच' (cold crunch) की संज्ञा दी गयी है। 2050 आने तक कई अन्य संकट पैदा होंगे जिनसे हम अनभिज्ञ हैं। संक्षेप में कहा जाये तो 'रुको और देखो' (wait and watch) की स्थिति है।

नीचे विंडो एसी, स्प्लिट एसी एवं सेंट्रल एसी के सामान्य फोटो दिए गए हैं जो इन्टरनेट से डाउनलोड किए गए हैं।



निर्माता अपनी सुविधा, वांछित मुनाफा एवं उपभोक्ताओं की मांग के अनूकूल वातानुकूलकों का निर्माण करते हैं जो उपरोक्त आकृतियों से भिन्न हो सकते हैं।



1. वातानुकूलक: व्यक्ति विशेष हेतु अनुकूल वातावरण स्थापित करने के लिए ऊउयोग किया जाने वाला उपकरण
2. प्रशीतन : नियत आयतन में, परिवेश ताप से निचले स्तर का ताप स्थापित करने में प्रयुक्त प्रक्रिया
3. आर्द्रता : वायु में मौजूद जल वाष्प की मात्रा
4. "प्रशीतन का टन" (Ton of Refrigeration): एक टन बर्फ को 24 घंटे में 0° सेल्सियस पर पिघलाकर 0° सेल्सियस के पानी में परिवर्तित करने के लिए आवश्यक ऊष्मा की मात्रा

कृत्रिम उपग्रह

- अश्वनी कुमार

हाँ, मैं हूँ कृत्रिम उपग्रह भले ही;
पर मानव ने सृजित कर मुझे,
बना दिया इस लायक कि;
आ सकूँ कुछ काम, देकर अपना अल्प योगदान।



प्रक्षेपण के बाद ही दूरादेशों का अनुसरण कर,
बंध जाता हूँ मोह-पाश रूपी गुरुत्व बल में;
पाता हूँ अभीष्ट कक्षा और नियत अभिवृत्ति,
अनुशासित रहना ही, बन जाती मेरी प्रवृत्ति।

निश-दिन अवलोकन कर धरा का, होता आह्लादित मन;
दूर होकर भी, धरा के आँचल से लिपटा लागे मन
निहारूँ प्रतिपल इसे और सराहूँ भाग्य को पा यह स्वर्णिम अवसर
जीवन सफल हुआ मेरा, वांछित फल देने हेतु सदैव तत्पर।

बन जाता एक अटूट रिश्ता, एक सजीव ग्रह और कृत्रिम यंत्र में;
स्थापित हो जाती कड़ी, एक-दूसरे के दुःखदर्द को बाँटने की
दिन-रात की परवाह किये बिना, अग्रसर रहता हूँ अपने पथ पर
अभीष्ट को पाना ही है उद्देश्य मेरा, अनवरत इस हेतु तत्पर।

शुक्रयान-1: पहला कदम पृथ्वी की बहन की ओर

- निखिल राजौरिया



यूं तो हमारा इसरो आए दिन कोई ना कोई इतिहास रचता रहता है लेकिन अभी हम जिस मिशन की तैयारी कर रहे हैं उस तरफ दुनियाभर की ज्यादातर अंतरिक्ष अनुसंधान संस्थाएं ध्यान नहीं दे रही हैं। इस मिशन की आवश्यकता और महत्व को देखते हुए ही भारत सरकार द्वारा 2017 में शुक्रयान-1 को मंजूरी दी गई। उसके लिए हमारे तत्कालीन वित्त मंत्री स्व. श्री अरुण जेटली जी ने इसरो के बजट में 23% की वृद्धि की थी और हमारा इसरो 2017 से ही शुक्र ग्रह पर मिशन की तैयारी में लगा हुआ है और इसके 2025-2026 तक प्रक्षेपित होने की संभावना है। इस मिशन का प्रमोचन द्रव्यमान 2500 किलो और नीतभार द्रव्यमान लगभग 100 किलो होगा।

आइए, शुक्रयान पर बात करने से पहले शुक्र ग्रह के बारे में कुछ तथ्य जान लेते हैं- जैसे शुक्र हमारे सौरमंडल का दूसरा ग्रह है। यह सूर्य की परिक्रमा 224 पृथ्वी दिनों में करता है। इसकी पृथ्वी के समान संरचना और गुरुत्वाकर्षण के कारण इसे "पृथ्वी की बहन" भी कहा जाता है और यह चमकीले ग्रह के नाम से भी जाना जाता है। इसका वायुमंडलीय दबाव पृथ्वी की तुलना में कई गुना अधिक है। यहां का वायुमंडल कार्बन डाइऑक्साइड और नाइट्रोजन से मिलकर बना है और यह सौरमंडल का सबसे तप्त ग्रह है।

शुक्र ग्रह के बारे में शोधकर्ताओं एवं वैज्ञानिकों के पास अभी जो जानकारी है वह बहुत कम है क्योंकि इस ग्रह पर आज तक गहराई से किसी ने अध्ययन नहीं किया है। हमारे इसरो ने इस तरफ एक क्रांतिकारी कदम बढ़ाया है और उसी का परिणाम है हमारा मिशन शुक्रयान-1। इसरो ने शुक्र ग्रह के बारे में और गहराई से जानकारी जुटाने के लिए 2017 में ही जापानी अंतरिक्ष एजेंसी "जाक्सा" से सहयोग समझौता किया और जापान के वीसीओ (वीनस क्लाइमेट ऑर्बिटर) "अकात्सुकी" की मदद से शुक्र ग्रह के वातावरण के बारे में और बारीकी से गहरी जानकारी इकट्ठी की है। इस मिशन के लिए इसरो ने भारतीय संस्थाओं और अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं के लिए "अनाउंसमेंट ऑफ ऑपरच्युनिटी" जारी की थी जिसके तहत कई भारतीय और 20 अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं के प्रस्तावों को शार्टलिस्ट किया है, जिसमें फ्रांस, रूस, स्वीडन जैसे देशों की संस्थाएं सम्मिलित हैं।

इस मिशन की घोषणा के साथ ही फ्रांस की अंतरिक्ष एजेंसी सीएनईएस ने इसरो के साथ इस मिशन पर साथ काम करने का प्रस्ताव रखा था जिसे इसरो ने स्वीकार कर लिया था। सीएनईएस अपने कुछ उपकरण शुक्रयान के साथ भेजना चाहता है जिनमें से एक है वी.आई.आर.ए.एल. (वीनस इंफ्रारेड एटमॉस्फेरिक गैसेस लिंकर) जिसे फ्रांस ने रशियन स्पेस एजेंसी रोस्कॉसमोस के साथ मिलकर बनाया था। इसरो-सीएनईएस अभी स्वायत्तशासी (ऑटोनोमस) नेवीगेशन सिस्टम और ऐरोब्रेकिंग तकनीक पर काम कर रहे हैं। इसरो और सीएनईएस के संबंध बहुत पुराने हैं। इसरो मुख्यालय में फ्रांस के स्पेस काउन्सिलर का कार्यालय भी है और 2019 में हमारे सैक के पूर्व निदेशक और इसरो के 9वें अध्यक्ष श्री ए. एस. किरण कुमार जी को फ्रांस के सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार से सम्मानित किया गया था।

शुक्र का वायुमंडल बहुत घना है। वहां के बादल बहुत गहरे हैं जिस कारण ऑर्बिटर का वहां सतह तक देख पाना बहुत ही मुश्किल होता है। इन्हीं मुश्किलों को ध्यान में रखते हुए इस मिशन के तीन प्रमुख बिंदु होंगे- 1. सतह/उपसतह की स्ट्रैटोग्राफी और री-सर्फेसिंग प्रक्रियाएं, 2. वायुमंडलीय रसायन विज्ञान, गतिकी और संरचनागत विविधताओं का अध्ययन और 3. शुक्र आयनमंडल के साथ सौर विकिरण तथा सौर पवन अंतःक्रिया का अध्ययन। हाल ही में वैज्ञानिकों ने यह माना कि शुक्र पर फोस्फीन गैस पाई गई है इसलिए यहां जीवन की संभावना हो सकती है क्योंकि वैसे तो यह गैस मुख्यतः प्रयोगशाला में बनाई जाती है लेकिन कुछ सूक्ष्मजीव भी यह गैस बनाते हैं। तो हो सकता है ऐसे कुछ जीव शुक्र ग्रह पर उपस्थित हों। इसलिए यह मिशन मानवजाति के लिए बहुत महत्वपूर्ण साबित हो सकता है। अभी इसरो के अलावा कोई और अंतरिक्ष एजेंसी शुक्र ग्रह के मिशन पर काम नहीं कर रही है। हालांकि नासा का एक मिशन दार्विची+ प्रस्तावित है जिस पर अभी काम शुरू नहीं हुआ है। उसके 2030 तक पूर्ण होने की संभावना है। इसलिए जब हमारे भारत का शुक्रयान-1 चमकीले ग्रह से जुड़े रहस्यों और तथ्यों को दुनिया के सामने सबसे पहले रखेगा तो यह हमारे देश, हमारे इसरो और हर भारतीय के लिए गौरवपूर्ण और ऐतिहासिक पल होगा।

मेरी याद किसी के पास नहीं

- निखिल राजौरिया



(संदर्भ - एक व्यक्ति जिसकी हाल ही में मृत्यु हुई है, वह दूसरे लोक से अपने प्रति लोगों की प्रतिक्रिया देखकर कुछ संदेश दे रहा है)

मुझे पता था मेरी जिन्दगी दूसरों के लिए खास नहीं
गुजरे हुए महीना ही हुआ है
मेरी याद किसी के पास नहीं

स्वाभिमान से ही जिया, अभिमान के लिए कुछ था भी नहीं
खुद का रहा खुद में ही रहा, किसी पद सम्मान की रही आस
नहीं
अपना वजूद भुला कर किसी के तलवे चाटना आया मुझे रास
नहीं

आज जो जिंदा है, क्या पता वो हो कल नहीं
आज परवाह करो, उसकी जो जिंदा है
क्योंकि टूटी शाख पर आते कभी फल नहीं

मुझे पसंद थी गुमनामी, चकाचौंध की नहीं रही प्यास कभी

जब समझ गया था झूठी दुनिया को, इससे हो गया था दूर
तभी
इसलिए जीते जी भी चैन था, सुकून से ही हूँ अभी

छोड़ दो ये ईर्ष्या, नफरत और रोष
क्योंकि चले जाने के बाद किसी के सिर्फ रह जाता है करने को
अफसोस
अगर समझ में आ जाए ये बातें हमारी
तो ध्यान रख लेना उनका, जो तरसते हैं एक नजर को तुम्हारी

मुझे तो रही किसी की आस नहीं
गुजरे हुए एक महीना ही हुआ है
मेरी याद किसी के पास नहीं
मेरी याद किसी के पास नहीं

वीर जवान

- हिमानी सिंह



हम करते अपने घरों में मौज हैं,

क्योंकि सरहद पर रक्षा करती वीरों
की फौज है।

उनकी शौर्य गाथाएं हम सुनते हर
रोज हैं।

होकर सवार अडिगता, दढ़ता,
निडरता रुपी रथ पर

डटे रहते वे हमेशा अपने कर्तव्य पथ
पर।

सहते भारी गर्मी, ठंड और बरसात हैं
करते सेवा निरंतर दिन व रात हैं।

है नमन उनके जब्बे को,
दुश्मनों से वे तनिक न डरते,
देश की हिजाफत करते रहते,

जब तक है शरीर में जान,
एक-एक कतरा करते, वतन पर
कुर्बान।

तिरंगे की खातिर घर से रहते दूर हैं,
फिर भी नहीं होते मजबूर हैं,
वतन के सच्चे नायक हैं वे,

वीर, धीर, पराक्रमी सेवक हैं वे,
देते दुश्मनों का सीना चीर वे,
देश के हैं सच्चे वीर वे।

उपकार बहुत हैं उनके हम पर,
सुरक्षित रहते हम उनके ही दम पर।

सदा विजय हो जंग में तुम्हारी,
तुम रहो हमेशा दुश्मनों पर भारी।।
यही कामना है मेरी रब से
जीत हो तुम्हारी सब से।

किस्मत

- श्रीधर जैन



जो लिखा था किस्मत में, उसे मिटाने चला हूँ।
आज मैं अपनी जिंदगी बनाने चला हूँ।

जिसे खोजता था लकीरों में
उसे हकीकत बनाने चला हूँ।

जो हाथ की लकीरों में सुख चैन लिखा है,
जो माथे की सिलवटो में दुःख दर्द लिखा है,
आज उन लकीरों और सिलवटो को मिटाने चला हूँ
आज मैं अपनी जिंदगी बनाने चला हूँ।

कर्म जो दूसरों ने दिए, कर्म जो स्वयं ने किये
पुरुषार्थ के बल पर कर्म को साधने चला हूँ
जो लिखा था किस्मत में, उसे मिटाने चला हूँ
आज मैं अपनी जिंदगी बनाने चला हूँ।

जो समाज को दिखाने के लिए किया
जो अपनों को रिझाने के लिए किया
आज उन सबको पीछे छोड़कर
आज मैं अपनी जिंदगी बनाने चला हूँ।

किस्मत को दोषी मानकर स्वयं को शुद्ध माना
कर्म को अपूर्ण बताकर खुद को सम्पूर्ण माना
सही गलत का भेद मिटाने चला हूँ
अब स्वयं को सम्पूर्ण बनाने चला हूँ।

अब कुछ खुद के लिए करना है,
उस परम शांति के लिए करना है,

जो लिखा था किस्मत में, उसे मिटाने चला हूँ।
आज मैं अपनी जिंदगी बनाने चला हूँ।

बेटी की विदाई के बाद वाला घर!

- गायत्री भनारकर



मेरे घर लक्ष्मीस्वरूप बेटी का जन्म हुआ। उसका लालन पालन एक राजकुमारी की तरह किया। बेटी के बड़ी होने पर भारतीय संस्कृति के मुताबिक उसकी शादी करके ससुराल भेजना एक कठिन घड़ी होती है। हर माता-पिता के जीवन में यह होता है। मैं इस संस्मरण द्वारा उन्हीं भावनाओं को प्रस्तुत करने की कोशिश कर रही हूँ।

हुए। ब्याह के बाद बिटिया विदा हो गई।

बेटी की शादी के पहले बेटी की उपस्थिति की वजह से घर जीवंत लगता है। उसकी सहेलियां आती-जाती रहती हैं। शादी पक्की होने से नजदीकी रिश्तेदार भी बधाई देने आते हैं। हर कोई अपना योगदान देने के लिए तत्पर रहता है। ऐसा लगता है जैसे मेरी बेटी की शादी न सिर्फ मेरे घर का बल्कि हमारे साथ जुड़े हुए हर किसी के अपने घर का अवसर है। बेटी की हर इच्छा पूरी करना माँ-बाप का कर्तव्य होता है। हमने भी बेटी को खुश रखने के लिए खरीदारी जमकर की, उसकी हर पसंद-नापसंद का ख्याल रखा। सभी बाराती और जमाई राज भी स्वागत से खुश

विवाह स्थल से घर वापस आए तो घर में जैसे कोई जान नहीं थी। घर सूना लग रहा था। सुबह चाय सिर्फ हम दोनों ने पी, जबकि पहले साथ में बेटी भी रहती थी। घर में किसी का आना जाना नहीं रहा, खासकर बेटी की सहेलियों का। रिश्तेदारों का भी आना कम हो गया।

बचपन से संभाले हुए खिलौने वाली अलमारी वैसे ही भरी है। साथ रखे हैं, उसके छोड़े हुए रंगबिरंगे कपड़े। उसकी पढ़ाई की मेज पर लगाई हुई कुछ सूचनाएं और दीवारों पर उसके चित्र उसकी उपस्थिति का एहसास कराते हैं। सत्यनारायण की कथा करते समय, पंडितजी ने सफेद कपड़े पर कुमकुम के चरण दिलवाए थे जो मैंने अपनी अलमारी में सहेज रखा है। लक्ष्मीस्वरूप बेटी अब किसी और के घर को समृद्ध कर रही है, जो हमारे घर की रौनक थी, वो अब उनके घर की रौनक बन गई है।



मेरे पापा - मेरे पहले गुरु

- प्रीति अग्रवाल

विवाहिती - दिनेश कुमार अग्रवाल

"ये ले बेटा दस रुपए, प्रसाद और फूल हार ले आ। ठीक से हिसाब करके पैसे वापस ले लेना, तब तक हम अंदर दर्शन की लाइन में लगते हैं" प्रमोद जी ने अपनी सात साल की बेटी रीना को पैसे देते हुए कहा।

"अरे इसे क्यों भेज रहे हैं। बहुत छोटी है, नई जगह है और इतनी भीड़ भी.. रुकिए मैं ले आती हूं। आप बाकी सब को लेकर अंदर चलिये" मम्मी सरला जी ने तुरंत कहा।

"तो क्या हुआ। मेरी बेटी बहुत समझदार और हिम्मतवाली है, कर लेगी। कर लेगी ना बेटा?" पापा ने बड़ी आशा और विश्वास भरी नजरों से नन्हीं सी रीना की ओर देखा।

"हां-हां पापा। इसमें कौन सी बड़ी बात है" पापा के विश्वास को देखकर रीना के चेहरे पर चमक आ गई।

"ये हुई ना बहादुरों जैसी बात। देख बेटा, वहां से दर्शन के लिए लाइन शुरू हो रही है, वहीं आ जाना" पापा ने इशारा करते हुए दूर से ही उसे लाइन दिखा दी। रीना पैसे लेकर प्रसाद और फूलवालों की तरफ चल पड़ी और पापा बाकी सबके साथ दर्शन की लाइन में खड़े होने चले गए।

रीना अपने परिवार और कुछ रिश्तेदारों के साथ गजानन महाराज के दर्शन के लिए पहली बार ही शेगांव गई थी। पापा ने रीना को अकेले भेज तो दिया पर रीना को बिना बताए खुद दूर खड़े होकर उसपर निगाह रख रहे थे। आखिर अपनी इतनी छोटी बेटी को अकेले कैसे छोड़ देते।

ये था रीना के जीवन का पहला पाठ, आत्मनिर्भरता की ओर पहला कदम। रीना को भी नई-नई चीजें सीखने का बहुत शौक था। जब भी बाहर कहीं घूमने जाते, उसके ढेर सारे प्रश्न तैयार ही रहते। पापा कुछ के उत्तर बताते और कुछ उसी से काम करवाकर व्यावहारिक ज्ञान दे देते। वहां नई जगह पर ऐसे कई काम उसे सौंप देते जो उसके लिए बहुत

आसान भी न हो और न ही बहुत कठिन। जैसे किसी होटल में रुकने के लिए क्या-क्या सुविधाएं मिलेंगी, घूमने की कौन-कौन सी जगहें हैं, कभी कोई रास्ता पूछना हो या फिर नाश्ते-खाने के लिए कोई अच्छा सा रेस्टोरेंट.... वहां लोग भी बहुत आश्चर्य करते कि इतनी छोटी सी बच्ची इतने अच्छे से कैसे सब पूछ समझ रही है। कभी कोई संतोषजनक उत्तर नहीं मिल पाता तो कैसे भी करके ढूंढना ही है और हमेशा पापा दूर से उसकी हर एक बात पर नजर रखते... हां उसे बिना बताए। हर एक सफल काम के साथ ढेरों शाबाशियां और किसी मनपसंद चीज का उपहार तो मिलता ही था। पापा हमेशा कहते कि मैं तुझे इतना स्ट्रॉन्ग बनाना चाहता हूं कि कभी कहीं किसी अनजानी जगह में या जंगल में भी अकेली छूट जाए तो बिना डरे घर तक वापस आ सके।

ये वो समय था जब ना कोई मोबाइल फोन हुआ करते थे, ना इंटरनेट, ना ही पहले से होटल में बुकिंग की कोई सुविधा थी। बस सामान लेकर गंतव्य स्थान पर उतरो और सभी व्यवस्था वहीं तुरंत करो।

रीना को ये सब काम करने में बहुत मजा आता था, बहुत रोमांचक लगता था। उसे पता ही नहीं चला कि कब खेल-खेल में ही पापा ने उसे बचपन से ही सब चीजें सिखा दीं। कहां कैसे बात करना चाहिए, नई जगह में अपना काम कैसे करवाया जा सकता है, नए लोगों से मिलना, उनसे जानकारीयां लेना.....ऐसे अनगिनत काम जो उसे बड़े होने पर कदम-कदम में सहायक होने वाले थे। सबसे बड़ी बात यह थी कि उन्होंने उसमें इस बात का आत्मविश्वास जगाया कि उसके लिए कोई भी काम कठिन नहीं है।

पापा की दूरदर्शिता ने, लड़के-लड़की के भेद से ऊपर उठकर बचपन से ही उसे आत्मनिर्भर बनाया। आज पापा नहीं है पर रीना के व्यक्तित्व में, उसके कामों में, उसकी बातों में, उसके विचारों में हमेशा उनकी झलक होती है।

मेरी अभिलाषा



कोरोना काल में सस्ता हुआ इंसान

- रेनू शर्मा
माता - आदित्य कुमार शर्मा

बहुत याद आती हैं बचपन की बातें
की खूब हमने गुड़िया-गुड्डे की शादी,
वो ढोल और ताशे,
बाजे-बारातें
वो बर्तन और चूल्हे,
और सावन के झूले
वो गुल्लकी और डंडा,
और खेला कबड्डी
बहुत हमने खेले हैं घर और घरींदे,
बचपन में बाँटे हैं खेल और खिलौने
वो लड़ना-झगड़ना,
और रुठना-मनाना
बचपन में किए हैं ढेरों सी बातें,
बहुत याद आती हैं बचपन की बातें।

अम्मा की रोटी,
और बाबा की गोदी
लालटेन की रोशनी में,
पढ़ना पढ़ाई
छोटी सी गलती पर,
अम्मा की डाँट और कुटाई
वो दादी और नानी के
किस्से-कहानी
वो गर्मी की छुट्टी,
और सर्दियों की रातें
बहुत याद आती हैं बचपन की बातें।

होता है मन मेरा,
चली जाऊँ उस कल में
जी आऊँ जी भर के,
उस बीते हुए पल को।

श्मशान गुलज़ार है
और घर वीरान..
जलती चिताएँ हैं
और चीखते हुए लोग..
लाशों का ढेर है
मचा हुआ अंधेर..
मौत का सन्नाटा है
सन्नाटे में शोर..
लाशों का व्यापार है
व्यापारी तैयार..
दवाओं की काला-बाज़ारी है
तो ऑक्सीजन की मारा-
मारी..

सूना सब संसार है ..
किसी की मांग सूनी,
तो भाई की कलाई सूनी..
बुझ गया चिराग घर का
बाप की आखें सूनी
बच्चे भी अनाथ हैं..
उजड़ा हुआ परिवार है
मचा हाहाकार है
और आँखें बेज़ार..

लाशें ढोती दरिया हैं
दरियादिली न आखों में..
चील-कौवे आबाद हैं
और इंसान बर्बाद..
जागी हुई सरकार है
क्योंकि चुनाव का है शोर..
दूरी है न मास्क है
उनका यही टास्क है..
सोया हुआ तंत्र है
व्यवस्था तार-तार ..
तड़पते हुए लोग हैं
बेचैन परिवार..
बचने का न कोई मंत्र है
मारना अपरिहार्य..
करो प्रहार मर्म पर,
सोए हुए तंत्र पर
क्योंकि तंत्र बेशर्म है..
श्मशान गुलज़ार है
और घर वीरान..

दूधसागर की यात्रा

- सोमा करनावट



भारत को प्रकृति ने खुले दिल से उपहार दिए हैं। हमारे देश के हर राज्य में नयनाभिराम सुंदरता से भरे स्थान मौजूद हैं। देश का छोटा-सा राज्य गोवा, ऐसा ही एक स्थान है। यहाँ समुद्र, पर्वत और हरियाली का बेजोड़ संगम है। वैसे तो गोवा के समुद्र तट पूरे भारत ही नहीं, विदेशों तक में प्रसिद्ध हैं, लेकिन आज मैं आपको ले जाना चाहती हूँ, उन समुद्र तटों से दूर, गोवा के दक्षिण-पूर्वी भाग में भगवान महावीर अभ्यारण/ नेशनल फॉरेस्ट, जहाँ से दूधसागर प्रपात का रास्ता है।

गोवा की मुख्य नदी मांडोवी, पणजी में समुद्र में मिलने से 60 कि.मी. पहले बेलगाम-वास्को द गामा रेल मार्ग पर दूधसागर प्रपात का रूप ले लेती है। यह जलप्रपात 4 भागों (4-tiered) में बहते हुए नीचे गिरता है। 310 मीटर की ऊँचाई और 30 मीटर की चौड़ाई वाला यह प्रपात भारत के बड़े जलप्रपातों में से एक है। फिल्मों में रुचि रखने वाले इस स्थान को शाहरुख खान की फिल्म 'चेन्नई एक्सप्रेस' के एक दृश्य के रूप में याद रखते हैं। यहाँ पर शाहरुख और दीपिका की ट्रेन रुकती है और वे दोनों दीपिका के पिता के साथ उनके गाँव जाने के लिए रवाना होते हैं। जी हाँ, इस स्थान पर प्राकृतिक सुंदरता के साथ, हमारे अभियंताओं के कौशल का भी नजारा देखने को मिलता है।

मैं विवाह के बाद अपने पति के साथ गोवा घूमने गई थी। पहले 3 दिन हम एक्टिवा किराए पर लेकर अपनी इच्छानुसार समुद्र तट और अन्य दर्शनीय स्थानों पर घूमे-फिरे। अंतिम दिन हमने दूधसागर की यात्रा के लिए रखा। उसके बाद हमें वास्को के एयरपोर्ट से अहमदाबाद की फ्लाइट लेनी थी।

हम बागा बीच के पास के होटल में रुके थे। एक दिन पहले हमने दूधसागर जाने के लिए बस की बुकिंग करवा ली थी। हमें बताया गया था कि बस सुबह 6 बजे हमारे होटल के पास वाले चौराहे पर आ जाएगी। वहाँ से रास्ते में और लोगों को लेते हुए अभ्यारण के बाहर पहुँचा देगी। 6 बजे आने वाली बस भारतीय मानक समय के अनुसार 7 बजे पहुँची। रास्ते का आनंद लेते हुए 9 बजे हम मोलेम गाँव में

नाश्ते के लिए रुके। दूधसागर की ओर जाने वाली 3-4 बसों की वजह से उस छोटे-से गाँव में बहुत चहल-पहल थी और नाश्ते की दुकानों में लाइन लग रही थी। हमने भी अपने सहयात्रियों के साथ नाश्ता किया और इस दौरान आपस में परिचय भी चलता रहा। इसके बाद हम अभ्यारण के बाहर पहुँचे, जहाँ से आगे की यात्रा हमें जीप में और पैदल करनी थी।

अभ्यारण के बाहर से दूधसागर तक का रास्ता करीब 40 मिनट का है। इसमें से दो-तिहाई भाग जीप द्वारा और बाकी हिस्सा पैदल चलकर पार किया जाता है।

हमें जीप में बैठने से पहले ही लाइफ जैकेट पहना दिए गए थे और कड़े निर्देश थे कि तैरना जानने वाले व्यक्तियों को भी पूरा समय जैकेट पहने रहना है। जंगल के ऊबड़-खाबड़ पथ पर जीप में चलने का आनंद कुछ अलग ही है। रास्ते में हमने दो छोटी-छोटी धाराएँ भी पार कीं। प्रदूषण से दूर जंगल के स्वच्छ वातावरण में वे जलधाराएँ कलकल बहते हुए शांति का अनुभव करा रही थीं।

लगभग आधे रास्ते में हमारी जीप खराब हो गई। कुछ देर तो ड्राइवर ने उसे ठीक करने की कोशिश की, लेकिन समय अधिक लगता जानकर उसने पीछे से आनेवाली जीपों में हमारे लिए जगह बनाना शुरू की। उस जीप के ड्राइवर ने हमें पैदल रास्ते की शुरुआत में उतार दिया और गाड़ी का नंबर याद रखने की हिदायत दी। साथ ही झरने तक घूमकर वापस आने के लिए 2 घंटे का समय दिया।

हम जंगल और पशु-पक्षियों को निहारते हुए दूधसागर प्रपात की ओर चल पड़े। महानगर के निवासियों के लिए प्राकृतिक सौंदर्य वैसे ही दुर्लभ वस्तु होती है। फोटो खींचते, बतियाते हुए हम झरने तक पहुँचे। इतनी ऊँचाई से गिर रहा जलप्रपात अपने आप में ही बहुत सुंदर है। उसके सौंदर्य में चार चाँद लगाता है भारतीय रेल का वह पुल। वहाँ बिताए समय के दौरान जब भी कोई ट्रेन उस पुल से गुजरती थी तो बहुत-से लोग बच्चों जैसे उत्साह से उसे देखने लगते थे।



हम लोग कुछ देर कुंड के किनारे के पास ही तैरते रहे, फिर झरने के निकट जाने का मन हुआ। झरना काफी ऊँचाई से गिर रहा था, इसलिए पानी का बहाव बहुत तेज था। कुंड के किनारे इस बात का पता नहीं चलता, लेकिन झरने तक पहुँचने के लिए बहुत मेहनत करनी पड़ी।

दो बार झरने तक तैरकर आने के बाद समय देखा तो लगा कि अब वापस जाने की तैयारी करनी चाहिए। मन तो बिल्कुल नहीं था, लेकिन आगे के समयबद्ध कार्यक्रम की वजह से हमने दूधसागर फॉल को विदा कहा और जीप की ओर चल पड़े। जीप से मोलेम के स्पाइस गार्डन के सामने उतरे। वहीं हमारे दोपहर के खाने की व्यवस्था की गई थी। खाना खाकर मसाले के पेड़-पौधे देखने के लिए गाइड के पास पहुँच गए।

हमारी गाइड रज़िया मैडम ने पूरा बगीचा दिखाया और वहाँ मौजूद सभी प्रकार के मसाले के पेड़-पौधों के बारे में जानकारी दी। गोवा पश्चिमी घाट की उपजाऊ मिट्टी से संपन्न

है। अतः वहाँ अनेक प्रकार के पेड़-पौधे बहुतायत में पाए जाते हैं। हमने काली मिर्च, लौंग, जायफल, दालचीनी, काजू आदि के पेड़ देखे। टूर के अंत में सभी मसालों के पैकेट खरीदने के लिए उपलब्ध थे। हमने भी यादगार के तौर पर दालचीनी और लौंग खरीदी।

टूर पूरा होने के बाद मोलेम गाँव से वास्को जाने के लिए हमें शाम 5.30 बजे पैसेंजर ट्रेन लेनी थी। वह ट्रेन दूधसागर प्रपात से पार नहीं हुई, लेकिन हमें गोवा के हरे-भरे घाट नजदीक से देखने का मौका मिला। गोवा घूमने जाने वालों को मैं सलाह दूंगी कि संभव हो तो अपनी ट्रिप में ट्रेन को जरूर शामिल करें। रेल से गोवा के नजारे देखने का मजा ही कुछ और है। शाम 7.30 बजे वास्को रेलवे स्टेशन पहुँचकर हमने खाना खाया। इसी के साथ हमारी गोवा यात्रा पूरी हो रही थी। गोवा में बिताए 4 दिनों की यादें लंबे समय तक हमारे साथ रहने वाली थीं। उन यादों के धुंधला पड़ने से पहले दोबारा गोवा आने का वादा कर हम एयरपोर्ट की ओर बढ़ चले।

कोरोना से कुछ सवाल

- देवांग मांकड़



अनुच्छेदों के प्रथम अक्षरों को लिखिए और अपने अंतर्द्वेष में इस संदेश को प्रस्थापित कर लीजिये:

| | | | | | | | |
|--|--|--|--|--|--|--|--|
| | | | | | | | |
|--|--|--|--|--|--|--|--|

पृष्ठभूमि: यह कविता हिंदी में acrostic स्वरूप से काव्य लिखने का मेरा प्रयास है। कोरोना की इस महामारी से आठ अनुच्छेदों में काल्पनिक वार्तालाप कर, कुछ सवाल किये गए हैं। इन अनुच्छेदों के प्रथम अक्षरों को जोड़कर इस काव्य के संदेश को देने का विनम्र प्रयास किया है।

कोई कर रहा परिजन की मृत्यु का आर्तनाद,
भर गया है अंतर्द्वेष में भीषण मात्रा में विषाद,
कोरोना - क्या तेरा दूसरा नाम ही है - अवसाद?

रोम-रोम को कर दिया है तुमने इतना पीड़ित,
विश्व का जन-जन हुआ है तुमसे प्रभावित,
कोरोना, कब तक तुम करते रहोगे सबको प्रताड़ित?

नाकाबंदी को तुम्हारी, यदि हमें तोड़ना होगा,
दूरी बनाकर रखना होगा, नज़दीकियों को छोड़ना होगा...
कोरोना, कब तक हमें आखिर सामाजिक ढाँचे को मोड़ना होगा?

कोहराम मचा दिया है तुमने लोगों के जीवन में,
कब तक आग लगाते रहोगे हमारे उपवन में...
कोरोना, क्या अंतर है तुम में और द्वापर के कालयवन में?

हम हार नहीं मानेंगे, सोच हमारी बुलंद है,
मास्क पहनकर रखने से स्वयं तो चाकचौबंद हैं,
पर कोरोना, क्या तेरे राज में इंसानियत नज़रबंद है?

रागहीन होकर जीवन व्यतीत करना तुमने सिखाया,
सब का बदलने लगा है एक-दूजे को देखने का नज़रिया...
कोरोना, मौत के ओले बरसाकर फिर भी क्यों बन रहे हो आफ़त की पुड़िया?

नाता हमारा विषाणुओं से वैसे तो है बहुत पुराना,
पर हमने तुम्हारी ताकत का लौहा है माना...
प्रकृति की छेड़खानी का मिल रहा हमें यह जुर्माना?

हैरत की बात है, क्या मानव कभी भी यह समझ पायेगा,
कोरोना, तेरा मसला तो आगे जाकर शायद सुलझ जायेगा,
पर विश्व के स्वर्णिम भविष्य के लिए क्या मानव सुधर पायेगा?

नारी - विवशता या विशेषता

- प्रभु लाल पंवार



क्यों कपड़ों के अंदर तक झाँकने की कोशिश करते हो,
क्यों खुद के होने के वजूद को ही मिटाने की कोशिश करते हो।
हो रहे शोषण का अब तो तिरस्कार करो,
जन्मी नहीं, उससे पहले ही मार देते हो,
दो कदम चली नहीं, मर्यादा का पाठ पढ़ा देते हो।
मैं नॉर्मल कपड़ों में रहूँ तो दादी अम्मा बता देते हो,
मैं मॉडर्न कपड़ों में रहूँ तो आईटम बता देते हो।
क्या कपड़ों से ही मेरी पहचान है, मेरा कैरेक्टर कुछ भी नहीं।
अगर मुस्कुरा दूँ तो आसान निशाना समझ लेते हो,
अगर ध्यान तुम पर न दूँ तो घमंडी बता देते हो,
क्या इसी से मेरी पहचान है, मेरी चॉइस कुछ भी नहीं।
माना मैं तो समझदार हूँ और सजग भी हूँ तुमसे,
पर छोटी बच्ची का क्या दोष जो उसे भी पीड़ित बना देते हो।
मैं नारी हूँ इसमें कोई हीनता नहीं,
तुम पुरुष हो यह कोई महानता नहीं।
मैं सर्वस्व न्योछावर कर दूँ फिर भी मानसिकता बदल नहीं सकती,
मुँह मारने की आदत है तुम्हें और कैरेक्टर मेरा बताते हो।
मैंने निभाए किरदार कई हैं, मैंने निभाए किरदार कई हैं,
माँ भी मैं, बेटी भी मैं, बहन भी मैं और बहू भी मैं।
क्यों मुझे फिर एक ही नजरों से देखते हो,
क्यों पूजते हो मुझे मंदिरों में,
जब मेरा सड़कों पर निकलना भी दूभर है।
क्यों बनाना चाहते हो मुझे सजावट की वस्तु,
मैं जीवित हूँ घर का कोई सामान नहीं।
माना कि बराबरी का दर्जा देना नहीं चाहते,
पर मैं हूँ, मेरे होने का वजूद तो रहने दो।
मुझे मालूम है कि मैं नारी हूँ,
मुझे मालूम है कि मैं नारी हूँ,
जीवन का सार भी मुझ से और संचार भी मुझ से ही है,
माना कि मैं विवश हूँ, पर विशेष भी मैं ही हूँ।

पुस्तक समीक्षा

Why Mars and Venus Collide?

(लेखक- जॉन ग्रे)

- भूपेन्द्र जैन (तकनीकी प्रशिक्षक एवं मनोवैज्ञानिक परामर्शदाता)

विवाहिती – सोमा करनावट



स्त्री-पुरुष निसर्गतः साथ रहते हैं और आपस में टकराते भी रहते हैं। आमतौर पर इस टकराहट को भी स्वाभाविक मान लिया जाता है, किंतु जॉन ग्रे ने इस टकराहट के मूल कारणों को खोजने और लेखबद्ध कर दुनिया के सामने लाने की कोशिश की। उनकी पहली पुस्तक Men are from Mars, Women are from Venus बहुत प्रसिद्ध हुई। इस पुस्तक में उन्होंने विचार-प्रक्रिया, किसी भी स्थिति या बात पर प्रतिक्रिया और अन्य बहुत से पहलुओं में पुरुषों और महिलाओं की भिन्नता को उभारा और उसके वैज्ञानिक कारण बताए। इसी कड़ी में उनकी पुस्तक है Why Mars and Venus Collide?, जो पुरुषों और महिलाओं के बीच अक्सर होने वाले झगड़ों के कारण बताती है और उनके आसान समाधान भी।

जॉन ग्रे का कहना है कि पुरुषों का दिमाग आमतौर पर तार्किक होता है और महिलाओं का भावुक। इसीलिए पुरुष हर समस्या का समाधान खोजने की कोशिश करते हैं जबकि महिलाएँ समस्याओं पर चर्चा करना ज्यादा पसंद करती हैं। कार्यपद्धति का यह फर्क अक्सर झगड़े का कारण बनता है।

उदाहरण के लिए, आज की कामकाजी महिलाएँ चाहती हैं कि उनके पति दफ्तर से आकर घर के काम में उनका हाथ बंटाएँ। ग्रे का कहना है कि पुरुष वास्तव में स्त्रियों की मदद करना चाहते हैं, लेकिन उनके हॉर्मोन स्तर को बनाए रखने के लिए घर आकर पहले आराम करना ज्यादा जरूरी होता है। वे महिलाओं की तरह आकर सीधे दूसरे कामों में नहीं लग सकते। कुछ देर आराम कर, अखबार पढ़कर या टीवी देखकर वे अपना तनाव कम करते हैं। वहीं महिलाएँ इसे काम को टालना समझकर मन-ही-मन कुढ़ती हैं या झगड़ती हैं।

दूसरा कारण यह है कि महिलाएँ वर्षों से सामुदायिक जीवन जीने की आदी रही हैं, जिसमें वे सब एक-दूसरे का ख्याल रखते हुए अपने हॉर्मोन स्तर को बनाए रखती थीं। इससे ज्यादा काम भी उन्हें बोझ महसूस नहीं होता था। अब

नौकरी की वजह से बहुत-सी महिलाएँ समुदाय की अन्य स्त्रियों के साथ मिलजुलकर घरेलू कार्य नहीं कर पाती हैं जिससे उन्हें कार्य का बोझ अधिक महसूस होने लगा है। ऐसे में उनके जीवनसाथी पर उनके हॉर्मोन स्तर को बनाए रखने में मदद करने का अतिरिक्त दायित्व भी आ जाता है, किंतु वे इसके आदी न होने के कारण अक्सर भूल कर बैठते हैं।

ग्रे ने महिलाओं को सुझाव दिया है कि अपने हॉर्मोन स्तर को बनाए रखने के लिए केवल अपने जीवनसाथी पर निर्भर रहना ठीक नहीं है। उन्होंने बताया कि अपने दोस्तों के साथ वक्त बिताने, अपनी पसंद के कार्य करने और अपने-आप को संतुष्ट रखने के प्रयास महिलाओं को स्वयं ही करने होंगे। वे इसे इस तरह समझाते हैं कि केक की सजावट का कार्य आपके जीवनसाथी कर सकते हैं, लेकिन उसके लिए पहले केक आपको स्वयं ही बनाना होगा। तब आप दोनों मिलकर इसका आनंद ले सकते हैं।

इसके अलावा, बात करने के तरीके में फर्क भी बहुत-सी बार बहस का कारण बनता है। इसलिए, यह बहुत जरूरी है कि हम पुरुष और स्त्री के बात करने के तरीके में फर्क को समझें और उसे याद भी रखें। महिलाएँ जब बात करती हैं, तो वे सूचना देने से ज्यादा महत्व अपनी भावनाएँ साझा करने पर देती हैं। वे चाहती हैं कि उनकी बात को महत्वपूर्ण माना जाए और बीच में रोककर सुझाव न दिए जाएँ। पुरुष अक्सर यहीं मात खा जाते हैं। वे समझते हैं कि उन्हें समस्या का हल बताने के लिए सारी बात बताई जा रही है और वे हर चीज पर समाधान देने लगते हैं।

इसी तरह की छोटी-छोटी बातें हैं, जो कई बार बड़े झगड़ों का कारण बन जाती हैं। हमें यह ध्यान रखने की आवश्यकता है कि पुरुष और स्त्रियाँ सिर्फ दिखने में ही अलग नहीं हैं, उनकी विचार और कार्यपद्धति में भी बहुत फर्क है। साथ ही अपने जीवनसाथी पर भरोसा भी बनाए

(पृ. .. पर जारी)

हिंदी कार्यशाला के मेरे अनुभव

- डॉ. प्रज्ञा कुशवाहा



अपनी डॉ. ऑफ फिलॉसफी की पढ़ाई (वर्ष 2015) के दौरान प्रशिक्षुता (इंटरनशिप) के लिए मुझे फ्रांस जाने का अवसर मिला। वहां मैंने पाया कि वहां के छात्र ना सिर्फ अपने शोध प्रबंध फ्रेंच भाषा में लिखते हैं बल्कि उनके शोध प्रबंध के साक्षात्कार भी फ्रेंच भाषा में ही आयोजित किए जाते हैं। वहाँ बोर्डोक्स शहर में मैंने बहुत से कोचिंग केंद्रों के बोर्ड देखे, जहाँ फ्रेंच भाषा मुफ्त में सिखाई जाती थी। फ्रांस में बिताये तीन महीनों में मुझे ये समझ आ गया था कि यूरोप में लोगों को भाषा की एकता की ताकत के महत्व का ज्ञान हम भारतीयों से भी अधिक है।

बड़े ही दुःख की बात है कि भारत की आजादी के इतने वर्षों बाद भी यहां विदेशी भाषा (अंग्रेजी) का उपयोग प्रचुर मात्रा में किया जाता है। हम भारतीयों को भाषा की एकता की ताकत का अहसास कराने वाला माहौल आज विलुप्त होता जा रहा है। विद्यालय से लेकर महाविद्यालय तक मात्र अंग्रेजी भाषा को प्रोत्साहन मिलता है। विद्यालय परियोजनाओं से लेकर शोध प्रबंधों तक आज भी अंग्रेजी भाषा का ही प्रयोग होता है। भारत जैसे विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं में बंटे हुए देश में किसी एक भाषा को लेकर एकमत होने वालों की संख्या आज भी बहुत कम है। मुझे यह भी लगने लगा था कि भारत में शायद ही कभी ये संभव हो पायेगा कि हम किसी एक भाषा के माध्यम से एकजुट हो पायेंगे। ऐसा सोचते हुए मैंने अपने मन को समझा लिया था कि यह कार्य मेरे देश के लिए असंभव है और दुःखी मन से भारत लौट कर अपनी डॉ. ऑफ फिलॉसफी का शोध-प्रबंध अंग्रेजी भाषा में लिख कर जमा किया।

अंतरिक्ष उपयोग केंद्र, अहमदाबाद के राजभाषा अनुभाग

द्वारा दिनांक 02 जून 2021 को एक हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। यह कार्यशाला मेरे जैसे 26 नव-नियुक्तों के लिए आयोजित की गयी थी। श्रीमती नीलू सेठ, उप निदेशक (राजभाषा) एवं श्री सोनू जैन, सहायक निदेशक (राजभाषा) ने हम सभी को राजभाषा हिंदी से जुड़े नियमों से अवगत कराया और हिंदी से संबंधित अनेक प्रोत्साहन योजनाओं के बारे में जानकारी दी। साथ ही उन्होंने हम लोगों को कंप्यूटर पर हिंदी फॉन्ट इनेबल करने, हिंदी में कार्य करने के तरीके सहित कार्यालय के राजभाषा पोर्टल एवं उसके उपयोग से संबंधित जानकारी प्रदान की।

हिंदी कार्यशाला में भाग लेकर मुझे व्यक्तिगत रूप से बहुत खुशी हुई। मैं यह लेख अपनी उसी खुशी को व्यक्त करने के लिए लिख रही हूँ। अंतरिक्ष उपयोग केंद्र, अहमदाबाद के राजभाषा अनुभाग द्वारा हिंदी के विकास के लिए किए जा रहे सभी प्रयास सराहनीय हैं। मैं आशा करती हूँ कि जिस प्रकार अंतरिक्ष उपयोग केंद्र, अहमदाबाद का हिंदी अनुभाग हम सभी को हिंदी भाषा को उपयोग में लाने के लिए प्रोत्साहित कर रहा है, उसी प्रकार भारत के सभी सरकारी व गैर-सरकारी कार्यालय, विद्यालय, महाविद्यालय एवं निजी संगठन भी हिंदी भाषा के महत्व को समझेंगे और देश को एकत्व की ओर ले जाने में अपना योगदान देंगे। साथ ही मैं संबंधित संस्थानों में कार्यरत व अध्ययनरत कर्मचारियों, विद्यार्थियों व सामान्य नागरिकों से भी राजभाषा हिंदी के अधिक से अधिक प्रयोग एवं प्रचार व प्रसार करने का अनुरोध करती हूँ। आशा है कि हमारे सम्मिलित प्रयासों से अवश्य ही हमारी राजभाषा सर्वोच्च मुकाम हासिल कर सकेगी।

(पृ. .. से जारी)

रखना है कि वे भी हमारे भले के लिए सब कुछ करने को तैयार हैं। यदि हम अपने जीवनसाथी की जरूरतों को पूरा करते हुए यह भरोसा बरकरार रखें, तो जीवन खुशी-खुशी बीतेगा

पुस्तक की भाषा आसान और प्रवाहयुक्त है तो शैली बहुत आकर्षक। जीवन में बहुधा घटित होने वाले प्रसंगों को उदाहरण बनाकर लेखक ने पुस्तक को बहुत रोचक बना दिया है। पुस्तक पढ़कर भूल जाने के लिए नहीं है, बल्कि कदम-कदम पर याद रखने योग्य है।

मेरे अरमान

- अंकिता रानी



मैं तो हूँ एक सोन चिरैया
ऊँची होगी जिसकी उड़ान
तोड़ के सारे बंधनों की
पिघला कर समाज की जंजीरों को
निकल पड़ी हूँ मैं, नीले आसमान में
समाज को बदलने की मन में लेके एक आस

बादलों की तरह रूप मेरे भी अनेक हैं
कभी माँ, कभी बेटी, मुझसे जुड़ा हर एक है
ज़ख्म बहुत हैं मन में
पर आज अरमान ने बाज़ी मारी है
हर लम्हे को अब जीने की मेरी तैयारी है

शिक्षा और सुरक्षा की है मेरी लड़ाई
कदम से कदम मिला के चलने की अब बारी आई
रेखाओं को अपनी मुझे ही बदलना है
खुद के पैरों पर अब मुझे ही संभलना है
इस जीवन का अब बस यही उद्देश्य होगा

राह कठिन है मेरी, सीधे नहीं हैं ये रास्ते
तपती किरणों को चूम के, जीना है अब अपने वास्ते
खुद की अब न होगी फ़िक्र, न ही हारने का डर होगा
कुछ कर दिखाने का जज्बा ही, अब मेरे अंदर होगा
अँधेरी रातों के बाद, हमेशा ही सवेरा आया है
इन बंधनों ने मुझे मज़बूत इतना जो बनाया है

घर की चार दीवारों को चीर कर
जो देखा है ख्वाब, उसे पूरा करना है
नदियों की तरह बहना है, पंछियों की तरह उड़ना है
पत्तों की तरह लहराना है, और सूरज की तरह चमकना है
आसमान से भी ऊँची, सागर से भी गहरी होगी मेरी पहचान
पंखों से नहीं हौसलों से मैं लूंगी उड़ान
बस मन में मेरे यही है अरमान
जहाँ हर नारी को मिले अपना खोया हुआ सम्मान।

एहसास

- सतीश प्रसाद



पल भर भी दूर नहीं होती रिश्ता ऐसा खास है,
रहती मीलों दूर मगर जाने क्यूँ तू पास है,
यादें धुंधली नहीं होती मानो कल की बात है,
मिलना कभी तो होगा मुमकिन यही बची इक आस है,
तेरा नाम एक एहसास है जो हर पल मेरे पास है।

कभी तो लहर उठेगी तेरे भी सीने-ए-दरिया में,
कभी तो मेघा बरसेगी तेरे भी चाहत-ए-आसमाँ में,
कभी तो गूँजेगी सरगम तेरे भी दिल के गिटार में,
शायद बुझ जाये प्यास मेरी हर पल यही कयास है,
तेरा नाम एक एहसास है जो हर पल मेरे पास है।

तुझे याद नहीं करता बिल्कुल ये बकवास है,
उम्मीद कभी ना टूटेगी तेरी खुशबू मेरी साँस है,
बुझती नहीं कभी लफ्जों से तेरी चाहत ही वो प्यास है,
समय सरकता मद्धम-मद्धम पर नहीं आती जो खास है,
तेरा नाम एक एहसास है जो हर पल मेरे पास है।

दिन गिनूँ उँगलियों पे बीत जाए किन्तु मास है,
ऋतुएं भी कैसे गुजर गयी साल बन जाता ये मास है,
उसी सहारे जिंदा हैं हम जो यादें दिये मेरे साथ हैं
'उपफ' तक करना छोड़ दिए सुकून का इक तलाश है,
तेरा नाम एक एहसास है जो हर पल मेरे पास है।

नींद जाने क्यूँ आती नहीं मखमल लगता टाट है,
सपनों में खोया रहता है ये मेरा जो जज्बात है,
कहती 'फर्क नहीं पड़ता' पर चिंता दिन और रात है,
नैन कभी भी नम न हों हर दुआ तुम्हारे साथ है,
तेरा नाम एक एहसास है जो हर पल मेरे पास है।

दो से एक नहीं हो सकते इसका पश्चाताप है,
मिलना-बिछड़ना कुछ नहीं सब होता अपने-आप है,
जो लिखा हुआ नसीबों में वही चलता सबके साथ है,
जाने से तेरे लुट सा गया कुछ तो तुझमें बात है,
तेरा नाम एक एहसास है जो हर पल मेरे पास है।

माँ

- अंजना सिंह
विवाहिती - सुनील सिंह



आज कलम पकड़कर पत्रे पर, सोचा कुछ लिख दूँ अपनी
माँ पर

कुछ शब्द लिखूँ या पंक्ति लिखूँ या लिख दूँ कुछ इससे
बढ़कर

पर माँ लिखने से पहले आँसू पीछे घंटों रो-रोकर

तब कलम भी बोल पड़ी ऐ पगले

जिसने तुझको ही लिख डाला, तू क्या लिख लेगा उस माँ
पर

हर घर को स्वर्ग बनाती है जन्नत है माँ के पैरों पर
हमको दुनिया में लाती है सहती कष्टों को हँस-हँस कर
नित लोरी गाती रातों में मीठी नींद सुलाती है
भोर हुई तो हमें खिलाती न थकती, रातों को जगकर

माँ की महिमा क्या मैं कहूँ बंजर में फूल खिलाती है
इस जीवन की क्या बात कहें सृष्टि ही है माँ के दम पर

माँ की ममता पाने को खुद ईश्वर तरसा करते हैं
तभी तो धरती पर आए वो नन्हें से बालक बनकर

हर घर के आँगन में माता तुलसी सी महका करती है
माँ तो ऐसा पारस है पत्थर को भी सोना कर दे बस
उसको थोड़ा सा छूकर

अपने हिस्से की खुशियाँ भी हम पर दिन-रात लुटाती है
कष्टों की लहरों के आगे माँ डट जाती है पाहन बनकर

जब घर से बाहर जाता हूँ बस एक आवाज ही आती है
क्या जल्दी इतनी जाने की खाना तो चैन से खा रुककर
बुरी नजर से मुझे बचाने नित काला टीका मुझे लगाती है
उसके लिए मैं इतना सुंदर हूँ सब राजाओं से बढ़कर
माँ दूर रहे फिर भी उसका अहसास हमेशा रहता है
जब देर से घर मैं पहुँचूँ तो खुद ही रोती मुझपर गुस्सा कर

मैं कुछ भी माँगूँ खाने को, माँ झट से पका के लाती है
गर मैं बोलूँ माँ तू भी खा, बस मुस्काती है यह सुनकर

अपनी इस मुस्कान के पीछे, कुछ राज छिपाया करती है
मुझको है अभी भूख नहीं, यही बताया करती है
खुद की भूख छिपाकर वह मुझे खिलाती है जी भरकर

मेरे हिस्से के सारे दुःख अपने अंदर भर लेती है
मेरी ही खुशियों की खातिर माँगे दुआ वो जीवनभर
मैं बन जाऊँ बड़ा आदमी, जग में ऊँचा मैं नाम करूँ
मेरी इस ख्वाहिश की खातिर खुद को मुझसे है दूर किया

महीनों बाद जब मुझे देखती फूलों सी खिल जाती है
कल फिर से जुदा हो जाऊँगा रोती है कोने में छिपकर
दुनिया की हर सुंदरता से मेरी माँ सुंदर लगती है
जी करता सारी दौलत रख दूँ ममता के कदमों पर

माँ शीतल, पावन गंगा मैया, सबकी गले लगाती है
माँ के आँचल में प्यार का सागर, सब पर जल बरसाती है
हर एक गलती को करती क्षमा, रहती न खफा वो एक पल भर

ये दुनिया कड़ी दुपहरी सी, माँ मधुवन जैसी छाया है
माँ देवी है, माँ पूजा है, माँ ही तो अमृतवाणी है
खुद ईश्वर ने यह माना है कि माँ तो है ईश्वर से बढ़कर



भारत

- अंजना सिंह
विवाहिती - सुनील सिंह



मुझे चाह नहीं, मर जाऊँ तो मैं, मेरी याद में तुम, कोई ऊँचा भवन देना

मेरी चाह तो बस इतनी सी है, जिस ठौर जलूँ, उस ठौर पे तुम, भारत का लाल लिखा देना

मुझे चाह नहीं, मर जाऊँ तो मैं, कुछ पल का मौन करा देना

मेरी चाह तो बस इतनी सी है, मेरी याद में तुम, भारत का गीत सुना देना

मुझे चाह नहीं, मेरे अंतिम क्षण में, अमृत का पान करा देना
मुझे चाह तो बस इतनी सी, भारत की नदियों के मिश्रित जल को मेरे मुँह में टपका देना

मेरी चाह नहीं, मर जाऊँ तो मैं, मेरे पंचतत्व को हल्दी चंदन का लेप लगे

मेरी चाह तो बस इतनी सी है, कि मेरे तन को भारत की माटी लिपटा देना

मेरी चाह नहीं, मर जाऊँ तो मैं, मुझे रेशम का कफन ओढ़ा देना

मेरी चाह तो बस इतनी सी है, कि मुझ तीन रंग से ढक देना

मेरी चाह नहीं, मर जाऊँ तो मैं, मुझको फूलों के हार चढ़ा देना

मेरी चाह तो बस इतनी सी है, भारतवीरों की चरणधूलि, मेरे मस्तक तिलक लगा देना

मेरी चाह नहीं, मर जाऊँ तो मैं, सौ ब्राह्मण भोग करा देना
मेरी चाह तो बस इतनी सी है, भारत माता के आँचल को, वट, पीपल, वृक्ष अशोक सहित माँ तुलसी से महका देना

मुझे चाह नहीं, मरणोपरांत, मैं स्वर्गलोक प्रस्थान करूँ
मेरी तमन्ना बस इतनी ही है, हर जन्म ही भारत भूमि पर, भारतवासी ही कहलाऊँ,
भूतल से अंतरिक्ष तक, बेफिक्र तिरंगा लहराऊँ।

मेक इन इंडिया

- मुदित सिंह
पुत्र - निधि सिंह



मेक इन इंडिया का अर्थ है हमारी सभी जरूरत की चीजें हमारे देश में ही बनाना। हमने अब बहुत सी चीजें अपने देश में ही बनाना शुरू कर दिया है। हमने कोविड की वैक्सीन बनाई है और इससे बहुत लोगों की जान बची है। हमारे देश ने दूसरे मित्र देशों को भी वैक्सीन भेजी जिससे वहाँ के लोगों की भी जान बची। हमने अपने देश में सेना के लिए बहुत सारे हथियार बनाए हैं। इस तरह से हम कई मामलों में आत्मनिर्भर हो गए हैं। इसलिए इन सब पर खर्च होने वाला पैसा अपने देश में ही रहेगा और देश के लोगों को रोजगार मिलेगा। हमें अपने देश में बनी चीजें ही खरीदनी चाहिए।

योग

योग सही तरीके से जीने का विज्ञान है। योग योगासन, प्राणायाम व ध्यान - इन तीन तरहों से किया जाता है।

योग सबसे पहले बाहरी शरीर को लाभ पहुँचाता है। प्राणायाम करने से शरीर हल्का और मन खुश रहता है। इससे पढ़ाई करने में ठीक से ध्यान लगता है। सभी बच्चों को सूर्य नमस्कार व शीर्षासन जरूर करना चाहिए। योग दिवस पूरे विश्व में 21 जून को मनाया जाता है।

‘एक है योग और दूजा है रोग,
अगर हमेशा योग करोगे तो रोग मुक्त होगे, नहीं तो रोग होगा’।

वो 25 दिन

- अंकिता जैन
विवाहिती - निष्काम जैन



भारत में कोरोना धीरे-धीरे पैर पसार रहा था। लॉकडाउन लग गया था। बुरी खबरें चल रही थी। जून में लॉकडाउन खत्म हो गया था। कोरोना का डर खत्म नहीं हुआ था। ऑफिस धीरे-धीरे खुल रहे थे। कोविड दिशा-निर्देशों के अनुसार मेरा परिवार पूरी सावधानी बरत रहा था। मैं, मेरे पति निष्काम और दोनों बेटियाँ देशना (6) और निर्जरा (3) सावधानी से समय निकाल रहे थे। निष्काम ऑफिस जाने लगे थे। कुछ हफ्ते सब ठीक चला। एक दिन ऑफिस से लौटने पर निष्काम को कुछ असहज लगा। थोड़ी शंका में थे, पर वहम समझ कर टाल दिया। दूसरे दिन सुबह से ही हल्का बुखार हुआ जो शाम तक बढ़ गया। अगले दिन सुबह हमने टेस्ट कराया। टेस्ट में निष्काम पॉजिटिव और मैं नेगेटिव घोषित हुए। घर की तरफ लौटे तो सीढ़ियाँ पहाड़ जैसी लग रही थी। कोरोना ने हमें घेर लिया था। उस समय कोरोना के बारे में बहुत सी बातें फैली हुई थीं। घबराहट में कुछ भी समझ नहीं आ रहा था। थोड़ी देर बाद संभले तो निष्काम एक कमरे में पूर्णतः आइसोलेट हो गए। बच्चों का तथा मेरे संक्रमित होने का भय हावी था। मेरी तो पूरी दुनिया ही बदल गई थी। कोरोना मरीज को उस समय बहुत उपेक्षा से देखा जाता था। इलाज शुरू हुआ। बुखार, ऑक्सीजन लेवल लगातार निगरानी में रखा। दो-तीन दिन डूबते-उतराते निकल गए। कोरोना ने अपना असर दिखाना शुरू कर दिया था। डॉक्टर की सलाह पर एचआरसीटी और खून की जाँच कराई। जिसका डर था वही हुआ। फेफड़ों में 48% संक्रमण पहुंच गया था। हम दोनों के मन में कुशंकाएँ घर कर गयीं। बुखार अब भी नीचे-ऊपर हो रहा था। इस तरह 8-9 दिन निकल गए। समझ नहीं आ रहा था कि अस्पताल में भर्ती हों या नहीं। अस्पतालों का हाल रोज अखबारों में आ रहा था, इसलिए हिम्मत नहीं हो रही थी। सैक के डॉक्टरों ने हिम्मत दी, इसलिए घर पर ही इलाज करते रहे।

दोनों बच्चे देशना और निर्जरा अपनी बाल बुद्धि से यह

समझ चुके थे कि मामला कुछ गंभीर है, इसलिए दिए गए निर्देशों का अक्षरशः पालन करते थे। दिन भर यही पूछते थे कि पापा कब बाहर आएंगे? जो बच्चे सामान्य दिनों में पापा के घर पर होने पर उनके आसपास ही रहते थे, वो अब पापा को 20 फीट दूर से बाहर से देखते रहते थे। घंटों चुपचाप दूर से खड़े-खड़े देखते रहते थे। बात भी वीडियो कॉल से ही होती थी। मेरी भी उन 25 दिनों में ज्यादातर बातें, एक ही छत के नीचे रहते हुए भी वीडियो कॉल या टेलीफोन पर ही होती थी। शुभचिंतकों से कोई संपर्क नहीं था। सभी रिश्तेदार दुखी मन से दिन भर हाल पूछते रहते थे। मेरे ऊपर तो जिम्मेदारियों का पहाड़ टूट पड़ा था। घर, बाहर, अस्पताल सभी कुछ मुझे ही संभालना था। घर के बाहर आते-जाते परिचित मुँह फेर लेते थे अथवा रास्ता बदल लेते थे। दूध के बूथ पर, फल-सब्जी की दुकान पर ऐसा ही अनुभव था। पर इसे मैं गलत नहीं मानती थी क्योंकि कोरोना नाम का डर ही ऐसा था। हम पति-पत्नी डूबते-उतराते समय गुजार रहे थे। बच्चों का दुखी चेहरा देखा नहीं जाता था। दूर से खाना, दवाइयाँ, कपड़े आदि कमरे के दरवाजे पर रख कर लौट आना मुझे बहुत भारी प्रतीत होता था, परन्तु कोरोना की मजबूरी थी। मेरे और निष्काम के माता-पिता, भाई-बहिन भी कोरोना के चलते बहुत दुखी थे। कोई उपाय नहीं था। कोई आ-जा नहीं सकता था। शंका-कुशंका के बीच समय निकालना था।

दसवें दिन बुखार में फर्क आया। थोड़ी राहत मिली। फेफड़ों के संक्रमण के कारण बोलना भी कठिन था। बारहवें दिन से स्थिति में कुछ सुधार होना शुरू हुआ। उम्मीद बंधी। सोलहवें दिन टेस्ट कराया तो पता लगा कि संक्रमण कम तो हुआ है पर अभी पूरी तरह से समाप्त नहीं हुआ है। बच्चे जो पापा के जल्दी बाहर आने की उम्मीद में थे, एकदम निराश हो गए। स्थिति में सुधार होते-होते पच्चीसवें दिन टेस्ट नेगेटिव आया। बाहर आने की उम्मीद में बच्चों के चेहरे जगमगा उठे। आखिर छब्बीसवें दिन निष्काम कमरे से बाहर आये। बच्चों और मेरी खुशी का ठिकाना नहीं था। बच्चों के चेहरों पर चमक और खुशी देखते ही बनती थी।

धीरे-धीरे समय के अनुसार कसरत एवं साइकिलिंग आदि से 3-4 माह में निष्काम पूर्णतः स्वस्थ हो गए हैं। मेरे और मेरे परिवार पर आये इस संकट को मैं जीवन भर भुला नहीं सकूंगी। ईश्वर करे सभी लोग कोरोना से मुक्त रहें।

सोशल मीडिया की लत

- डॉ. दीपचंद्र



21वीं सदी की सबसे बड़ी खोज इंटरनेट है, जिसकी वजह से आज पूरी दुनिया एक सूत्र में बंध गयी है। इससे हमारे समाज में बहुत ही क्रान्तिकारी बदलाव आये हैं। इंटरनेट ने सूचना और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में नया आगाज किया है और आज हर क्षेत्र में इसका इस्तेमाल हो रहा है। हम अब इसके बिना दुनिया की कल्पना भी नहीं कर सकते हैं।

इंटरनेट ने वेबसाइट के माध्यम से हर प्रकार की सूचना को आम और खास लोगों तक पहुँचाया है। ईमेल से लेकर खरीद-फरोख्त, पढ़ाई-लिखाई, कमाई, शादी-विवाह, दोस्ती-यारी सब इसकी सहायता से हो रहा है। इसने जब से स्मार्ट मोबाइल में प्रवेश किया है, तब से हजारों काम के एप आ चुके हैं। कुछ एप तो बहुत ही जरूरी हैं, लेकिन कुछ गैर जरूरी भी हैं।

किस सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर कितने भारतीय?

| | |
|-----------|------------|
| Whatsapp | 53 करोड़ |
| YouTube | 44.8 करोड़ |
| Facebook | 41 करोड़ |
| Instagram | 21 करोड़ |
| Twitter | 1.75 करोड़ |

स्रोत- भारत सरकार

BBC NEWS | हिन्दी

आज हमारा मोबाइल कई तरीके से कार्य करता है। आप इससे यात्रा, व्यापार, खरीद, सूचना इत्यादि का आदान-प्रदान करते हैं। इस प्रकार के सोशल वेबसाइट और एप को सोशल मीडिया कहा जाता है। इस सोशल मीडिया पर लोग आपस में जुड़कर अपने विचारों और मतों को स्वतंत्रतापूर्वक एक-दूसरे के साथ साझा करते हैं।

सक्रिय तौर पर 346 करोड़ लोग पूरी दुनिया से इस सोशल मीडिया से जुड़े हैं, जो अपने विचारों और मतों को आजादी के साथ एक दूसरे के साथ साझा कर रहे हैं। भारत में सोशल मीडिया का उपयोग सक्रिय तौर पर लगभग 50 करोड़ लोग कर रहे हैं। सोशल मीडिया की प्रमुख वेबसाइटों और एप में यूट्यूब, फेसबुक, इंस्टाग्राम, ट्विटर, व्हाट्सअप, मैसेन्जर, टिकटाक इत्यादि शामिल हैं, जिसमें लोग अपनी

रचनात्मकता को साझा करते हैं।

वर्तमान में सोशल मीडिया सभी के जीवन का अभिन्न हिस्सा बन चुका है। सोशल मीडिया में औसतन हम 3 से 4 घंटे प्रत्येक दिन बिताते हैं। आजकल जहाँ भी देखें, वहाँ हर इंसान सर झुकाये अपने अंगूठे का प्रयोग करता हुआ मिल जायेगा। हालांकि इस सोशल मीडिया ने कई बिछड़े लोगों को मिलाया और नये दोस्त बनाने में मदद की है।

बिना किसी देशीय सीमा कोई भी सूचना या जानकारी त्वरित तौर पर इसमें साझा कर पाते हैं। किसी को तुरन्त वास्तविक समय पर वित्तीय मदद भी भेज पाते हैं। सोशल मीडिया में सही सूचनाओं को सही तरीके से पहुँचाया जा सकता है, लेकिन ये दोधारी तलवार की तरह काम करता है। इसके प्रयोग के कई प्रकार के नुकसान भी होते हैं। आज ज्यादातर लोगों को इसकी लत लग चुकी है। हम बिना किसी काम के भी मोबाइल में दिन-दिन भर लगे रहते हैं। इसके ज्यादा इस्तेमाल के कारण करोड़ों लोगों को इसकी लत लग चुकी है।

सोशल मीडिया लत के लक्षण

इस लत का पता लगाना बहुत ही आसान है। इसके कई प्रकार के लक्षण होते हैं जो इस्तेमाल करने वाले लोगों में परिलक्षित होते हैं, जिनका वर्णन नीचे किया गया है।

दूसरों से तुलना

अपने दोस्तों और रिश्तेदारों के द्वारा किये पोस्ट को देखते समय अपने रंग-रूप, शारीरिक बनावट, जीवन की उपलब्धियां की उन लोगों से तुलना करना और अपने आपको कमतर पाना, जिससे हीन भावना पनप सकती है। अगर सोशल मीडिया के प्रयोग करने के बाद आपको ऐसी भावनाएं आती हैं तो अच्छा है कि कुछ दिन ब्रेक ले लें।

बेवजह इस्तेमाल करना

कई बार हम दिन-रात बेवजह सोशल मीडिया की फीड को खंगालते रहते हैं। इसमें हम देश-दुनिया की हलचल जानने इसके साथ जो अपने साथ जुड़े लोग हैं उनके बारे में जानकारी प्राप्त करते रहते हैं। अत्यधिक जानकारी लेने की प्रवृत्ति भी हमारी इस लत को बढ़ाती है।

खुशी गुम होना

सोशल साइटों अपनी से जुड़ने का बेहतरीन जरिया है। लोगों से जुड़े होने से हमें खुशी मिलती है। अगर आपको इस सोशल मीडिया के प्रयोग से खुशी का अहसास होना बन्द हो जाये या वर्चुअल रिश्ते बेमानी लगने लगे तो समझिए इनसे दूरी बनाने का समय आ गया है।

दूरी बर्दाश्त न होना

कई बार यूजर सोशल मीडिया से एक पल की दूरी नहीं सह पाते हैं। उन्हे हर पल फोन की नोटिफिकेशन रिंग बजने का भ्रम भी होता रहता है। अगर फोन का इस्तेमाल करने को नहीं मिलता है तो बहुत ही बेचैनी होती है। अगर इस तरह की बेचैनी आपको होती है तो सोशल मीडिया से दूरी बनाना ही सही होगा।



सोशल मीडिया लत से बचने के लिए रोकथाम

सोशल मीडिया की लत व्यक्ति के सामाजिक व्यवहार को बाधित करती है। बेहतर है हम इस लत को लगने से पहले ही रोक दें। जो समय है उससे अपने जीवन के मूल्य में वृद्धि कर सकते हैं। इसको रोकने के कुछ तरीकों में सोशल मीडिया का उपयोग करने के लिए एक निश्चित समय होगा। कोई शौक विकसित करें, कुछ रचनात्मक कार्य करें, अगर आपके पास खाली समय बच रहा हो तो अच्छी किताबें पढ़ें और अपने परिवार के साथ समय गुजारें या कुछ नया सीखने में व्यस्त रहें। अपनी रचनाधर्मिता को बढ़ायें। कविता, कहानी और गीत लिखें। बेशक सोशल मीडिया आज हमारी जरूरत बन चुका है। इसका प्रयोग किए बिना नहीं रहा जा सकता है, लेकिन इसका प्रयोग बहुत सोच-समझकर करना चाहिए। इस लत से छुटकारा पाने के लिए कुछ उपाय कर सकते हैं।

नोटिफिकेशन अलर्ट बंद करें

जब किसी पोस्ट पर लाइक या कमेंट मिलने से जुड़े नोटिफिकेशन मिलते हैं तो यूजर के शरीर में डोपामाइन का स्तर बढ़ जाता है। इस हार्मोन से आपको अच्छा लगता है। यही हमारी लत की मुख्य वजह बनता है।

अपने लिए समय निकालें

सोशल मीडिया के अकाउंट को देखने की तलब जगे तो फोन उठाने के बजाय दिल को भाने वाली किसी गतिविधि में मन लगाने की कोशिश करें। परिवार और मित्रों के साथ घूमने-फिरने के लिए बाहर निकल जायें।

सोशल मीडिया के इस्तेमाल का समय निर्धारित करें

सोशल मीडिया का प्रयोग करते हुये यह पहचानें कि कौन से कन्टेंट आपको अच्छा या बुरा महसूस कराते हैं। अगर कोई पोस्ट नकारात्मक है तो उस पर नजर डालते ही आगे बढ़ जायें। साथ ही, फोन कितना इस्तेमाल करना है इसके लिए समय निर्धारित करें।

फोन को पहुँच से दूर रखें

रात में फोन को बेड से दूर रखकर सोयें ताकि सोशल मीडिया के प्रयोग की तलब जगने पर यह फौरन हासिल न हो जाये। हो सके तो फोन को साइलेंट मोड पर रखें। इससे नोटिफिकेशन आने का अलर्ट नहीं मिलेगा, जिससे आपकी नींद खराब नहीं होगी।

सोशल मीडिया का उपचार

आजकल सोशल मीडिया की लत की स्थिति भयावह हो रही है, क्योंकि आज हमारे किशोर बड़ी संख्या में इसके आदी हो रहे हैं। आज सभी किशोरों के पास मोबाइल फोन आसानी से उपलब्ध होता है। कोविड की महामारी के बाद तो बच्चों के लिए आवश्यक हो गया है, क्योंकि उनका शिक्षण-प्रशिक्षण कार्य इसके माध्यम से चलता है। इस लत से निदान के लिए सबसे अच्छा और बढ़िया तरीका तो किसी अच्छे मनोचिकित्सक से परामर्श करना होगा। उनके सत्र व्यक्ति को व्यसन से मुक्त होने में मदद करेंगे। इसकी लत बिल्कुल किसी अन्य नशे के समान होती है। अगर इससे छुटकारा पाना है तो इस सोशल मीडिया को संयमपूर्वक और सकारात्मक रूप से उपयोग किया जाना चाहिए।

एक कहानी : शायद किन्हीं अपनों की...

- जितेंद्र कुमार



लाश शब्द सुनते ही रोंगटे खड़े हो जाते हैं। क्या वो लाश किसी अपने की तो नहीं। कैसे तड़पी होगी वह, लाश! बनने से पहले, जब वह अपनी टूटती-उखड़ती सांसों को बचाने के लिये ऑक्सीजन मिलने की उम्मीद में पुरजोर से ह...ह...ओ-ह..ह..हो कर रही होगी। अभी चंद रोज पहले ही तो उसने इकलौते बेटे की शादी की थी और लाइली बेटी तो सयानी भी नहीं हुई थी...बड़ा गर्व था अपनी बेटी की सुंदरता पर, और हो भी क्यों न! सर्वगुणसम्पन्न जो थी वह। बड़े अरमां थे कि कोई राजकुमार जैसा वर खोजूंगी उसके लिये ताकि कोई कमी न रह जाए उसके जीवन में। खुशियों से भरपूर इस घर की चारदीवारी से टकराती उसकी आवाजों की गूंज उसके चहरे पर संतोष की अमिट छाप दर्शाती थी।

जिस घर में दुल्हन बन कर आयी, अपने हाथों से सजाया-संवारा, आज उसी घर की दहलीज के बाहर बिल्कुल शांत, खुले कानों से सुनती हुई और बंद आँखों से घर को देख रही है बस। पर कुछ कह नहीं सकती अब...उसके आसपास है बस कुल पाँच-छह लोगों का रुदन। बेटा-बेटी और पति का स्तब्ध-सा चेहरा कितना कुछ पूछना चाह रहा था कि इतना सा ही साथ था बस...कितनी निष्ठुर और निर्मोही बनकर अपनी जिम्मेदारियों को पूरे किये बिना ही शांत हो गयीं...अब कैसे होगा...पति बेचारगी से लाचार कोने में छिप-छिप फूट-फूट कर रो रहा और सोच रहा महज बीस-बाईस साल का ही साथ निभाना था, तुम्हें ऐसे नहीं जाना था...पर शायद ये तो इस शांत देह को भी नहीं पता रहा होगा कि वह घर से किस लाइलाज बीमारी के इलाज के लिये जा रही है और फिर वह कभी इस घर में इस शरीर के साथ वापस नहीं आ पायेगी और नहीं देख पायेगी उन अपनों को जिन पर वह फूली नहीं समाती थी ..और नहीं कर पायेगी अपनों से अपने दिल के अरमां साझा।

हॉस्पिटल जाते वक्त बहू ने कहा था-अब देखना माँजी जब वापस आयेगी तो अपने सर-आँखों पर बिठा के रखूंगी, रोज सुबह सैर पर ले जाऊँगी ताकि आगे अब आपको कोई परेशानी न उठानी पड़े। ऐसा लगता था कि ननद ने माँ के संघर्ष की पूरी कहानी अपनी भाभी को बता रखी थी कि

कैसे कभी लोगों के कपड़े सिल-सिल कर कर तो कभी पुरानी किताबों के कागज़ से थैली बना बनाकर दो पैसे बचाये, और जब लगा बच्चों के उज्ज्वल भविष्य के लिये यहाँ अच्छे स्कूल और बुनियादी सुविधाओं का अभाव है तो गाँव छोड़ राजधानी में परिवार सहित किराये के घर में आकर यहीं से ही पति के लिये एक छोटा सा व्यवसाय शुरू कराया।

शुरुआती उथल-पुथल से निराश एवं एक-एक पैसे को मोहताज होने के बाबजूद रीढ़ की हड्डी की तरह परिवार को संभाले रखा और पति को हौसला नहीं हारने दिया। जब इस व्यवसाय में तरक्की के बजाय नुकसान उठाना पड़ा तो इसे छोड़ दूसरे व्यवसाय को स्थापित करने का न केवल निर्णय लिया अपितु स्वयं भी पूरी तन्मयता से पति के साथ जुट गयी ताकि उनकी हिम्मत न टूटने पाये और कहीं हताश होकर वापस गाँव न जाना पड़े।

इधर एक तरफ परिवार की जिम्मेदारियों का निर्वहन तो दूसरी तरफ रोजगार की नियमितता के लिये संघर्षरत पति का सहयोग करते-करते दिन-रात का अंतर ही भूल गयीं....अंततः जीत हिम्मत और संघर्ष की हुई और व्यवसाय में सफलता मिलने लगी और जीवन व्यवस्थित होकर सामान्य पटरी पर लौटने लगा...समय के साथ राजधानी में एक छोटा सा घर भी बना लिया। बेटा सीए बन गया और बेटी भी पढ़ाई में अच्छी प्रगति कर रही थी...ननद से माँजी के संघर्षरत जीवन का आँखों देखा हाल सुन माँजी के लिये अपार आदरभाव स्वतः ही आँखों से झलक आया...

बहू-बेटे ने सोचा था कि माँ ने अपने जीवन में सिर्फ और सिर्फ कष्ट और संघर्ष ही झेला है अतः अब उनको इसका प्रतिफल मिलना चाहिये इसी भावना से उनके लिये सभी भौतिक सुविधाओं को उनके आसपास उपलब्ध करा एक सरप्राइज दिया जाये ...इधर भाई-बहन, बहू और पति सरप्राइज का तानाबाना बुन रहे थे, उधर बेरहम वक्त उनकी समय सीमा इस मृत्युलोक में निर्धारित कर चुका था।

जिन हाथों ने उम्र गुजार दी परिवार सँवारने में,
आज लटकते मृत शय्या से, बेबस-से लाचारी-से।

तभी किसी ने कहा अंतिम कार्यक्रम की तैयारियाँ प्रारंभ की जाए। वहाँ पाँच-पाँच छह-छह घंटे की वेटिंग चल रही है और वैसे भी इस बीमारी से ग्रसित शरीर को ज्यादा देर यहाँ रखना ठीक नहीं...क्या पता कब कौन इस पर भी बंदिश लगा दे कि इसे यहाँ से हटाओ वरना हम कहीं इस बीमारी की चपेट में न आ जाएँ...अरे! कुछ देर और रुक जाओ, वैसे तो इन परिस्थितियों में और किसी अपने के आने की उम्मीद नहीं है पर इसकी माँ को तो आ जाने दो, वो भी आखिरी बार इसे देख ले। हमेशा शोर मचाने वाली आज कितनी शांत है, बिलखते हुये पति ने अपने आप को सँभालते हुये कहा...

एक वही तो था जो ये सारा वाक्या बता सकता था कि अगर माँ को समय रहते ऑक्सीजन मिल जाती तो ये सब नहीं होता शायद! बेटा जो कभी बड़ों के बीच में नहीं बोलता था, अचानक से बड़ों की भाषा बोलने लगा। कैसे मात्र छह-सात घंटों में समय का प्रवाह एकदम विपरीत हो गया...

कल शाम को छह बजे तक माँ अपने हाथों से हमारे लिये खाना बना रही थी और कह रही थी- ये खांसी सही हो जाये तो चैन पड़े...तभी अचानक माँ बेहोश होकर गिर पड़ीं। पापा ने पानी की कुछ छीटे डाले तो होश आया, पर कुछ देर बाद फिर बेहोश हो गयीं। तब पापा ने हॉस्पिटल ले जाना ही उचित समझा।

पर ये क्या हॉस्पिटल के इमरजेंसी विभाग फुल! फिर आनन-फानन में दूसरे हॉस्पिटल भागे, वहाँ तो फर्श पर ही मरीज पड़े हुये थे और लोगों की चीत्कार से कान फटने लगे...इस तरह एक से दूसरे, दूसरे से तीसरे, तीसरे से चौथे....पर हर जगह से निराशा ही हाथ लगी। पापा के तो हाथ-पैर फूलने लगे। मुँह से शब्द नहीं निकल रहे थे। कुछ समझ नहीं आ था रहा क्या करें...इधर माँ अभी भी होश में नहीं थीं, स्वतः आँखों से आँसू झर-झर बहने लगे।

भारी-सी आवाज में इतना ही कहा-हे भगवान ! अब कहाँ जायें...क्या करें...पर इस नारी ने कभी हिम्मत हारना सिखाया ही नहीं था। निरीह दृष्टि डालते हुये माँ को देखा

और फिर एक परम मित्र को फोन पर ही रोते हुये वस्तुस्थिति से अवगत कराया। वह तुरंत अपने संपर्कों और ओहदे के माध्यम से किसी सिख गुरुद्वारा ट्रस्ट हॉस्पिटल में उनको ले गया और तुरंत उन्हें उपचार दिलाना सुनिश्चित कराया... हॉस्पिटल दर हॉस्पिटल के चक्कर काटते-काटते और इस हॉस्पिटल में उपचार मिलने तक के बीच वक्त अपनी गति से निरंतर चलता रहा और रात के बारह बज गये...डॉक्टरों ने बोल दिया कि देर बहुत हो चुकी है और ऑक्सीजन का स्तर 40 के नीचे जा चुका है और निरन्तर गिर रहा है, पर आप हिम्मत और ऊपर वाले पर भरोसा रखिये सब ठीक हो जायेगा...

पर ये क्या लगभग एक घंटे बाद किसी सफ़ेद प्लास्टिक बैग में कुछ भरकर हमारे पास लाकर रख दिया और कह दिया देर बहुत हो चुकी थी और बाँडी को इस बैग से बाहर न निकला जाये...बाँडी...बैग...देर...ये क्या कह रहे है डॉ. साब आप...अभी कुछ देर पहले तक तो सब कुछ ठीक था...फिर अचानक...देखिये ये समय इन सब बातों का नहीं है। आप किसी पहचान के कारण ही इस हॉस्पिटल में आये थे इसलिये हम बाँडी आपको सौंप रहे हैं। नगर-निगम के कायदे क़ानून तो कुछ और ही कहते हैं...आप अपने आप को सँभालिये और आवश्यक नियमों का पालन करते हुये अतिशीघ्र बाँडी को डिक्म्पोज कर दीजिए...ये बाँडी अब एक बम में बदल चुकी है, इसलिये इसे छूना और बैग से बाहर निकालना सख्त मना है। डॉक्टर धारा-प्रवाह बोलकर वहाँ से निकल लिये।

क्या समय आ गया है! अपने अपनों से घबराने लगे, लोग लाश को भी बम बताने लगे...और न जाने क्या-क्या देखने को मिलेगा अभी...कब सुधरेगें ये हालात अभी...हर घर से एक की कुर्बानी देनी होगी, तब कहीं ये शांत हो शायद! तरह-तरह की बातें हवा में गूँज रहीं थी...इस एक के हमेशा के मौन ने सबको अशांत कर दिया था...

कितने असमय समा गये, इस क्रूर काल दौर में,
पर सबके सब अपने थे, लाल लहू के रिश्ते से।

ये एक छोटा सा प्रयास था उन अनगिनत लोगों के लिये जो इस महामारी के दौर में असमय काल के गाल में समा गये और अपने पीछे छोड़ गये तमाम बिलखती हुयीं यादें...



कोरोना का कहर

- पवन गुप्ता

हे निर्मम निर्मोही कोरोना,
कर दिया दुष्कर सबका जीना।
वो भी क्या दिन थे,
जब रहते तेरे बिना थे,
ना चेहरे पर कोई मास्क, न ही कहीं जाने से डर था,
जो मन किया, करते वही, क्योंकि न तेरा कहर था।
जो बन कर आया तू काल,
हो गया जीवन बेहाल।

कितनों को बनाया तूने स्वर्गवासी,
कितनों को किया अपनों से अलग।
मचा कर ऐसी तबाही, तू बना हैवान,
क्या-क्या बयां करूँ दर्द-ए-दास्तान
मिटा डाला तूने कितनों का नामोनिशान।।
चारों तरफ फैल रहा तेरा ही आतंक,

छिनी बहुतों की जिंदगियां, तूने मारा ऐसा डंक।
न जाने कब उदित होगा कोरोनामुक्त मयंक।।

अनिश्चित काल, अनिश्चित समय है; जब तेरा जाना होगा,
पता नहीं कब पुरानी खुशियों का आना होगा,
कब दोस्तों से मिलने का बहाना होगा,
कब रेस्तरां में खाना होगा।।
वैसे तो प्रश्न अनेक; जो तूने किए उत्पन्न हैं,
तुझसे रहता खिन्न सभी का मन है।

इन अनसुलझे प्रश्नों का ही तो है रोना
किसी को न भाता तेरा इस जग में होना।।
तेरी मार से भयभीत है हर इंसान,
पल भर में ही भर जाता पूरा श्मशान,
महाकाल इस काल को दे दो अब अवसान।।

कोरोना से रक्षण

- अदिति शर्मा
पुत्री - अजय कुमार शर्मा



कोविड का भय
विश्व भर में छाया
दूरी रखना मास्क पहनना
काढ़ा पीना, हाथ साफ करना।

कोई हल नहीं निकाल पाया था
भय का माहौल था
जब से आई वैक्सिन
बनने लगी एंटीबाँडी।

हम सब प्रण लें
वैक्सिन लगवाएँ
अपने पुराने दिन वापस लाये
कोरोना से मुक्ति पाएँ।

चिड़िया का स्वप्न

- अदिति शर्मा
पुत्री - अजय कुमार शर्मा

मैं छोटी सी चिड़िया
फुदक इधर-उधर
सुबह-सुबह उठ जाती
दाने चुन-चुन खाती
ठंडा पानी जो तुम रखती
गट-गट मैं पी जाती।

हरी-भरी बगिया तुम्हारी
मुझको बहुत ही भाती है।
सुनहरे फूलों की क्यारी
मुझको बहुत लुभाती है।

नीम पेड़ पर मेरा घोंसला

पवन झुकोरे खाता है
जब तुम खेलो सखियों के साथ
मेरा जी ललचाता है।

मुझको अपना मित्र बना लो
और थोड़े से पेड़ लगा लो
तोता मैना तितली
और भौर भी आएँगे।

तुम्हारी बगिया भी खिल जाएगी
और मौज मस्ती भी आएगी
वातावरण भी शुद्ध होगा
प्रकृति भी मुस्कराएगी।

संघर्ष और परिणाम

- सौरव कुमार



याद रहे! संघर्ष व्यक्तिगत है परिणाम नहीं,
कहाँ हुई भूल-चूक? करें आत्मचिंतन सुधार की।

कुछ मुख तो अटकलें लगाएंगे ही, इनका विवेचन आपका
काम नहीं।

वक्त है रणनीति में बदलाव का, आलोचकों से घबराने की
बात नहीं।

परीक्षा है आपके धैर्य व समर्पण की भी, व्यर्थ न जाता सतत
परिश्रम कभी भी।

अनुशासन, आस्था और आशीर्वाद, ये भी हैं पथ-प्रदर्शक
निर्विवाद।

बाधाएँ विफलता की भले आये, हौसला न कभी डगमगाए,
करें कल्पना उस निज-गौरव की, जब लक्ष्य की प्राप्ति ही
जाए।

बदलेगा परिणाम भी शीघ्र, आत्मविश्वास से सराबोर रहें।
मिलेगी सफलता निश्चित एक दिन, चलते निज-संघर्ष-पथ
पर निश्चित रहें।

माँ

- रीमा शर्मा
विवाहिती - आर.एस. शर्मा

माँ तुम्हारे प्यार का है, बहुत बड़ा विस्तार।
जितना है अम्बर का अगणित, असीमित सा विस्तार।
मेरी माँ के आँचल का तो सबसे बड़ा विस्तार।

यह धरती है जितनी भी बड़ी, धीर, वीर, गंभीर।
मेरी माँ की भी प्रकृति है, उससे ज्यादा गहरी और गंभीर।

यह देखो पर्वत की है, जितनी ऊँची चोटी।
माँ की भी तमन्ना है, मेरे लिए कहीं नहीं है छोटी।

कौयल कूके, मोर नाचे, जब-जब काली घटा को देखे।
मेरी माँ भी ऐसे हर्षे, जब-जब वो मुझको देखे।

माँ तेरे प्यार का है बहुत बड़ा विस्तार।
माता तेरे पालन की है माया अपरम्पार।

है दुनिया में क्या कोई ऐसा भी कोई देव?
जिसको तूने नहीं पूजा, बनाने मुझको शेर।

सूरज चमके, चंद्रा चमके, चाहे हो घटा घनघोर।
हरदम बहता प्रेम का झरना, मेरी माँ का चारों ओर।

घर आँगन, बगिया और चौरी, लगता है सब सून।
घर से जब तेरा साया उठ जाता, घर लगे वीरान।

तेरे बिना मैं कैसे बताऊँ, अपने मन की व्यथा अनंत।
माँ मेरी हर चीज का खजाना, तेरी छाया देती अनहद आनंद।

पतझर भी वसंत बन जाए, जब-जब माँ मेरी मुझको मिल
जाए।

जब-जब सूरत तेरी ना दिखे, सूख जाता है खून।

हे खुदा बस ये है, छोटी-सी दुआ,
कभी मत करना मुझे बस इससे जुदा।
माँ तुम्हारे प्यार का है, बहुत बड़ा विस्तार।

छत से एसी तक

- समी उर रहमान



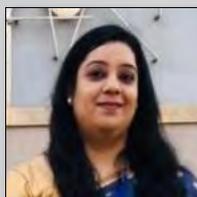
वक्त बड़ा वो था निराला छत पर हम सो जाते थे, फर्श पर लगाकर गद्दे सब खेल तमाशे कर जाते थे लगती थी ड्यूटी सबकी गरम फर्श पर डालने की पानी, पर छोटा हूँ यह कहकर अक्सर हम बच जाते थे पर लगा अगर हो पाइप तो हम सबसे आगे आते थे, लेकिन पाइप लगाने और हटाने में फिर पीछे हट जाते थे लगता था एक टेबल फैन भी छत पर, जब गर्मी ज्यादा होती थी, खाकर उसकी हवा मस्त हम सो जाते थे सुबह की ठंड, चिड़ियों का चहचहाना और मक्खियों का भिनभिनाना सुनकर जल्दी ही उठ जाते थे सपनों में खोये, चादर खींचते, कान में भाई के धागा डालते और काश थोड़ा और सो लेते ये सोच कर रह जाते थे करेगा कौन गद्दे तह, ये बड़ा मसला हो जाता था वरना सुबह को मम्मी की डांट सुनने को तैयार हो जाते थे

पढ़ाई, डिग्री और नौकरी के चक्कर ने छत को पीछे छोड़वा दिया और कमरे में पंखे के नीचे सुलवा दिया वक्त गुजरा तो एयर कूलर में सोना रास आ गया, रहती है चिप चिप बहुत ये discussion फिर आम करवा दिया ऑफिस में मशीनों के लिए लगे एसी ने खूब की आदत खराब, और बेचारे चिपचिपे कूलर को पीछे छोड़वा दिया ले आये हम एसी घर पर, सोये मस्त तान कर, उठे एकदम फ्रेश, और दीवाना एसी ने हमको अपना बना दिया

खराब हुआ एसी तो ख्याल छत पर सोने का आया, खुले आसमान सोने वाले बिन एसी एक दिन भी न रह पाए फिर सोचा मन में क्या खोया और क्या है पाया, डिग्री, नौकरी और आगे बढ़ने में क्या-क्या पीछे छोड़ आए ये छत और टेबल फैन हैं वो माँ-बाप जो आज भी छत पर सो जाते हैं और बिन एसी ही आराम से हैं रह जाते खोकर छत और फैन को हमने एसी को पाया है, क्या दूर होकर माँ-बाप से ये सब रुतबा पाया है पर खुश हो जाते हैं हम, जब पापा हमारी डिग्री पर इतराते हैं, मम्मी बेझिझक सबको अपनी सैलरी बताती हैं छत से एसी का सफर ये बड़ा ही निराला है, पाया है कुछ-कुछ और बहुत कुछ है खोया पर जिंदगी इसी का नाम है और आगे बढ़ते जाना है

दोस्त

- बबीता विजय मखीजा



माना, नहीं रिश्ता हमारा खून का लेकिन एक नाता है ये, पूरे मन का

माता पिता परिवार से, रिश्ता मेरा ये जन्म से एक तू ही है मेरे दोस्त! जिससे रिश्ता मेरा मन से

चाहे तेरे सुझाव ने मेरी उलझन ना सुलझाई पर तेरी बातों से मेरे मुख पे, मुस्कान हमेशा है आई

कह न पाऊँ जो, मन की बात किसी और से कहता हूँ तुझसे क्योंकि, बंधे हम विश्वास की डोर से

तूने जीवन में कई बार दिए हैं मुझे, 440 वॉट के झटके लेकिन उन झटकों से भी सदा मिले हैं, मुझे खुशी के फटके

जिंदगी की धूप में, जैसे तू शीतल छाया खुशी हो या गम, मैंने हरदम तुझे पास है पाया

जिंदगी मिले न मिले मुझे दोबारा लेकिन जब भी मिले, हो तेरा हरदम सहारा

जीवन की मुश्किल डगर पर, जब कभी मैं घबराया तभी तूने हाथ थाम, हौसला दे, हर तूफान में साथ निभाया

ऐ दोस्त! बनके आया मेरे जीवन में, तू एक फरिश्ता चाहे कुछ हो जाए, कभी न टूटे तेरा मेरा ये प्यारा रिश्ता

अपना अपना आसमान

- दिनेश कुमार अग्रवाल



"बेटा कितने धीरे धीरे चल रही है, जरा जल्दी कदम बढ़ा। वैसे भी खरीदारी करते हुए बहुत देर हो गई है।" - रीना एक कंधे पर पर्सा, एक कंधे और एक हाथ में खरीदे हुए सामान का बैग और दूसरे हाथ से अपनी सात साल की बेटी प्रिया का हाथ थामे हुए तेजी से बढ़ी चली जा रही थी।

"अरे रीना कहां भागी जा रही है" - आवाज सुनते ही उसके कदम ठिठक गए। बहुत जानी पहचानी सी लगी वो आवाज। उसने पलटकर देखा तो उसके कॉलेज की बेस्ट फ्रेंड उसे आवाज दे रही थी।

"सौम्या तू!! कितने सालों बाद तुझे देखा है" - रीना खुशी से चिल्ला पड़ी। सौम्या ने उसे गले लगाने को हाथ बढ़ाया और रीना अपनी स्थिति देखकर मुस्कुरा दी।

"तू यहां कैसे सौम्या?"

"पिछले हफ्ते ही मेरा ट्रांसफर यहां हुआ है तभी से तुझे मिलने को बैचैन थी। कैसी है तू?" - सौम्या ने उसे ऊपर से नीचे तक गहरी नजर से देखा।

"देख नहीं रही एकदम मस्त हूं। तू घर आ न, आराम से बैठकर बात करेंगे। अभी जरा जल्दी में हूं। घर जाकर खाना भी बनाना है।" - रीना ने एक ही सांस में उसे निमंत्रण भी दे दिया और अभी रुक पाने में असमर्थता भी जता दी।

"ठीक है, परसों शनिवार है। मेरा हाफ डे रहता है, तब मिल लेंगे।"

"अरे वाह! फिर दोपहर का खाना मेरे साथ ही खाना। बच्चों को भी ले आना।"

सौम्या का चेहरा उदास सा हो गया पर मुस्कुराते हुए उसने हामी भर दी। शनिवार को नियत समय पर सौम्या रीना के घर पहुंच गई।

"बच्चे कहां है सौम्या?"

"अरे उन लोगों का अपने दोस्तों के साथ पहले से प्रोग्राम था इसलिए नहीं आ पाए।"

"कोई बात नहीं कहते हुए रीना मुस्कुरा दी पर उसकी आंखों से सौम्या की उदासी छुप न सकी। रीना ने बहुत सारे व्यंजन बनाए थे और उसकी फेवरेट रसमलाई भी। खाना बहुत ही स्वादिष्ट था।

"रीना कहां से मंगवाया है ये सब? बहुत ही टेस्टी है"

"पलक और रीना किचन से" कहते हुए रीना मुस्कुरा दी।

"क्या इतने सारे व्यंजन तुम दोनों ने बनाए हैं?" सौम्या के आश्चर्य की सीमा नहीं थी।

रीना मुस्कुरा दी। रीना की बड़ी बेटी पलक ने बहुत आग्रह से सौम्या को खाना परोसा और उससे बतियाती भी रही।

"मम्मी बहुत सालों बाद आप दोनों मिले हो तो आराम से बातें करो। मैं सब रसोई समेट लूंगी।"

रीना ने मुस्कुराकर हामी भरी और दोनों उसके बेडरूम में आ गए। सौम्या जबसे उसके घर आई थी। हर चीज का बारीकी से निरीक्षण कर रही थी। बहुत ही सुंदर ढंग से सजाया हुआ व्यवस्थित घर, दीवार पर लगी हुई तरह तरह की पेंटिंग्स, क्राफ्ट पीसेस... उसकी नजर हट ही नहीं रही थी।

"मानना पड़ेगा रीना, तूने घर बहुत अच्छे से सजाया है।"

"हां, पलक और प्रिया को भी बहुत शौक है। ये सब पेंटिंग्स और आर्ट पीस उन्हीं ने बनाए हैं।"

"अरे वाह बहुत सुंदर बनाए है। आर्ट्स लिया है क्या पलक ने?"

"नहीं, इंजीनियरिंग कर रही है। ये तो उसको शौक है तो अपने खाली समय में कुछ न कुछ करती रहती है" - रीना ने मुस्कुराते हुए कहा।

"बहुत अच्छी बात है। पर एक बात बता। तूने भी इंजीनियरिंग की है, फिर मास्टर्स भी किया, पर तेरी पढ़ाई-लिखाई का क्या फायदा हुआ। रही तो तू घर की काम वाली बाई की तरह ही न।" सौम्या ने व्यंग्य से कहा।

"मैं कुछ समझी नहीं सौम्या।"

"बाई टाइप हो गई है, इसलिए इतनी सी बात भी तुझे समझ में नहीं आई। अरे ये घर के सब काम, खाना बनाना वगैरह तो बाई भी कर लेती है। फिर तेरी उतनी पढ़ाई का क्या फायदा। इससे तो तू एक बढ़िया सी नौकरी करती, इंडिपेंडेंट होती और अपनी जिंदगी मजे से जीती, जैसे मैं करती हूं।" सौम्या ने गर्व से कहा।

"किसने कहा सौम्या कि मैं मजे से नहीं जीती। हां घर के सब काम बाई भी कर लेती है, पर घर को घर गृहिणी ही बनाती है। पढ़ने का अर्थ केवल नौकरी करना कबसे हो गया? पढ़ाई हम अपने मस्तिष्क और व्यक्तित्व के विकास के लिए करते हैं। किसी भी काम को बहुत अच्छे से कर सकते हैं।"

"ये सब कहने की बातें है रीना। अब तू कमाती नहीं है तो हर बात के लिए पति का मुंह देखना पड़ता होगा। मुझे देख अपना निर्णय स्वयं लेती हूं। अपनी सैलरी जहां चाहे वहां खर्च कर सकती हूं।"

"और...." रीना ने प्रश्न किया।

"और क्या? ये तो सबसे बड़ी बात है।" सौम्या कंधे उचकाते हुए बोली।

"अपनी-अपनी सोच है सौम्या। घर कामवाली बाइयों से नहीं बल्कि गृहिणी से बनता है। मैंने स्वयं गृहिणी बनना चुना। किसने कहा कि मैंने अपनी पढ़ाई का उपयोग नहीं किया। मैं अपनी दिनचर्या में हर जगह पढ़ाई की उपयोगिता पाती हूं। अपने परिवार के सदस्यों की देखभाल, घर-बाहर के कई जरूरी काम, सभी में। सबसे बड़ी बात मैंने अपनी बेटियों की दिल से परवरिश की है। उन्हें जब जरूरत थी उनके साथ रही, उनके साथ खेली, उनके बचपन के हर पल को एंजवाय किया। बेटियों को न तो मेड के भरोसे छोड़ा और न ही पढ़ने के लिए कहीं ट्यूशन। मैंने हर वक्त खुद ही उन्हें पढ़ाया है। मुझे सही नहीं लगता कि खुद दूसरों की नौकरी करो और अपने बच्चों को दूसरों के भरोसे सौंप दो। मेरी बेटियों में अगर मेरे संस्कार नहीं आए तो फिर मेरी इतनी पढ़ाई-लिखाई का फायदा ही क्या? रही बात अपनी मर्जी से

खर्च करने की, तो मुझे कभी ऋषि ने नहीं रोका। मेरे घर में मेरे काम में हाथ बंटाने के लिए सहायिका भी है। अब तो पलक प्रिया को पढ़ा देती है तो मैं अपने लिखने के शौक को पूरा कर रही हूं। गरीब बच्चों को मुफ्त में शिक्षा दे रही हूं। इससे बेहतर अपनी पढ़ाई का और क्या उपयोग हो सकता है।"

"शायद तू सही कह रही है रीना। अब लगता है तू ही अपनी जिंदगी बहुत मजे से जी रही है। तेरी दोनों बेटियों को देखकर मेरा दिल भर आया। बहुत ही प्यारी बच्चियाँ हैं। तेरा ही बचपन का रूप, तेरे ही संस्कार और मेरे बच्चे...." सौम्या ने गहरी सांस ली।

"देख सौम्या सबकी अपनी-अपनी प्राथमिकताएं होती है, अपने-अपने सपने और अपना-अपना नजरिया। नौकरी करना भी बहुत अच्छी बात है। बस आपको हर जगह बहुत बैलेंस करके चलना होता है।" रीना ने मुस्कराते हुए सौम्या के कंधे पर हाथ रखा।

"चलिए आंटी, मम्मी चाय तैयार है और गरमागरम पकौड़े भी" कहते हुए ट्रे लेकर पलक ने कमरे में कदम रखा।

"अभी तो खाना पचा भी नहीं है बेटा और ये सब" सौम्या ने उसकी ओर प्यार से देखा।

"आंटी तीन घंटे हो गए और आप दोनों सहेलियों को पता भी नहीं चला। चलिए फटाफट चख कर बताइए कैसे बने हैं।"

सौम्या पलक को बस निहारती रह गई। उसे लगा, सच में पढ़ाई-लिखाई करके भी गृहिणी बनने का रीना का फैसला बिल्कुल सही था। कम से कम उसका अपना परिवार और बच्चे तो उसके अपने हैं।

मुख दर्पण

- सोनू जैन



क्या कभी तुमने देखा ऐसा दर्पण
जिस पर मन का हर भाव अर्पण,
न है कोई दुराव न कहीं है छुपाव
झलके सरल निर्मल हर हाव-भाव।।

गहरी खामोश नजरें, मुख मंद मुस्कान भरे
भीह की तकरीरें, माथे की अबूझी लकीरें,
मुखर हो मन ही को अभिव्यक्त करें
सहृदय के समक्ष खोल दे सब खबरें।।

जो तेरे मन में है उसके मन में भी वही
मुख रूपी दर्पण ही है मन का खाता-बही
अर्थ वस्तु में नहीं दृष्टि में गर्भित है कहीं
देखे जो अपना बन जान ले सब सही-सही।।

मेरी आकांक्षा 2020 के बाद

- रोहित भल्ला



जब हम अपने बच्चों और उनके बच्चों को 2020 के साल के बारे में बताएँगे, तो हम उस समय के बारे में बात करेंगे, जब हम दुनिया और महामारी को बाहर रखने के लिए अपने घरों में बंद रहे।

दोस्तों और रिश्तेदारों के साथ हमारा एकमात्र संपर्क टेलीफोन के माध्यम से होता था और हम केवल आवश्यक गतिविधियों के लिए ही बाहर निकलते थे, वो भी दिन के उजाले में- हम अपने चेहरे ढककर और लोगों से नजरें मिलाने से इनकार करते हुए सड़कों पर से गुजरते थे।

पुरुष इस बारे में एक वर्ष के रूप में बात करेंगे, लेकिन शायद कई महिलाएँ कहेंगी, जैसे भी हम तो ऐसे ही रहते थे। जब महामारी की पहली बार एक समस्या के रूप में पहचाना गया था, क्योंकि हम अलगाव से उबरने और अपने सामाजिक जीवन को फिर से शुरू करने के बारे में सोचते हैं, कि क्या हम यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि समाज के दो स्तंभ - महिला व पुरुष दोनों ही पहले की तरह सामान्य दिखें। क्योंकि 2012 साल में, यूनिवर्सिटी ऑफ मैरीलैंड और नेशनल काउंसिल ऑफ एप्लाइड इकोनॉमिक रिसर्च द्वारा किए गए, भारत मानव विकास सर्वेक्षण से पता चला है कि 18% महिलाएँ घर से अकेले बाहर नहीं जातीं। एक तिहाई परिवार किराने की खरीदारी करने के लिए केवल पुरुषों या बच्चों पर निर्भर हैं। इस महामारी से बचने के लिए उपयोग में लाया जाने वाला 'मुखौटा' पहनने से पहले ही बाहरी दुनिया से जुड़ने की महिलाओं की क्षमता सीमित हो गई थी। यह 60% भारतीय महिलाओं के लिए आम बात थी, जो पहले से ही या तो घूँघट या पर्दा का अभ्यास करती रही हैं। टेलीफोन पहले से ही महिलाओं को नेटवर्क-समर्थन से जोड़ने वाली जीवन रेखा था। लगभग एक चौथाई महिलाएँ वर्ष में एक से अधिक बार अपने माता-पिता, भाई-बहन, नाते-रिश्तेदारों से मिलने में असमर्थ थीं। आइसोलेशन - अलगाव का एक हिस्सा हो सकता है, क्योंकि महिलाओं के लिए यात्रा करना मुश्किल होता है, जब तक कोई उनके साथ न हो। IHDS- उत्तरदाताओं के

अनुसार केवल 50% ने ही खुद को अकेले यात्रा करने में सक्षम महसूस किया।

महिलाओं की सुरक्षा की भावना को बढ़ाने और सार्वजनिक जीवन में उनकी पूर्ण भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए क्या कुछ अपेक्षाकृत कार्य किए जा सकते हैं? सड़कों, बसों और ट्रेन स्टेशनों के आसपास प्रकाश व्यवस्था में सुधार अपेक्षाकृत सरल है। हालांकि, हमें सार्वजनिक स्थानों पर महिलाओं का एक महत्वपूर्ण समूह बनाने के लिए और अधिक रचनात्मक समाधानों की तलाश करने की आवश्यकता है, ताकि महिलाएँ अलग-थलग महसूस न करें और भीड़ में स्वयं को सुरक्षित महसूस करें। इसमें महिला ड्राइवर्स और बस कंडक्टरों को काम पर रखना (लाहौर की गुलाबी बसों का अनुकरण करना) और बाजार में महिला विक्रेताओं को आवंटित स्थानों का विस्तार करना शामिल हो सकता है।

इसमें एक ऐसा वातावरण तैयार करना भी शामिल है, जहाँ सार्वजनिक जीवन में महिलाओं का स्वागत करने के लिए पूरा समाज सहयोग करता हो। यह कोई गली नहीं है, जिससे अकेले महिलाओं को फायदा हो रहा है। चूँकि महिलाएँ यदि सुरक्षित महसूस करेंगी, तत्पश्चात् पूरा समाज सुरक्षित अनुभूति का एहसास करेगा। स्वतंत्रता आंदोलनों में महिलाओं द्वारा किए गए आंदोलन तथा राष्ट्रवादी आंदोलनों के बीच तालमेल का एक प्रेरणादायी उदाहरण प्रस्तुत हुआ। जो महिलाएँ अतीत में किसी कारणवश, एक बेहतर कल प्राप्त करने की उम्मीद में, जाने-अनजाने अवसर न प्राप्त कर पाईं, विषय चाहे जो भी हो! लेकिन मैं चाहता हूँ, जब हम अपनी दूसरी और तीसरी पीढ़ी को 2020 के बारे में बताएँगे, तो उसमें महामारी से उत्पन्न अलगाव का ही जिक्र हो, किसी डर या सार्वजनिक रूप से वस्तुओं के निर्माण के लिए अवसर तलाशने वाली के रूप में नहीं। आइए, हम सब मिलकर एक बेहतर कल बनाने में अपना-अपना योगदान दें और मुकम्मल अंजाम तक पहुँचाएँ।

मासूम बचपन

- दीप्ति अग्रवाल

पुत्री - दिनेश कुमार अग्रवाल



"दादी लड्डू दो ना"

"हां बेटा, बस पांच मिनट। सबसे पहला लड्डू बनाकर तुझे ही खिलाऊंगी। बनने तो दे।"

सरला जी मेवे वाले लड्डू बना रही थीं। उनकी ढाई साल की पोती मिश्री को वो बहुत पसंद थे। लड्डू की खुशबू उसे बार-बार किचन में खींचे चली जा रही थी। आखिर पहला लड्डू बनने पर उन्होंने कहा - "ले मिश्री खा ले।"

"बहू पहले भगवान को तो भोग लगा। फिर इसको देना" बड़ी दादी ने फरमान सुनाया।

"जी मांजी", सरला जी ने वो लड्डू कटोरी में रखा और मिश्री भी फुदकती हुई पीछे पीछे चल पड़ी। उसका मासूम-सा चेहरा बता रहा था कि वो लड्डू खाने को कितनी बेताब है।

"ले बेटा अब एक जगह बैठकर आराम से खा ले।"

"हां दादी" मिश्री ने दादी को एक मीठी सी मुस्कान दी।

"लो शांता जीजी पहले खाना खा लो", सरला जी की आवाज सुनकर मिश्री के हाथ रुक गए। शांता जीजी उनके घर कपड़े-बर्तन साफ करती थीं। रोज सरलाजी उसे खाना खिला देती थीं और घर में जो कुछ भी नया बना हो, उन्हें जरूर देती थीं। शांता जीजी खाना खाने लगीं और सरलाजी बहू के साथ मिलकर बाकी के लड्डू बनाने लगीं।

"लो शांता दादी, ये लड्डू खा लो।"

शांता जीजी एकदम हड़बड़ा गईं।

"नहीं बिटिया ये आपका है। आप खा लो।"

"मैं बोल लही हूं ना शांता दादी आप खा लो तो आपको खाना पलेगा", मिश्री अपनी तोतली भाषा में आदेशात्मक तरीके से आग्रह कर रही थी। शांता जीजी की आंखों में आंसू आ गए।

"बिटिया..." उनकी आवाज रुंध गई।

"दादी खूब साले लड्डू बना लही हैं। मैं औल ले आऊंगी। ये आप खा लो।"

बाहर से आती बातचीत की आवाज सुनकर सरलाजी बाहर आईं। वहां का दृश्य देखकर उनकी आंखें भर आईं। उनकी नन्हीं सी पोती अपने घर काम करने वाली शांता बुआ को बहुत प्रेम से अपने हाथ से लड्डू खिला रही थी। वही लड्डू, जिनके लिए वो कबसे मचल रही थी।

"खा लो जीजी। आपकी पोती इतने प्रेम से आपको खिला रही है। मना मत करो।"

"पर भाभी वो कब से आपके आगे-पीछे घूम रही थी। अभी तो पूरे बने भी नहीं है।"

"तो क्या हुआ उसका मन रख लो। मैं उसको दूसरा लड्डू दे देती हूं।"

दोस्तों! नन्हीं सी मिश्री का ऐसा प्रेमभाव हमें बहुत कुछ सिखा गया। बच्चों के लिए सब एक समान होते हैं। न कोई छोटा, न कोई बड़ा। न कोई अमीर, न गरीब।

एक गृहिणी की दिशा

- अलका शर्मा

विवाहिती - आदित्य कुमार शर्मा



समझ नहीं आता, किस दिशा में आगे बढ़ूँ,
हूँ कहीं और की, रहती कहीं और हूँ,
सोचती कुछ और हूँ, करती कुछ और,
ज़िन्दगी बता दे, किस दिशा में चलूँ मैं,
करना बहुत कुछ चाहती थी, पर रास्ते बहुत लम्बे निकले,
सोचती हूँ आगे जाऊँ या पीछे, इसी कश्मकश में हूँ,
लेकिन प्रयास किये बिना, रुकना मैंने सीखा नहीं,
फिर से इकट्ठा करूँगी अपनी सारी हिम्मतें,
नयी उम्मीद के साथ आगे बढ़ूँगी,
और अपने लक्ष्य को प्राप्त करूँगी।।

चित्र

- अक्षित भल्ला

पुत्र - रोहित भल्ला



वर्ग पहेली

- आरती सोनी
विवाहिती - आशिष सोनी



| बायें से दायें | | ऊपर से नीचे | | |
|----------------|--|-------------|--|-----|
| 1 | शक्ति, सामर्थ्य | (3) | 1 अनित्य, अस्थाई | (3) |
| 3 | राजस्थान का एक शहर | (4) | 2 शिक्षा | (3) |
| 5 | दुर्धटना | (3) | 3 मिलाना, बैठाना, लगाना | (3) |
| 7 | सुस्त, काहिल, फालतू | (3) | 4 जिसे प्रसन्नता हुई हो | (4) |
| 9 | लेखनी | (3) | 6 सरलता, भोलापन | (3) |
| 11 | नाम-सूची में नाम लिखे जाने की क्रिया | (4) | 8 एक अंक की सबसे बड़ी संख्या | (1) |
| 13 | हंसी-मलाक, मनोविनोद | (3) | 10 बाल्यावस्था | (5) |
| 15 | बदन, शरीर | (2) | 12 वेतन | (3) |
| 16 | दो का आधा | (2) | 13 सूरज | (3) |
| 17 | कोठरी | (3) | 14 भला | (2) |
| 18 | इच्छा, चाह, अभिलाषा | (3) | 16 विश्वास, भरोसा | (4) |
| 21 | उष्ण या गर्म होने का भाव या अवस्था | (3) | 19 मृग | (3) |
| 22 | नगर | (3) | 20 Reorganization का हिंदी | (5) |
| 23 | श्रवण इन्द्रिय | (2) | 22 बदमाशी, मस्ती | (4) |
| 24 | आदत | (2) | 25 आमदनी पर लगने वाला टैक्स | (4) |
| 25 | राज कपूर - नरगिस के चलचित्र का नाम, निकम्मा | (3) | 27 मछली | (2) |
| 26 | आर्द्रता, गीलापन, सीलन | (2) | 28 जमीन | (1) |
| 29 | लक्ष्मी | (2) | 30 जनता | (3) |
| 30 | अचानक, एकदम | (4) | 31 पृथ्वी | (3) |
| 32 | ----- खाये सँया हमारे | (2) | 32 नजदीक | (2) |
| 33 | समाज की एक इकाई, व्यक्ति का ----- | (4) | 33 नियमित एवं व्यवस्थित रूप से स्थिर किया गया विचार, Project | (5) |
| 34 | खुशबू, सुगंध | (3) | | |
| 36 | पानी, जल | (2) | 35 गाड़ी | (2) |
| 37 | खोज, अन्वेषण | (5) | 36 जूही | (3) |
| 40 | मेल, मिलना | (3) | 37 पीछे चलनेवाला | (4) |
| 41 | घुटना | (2) | 38 शंका, संदेह | (3) |
| 42 | किसी मंत्र या वाक्य का बार-बार धीरे- धीरे पाठ करना | (2) | 39 बुराई | (4) |
| 43 | तृतीया | (2) | 45 बदन पर काले रंग का छोटा दाग | (2) |
| 44 | रोक, रुकावट | (2) | | |
| 46 | श्रावण शुक्ल पक्ष पंचमी | (5) | | |
| 47 | चुनौती | (4) | | |

आशा भटनागर
माता – रिमझिम भटनागर सिंह



वर्षा गीत

बदरी घिरी है जरा आज देखी
यह मौसम सुहाना बहुत लग रहा है

1. घिरती बदरिया, यह रिमझिम का मौसम
चमकती बिजुरिया यह मस्ती भरा आलम
उठा जा रहा मन में आवेग सा है
समां यह बहुत खुशनुमा लग रहा है
यह मौसम सुहाना बहुत लग रहा है
2. यह चंपा चमेली, ये बेला यह जूही
सभी खिल रहे हैं, सभी मस्ती में हैं
यह कोयल की कुहू-कुहू, यह भंवरो का गुंजन
बागों में सखियों की यह मनौवल
यह मौसम खुशनुमा बहुत लग रहा है
3. हरी, लाल, पीली ओढ़े चुनरिया
सजी सुंदरी नई-नई दुलहनिया
पेंगे बढ़ाती बजाती है कंगना
झोटे देते उनके साँवरिया
चितवन से अपनी घायल किए हैं
यह मौसम बहुत सुरमई लग रहा है

आशा

पूनम की रात में छिटकी चाँदनी सी है आशा
तितली के पंखों सी कोमल है आशा
भोले बालक की मासूम मुस्कान सी है आशा
गुलाब की पंखुड़ी सी नाजूक है आशा।।

कृष्ण की बांसुरी से निकला मधुर संगीत है यह
राधा के वियोग की व्यथा है यह
पुष्पों की रंगीनी, पर नागफनी सी कंटोली है आशा
जीवन की मस्ती व मृत्यु का भय दिखलाती है आशा।।

बहुतों को किनारे लगाती, तट पर लाती है आशा
कितनों को ही बीच भंवर में डुबोती है आशा
रूप सलोना पर प्यार से रिक्त है आशा
ओएसिस-सी मन को लुभाती, छलनायकी है आशा।।

बदलता समय

पार्टियाँ, बहारें, ठहाके, वायदे पर वायदे
खो गए सब मिलने-जुलने के बहाने
कहाँ गए वह सुनहरे पल
खो गए वह मनभावन दिन
मित्रों की मंडली, अपनों से मिलने के वह क्षण
पसरा है सन्नाटा सभी ओर
सुस्त सा दिन व रात खामोशी सी है
कार्य तो सब यंत्रचालित से ही रहे हैं
पर सभी परस्पर दूर हो रहे हैं
फोन की घंटी से साँस रुकती सी लगती है
बच्चों से भी आँखें चुरानी पड़ती हैं
टी.वी. पर दुखभरी खबरें आती रहती हैं
अपनों की खबर सुनकर भी विवशता छा जाती है
जीवनचक्र बड़ा धीरे-धीरे घूम रहा है
वैरागी सा मन चुपचाप हो गया है
रातदिन इसकी उसकी साँस रुकने की खबर
व्यथित करते, मन पर टूटता कहर
बिना मिले ही अपनों का चिरनिद्रा में सो जाना
अतीत की यादों में आँसू भरे नयनों से यादों में खो जाना।

अंक-16 की वर्ग पहेली का उत्तर

| | | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|------|----|----|----|-----|----|------|----|----|----|----|----|-----|------|------|----|
| 1 | स्वा | मी | 2 | वि | वे | 3 | का | 4 | नं | द | 5 | गा | य | 6 | क | |
| | नु | | धा | | 7 | म | द | | 8 | क | था | | 9 | र | क्त | |
| 10 | भ | 11 | या | न | 12 | क | | 13 | न | 14 | म | न | | 15 | अ | दा |
| 16 | व | र | | 17 | हा | थ | | 18 | ना | क | | 19 | प | ता | का | |
| | | | 21 | ना | नी | | 22 | वि | | | 23 | चा | ह | | र्या | |
| 24 | अ | जू | बा | | 25 | ना | रा | ज | गी | | | र | | | न्व | |
| | | | 26 | लि | खा | व | ट | | | | 28 | र | ण | | य | |
| 29 | दे | 30 | व | ग | न | | 31 | को | टा | | च | | 33 | पा | न | |
| 34 | न | त | | | दा | | 35 | ह | ल | | ना | | | श्चा | | |
| 36 | दा | न | | 37 | न | क | ली | | | | | 39 | स | त्य | | |
| | र | | 40 | श | | या | | 41 | सौ | | 42 | क | म | | 43 | अ |
| | | | 44 | र | क | म | | | 45 | स | | | र्ष | | न | |
| 46 | म | द | द | | 48 | त | 49 | बि | य | त | | ण | | | मो | |
| | | म | | 50 | माँ | | क्री | | | 51 | ह | म | | 52 | हा | ल |

रिपोर्ट – हिंदी माह 2021

अंतरिक्ष उपयोग केंद्र में सितंबर 2021 के दौरान सैक एवं डेकू के स्टाफ सदस्यों के लिए हिंदी माह का आयोजन बड़े हर्षोल्लास के साथ किया गया। सैक पुस्तकालय द्वारा संपूर्ण हिंदी माह के दौरान हिंदी पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। पुस्तकालय में पिछले वर्ष के दौरान खरीदी गई पुस्तकों को पूरे माह प्रदर्शन हेतु रखा गया। यह प्रदर्शनी <http://10.61.240.70/DE/sites/default/files/HBE-2021.pdf> लिंक पर आभासी रूप से भी उपलब्ध थी।

हिंदी माह के दौरान कर्मचारियों के लिए 9 प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। पिछले कई वर्षों की भांति इस वर्ष भी सभी प्रतियोगिताएँ 'क', 'ख' और 'ग' भाषा क्षेत्र के कर्मचारियों के लिए अलग-अलग आयोजित की गईं। कोविड-19 परिस्थिति को ध्यान में रखते हुए अधिकांश प्रतियोगिताओं का आयोजन ऑनलाइन/वर्चुअल माध्यम से किया गया। केंद्र की लोकप्रिय प्रतियोगिताओं में से एक - एकांकी प्रतियोगिता में 4 एकांकी/नाटक प्रस्तुत किए गए। सभी की पटकथा मौलिक थी और विषय-वस्तु को दर्शकों द्वारा खूब सराहा गया। काव्यपाठ प्रतियोगिता में 36 प्रतिभागियों ने अपनी स्वरचित कविताओं का पाठ किया। उल्लेखनीय है कि केंद्र की सर्वाधिक लोकप्रिय प्रतियोगिता ऑनलाइन हिंदी प्रश्नमंच में लगभग 900 कर्मचारियों ने भाग लिया।

वाहन चालक और कुक, गार्डनर आदि स्टाफ सदस्यों के लिए सरल लेखन प्रतियोगिता आयोजित की गई। हिंदी माह के दौरान कर्मचारियों के परिवार के सदस्यों के लिए भी ऑनलाइन माध्यम से 6 प्रतियोगिताएँ आयोजित की गईं। कर्मचारियों के विवाहितियों के लिए बेहद रोचक 'बूझो तो

जानें' प्रतियोगिता तथा आश्रित बच्चों के लिए 'पोस्टर कलर', 'सुलेखन', 'चित्र देखो कहानी लिखो', 'पीपीटी के माध्यम से कहानी प्रस्तुति' और 'पीपीटी के माध्यम से समसामयिक विषय की प्रस्तुति' प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया।

हिंदी माह के दौरान आयोजित विविध प्रतियोगिताओं में सैक/डेकू के 1200 से भी अधिक कर्मचारियों ने भाग लिया। संपूर्ण माह के दौरान कार्यालय में हिंदी में कार्य करने के लिए लोगों में अलग ही उत्साह नजर आया। हिंदी माह प्रारंभ होने के पूर्व नियंत्रक, सैक के हस्ताक्षर से अधिकाधिक कार्य हिंदी में करने के लिए सभी कर्मचारियों को एक पत्र जारी किया गया। 14 सितंबर को हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में सभी कर्मचारियों द्वारा राजभाषा प्रतिज्ञा ली गई। हिंदी माह के दौरान कर्मचारियों के लिए हिंदी में अधिकाधिक कार्य करने हेतु प्रोत्साहन योजना भी लागू की गई।

30 सितंबर को रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम के साथ हिंदी माह पुरस्कार वितरण समारोह आयोजित किया गया। केंद्र की सर्वाधिक लोकप्रिय प्रतियोगिताओं - काव्यपाठ, एकांकी, प्रश्नमंच (मौखिक) और पुरस्कार वितरण समारोह का सैकनेट के माध्यम से लाइव प्रसारण किया गया, जिससे सभी कर्मचारी अपने स्थान पर बैठे हुए भी इन कार्यक्रमों में शामिल हो सके। अंत में निदेशक एवं नियंत्रक महोदय ने सभी कर्मचारियों को संदेश दिया कि केंद्र सरकार के कर्मचारी होने के नाते हिंदी का प्रचार-प्रसार सभी का संवैधानिक कर्तव्य है, जिसे सभी को उत्साह से निभाना चाहिए।

हिंदी पुस्तक प्रदर्शनी का उद्घाटन





सरल लेखन प्रतियोगिता



प्रश्नमंच (मौखिक) प्रतियोगिता



काव्यपाठ प्रतियोगिता



काव्यपाठ प्रतियोगिता



एकांकी प्रतियोगिता



एकांकी प्रतियोगिता



14 सितंबर को राजभाषा प्रतिज्ञा



14 सितंबर को राजभाषा प्रतिज्ञा

रिपोर्ट – भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम की झलकियाँ

श्री नीलेश एम. देसाई, निदेशक, सैक के मार्गदर्शन में तथा श्री पीयूष वर्मा^{भा.दू.से.}, नियंत्रक, सैक की प्रेरणा से दिनांक 25.11.2021 को गुजरात राज्य के कच्छ जिले के ढोरी गाँव में स्कूली छात्रों के लिए श्री सरकारी हाईस्कूल, ढोरी में अंतरिक्ष उपयोग केंद्र द्वारा 'भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम की झलकियाँ' कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर विक्रम साराभाई अंतरिक्ष प्रदर्शनी का भी आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में लगभग 250 छात्र विशेष पंजीकरण के माध्यम से सक्रिय रूप से सहभागी रहे। विक्रम साराभाई अंतरिक्ष प्रदर्शनी को देखने के लिए आस-पास के विद्यालयों के काफी छात्रों के साथ-साथ स्थानीय लोग भी आए। कार्यक्रम के मुख्य आकर्षण थे - सैक के वैज्ञानिकों द्वारा 02 व्याख्यान, प्रश्नोत्तर सत्र, छात्रों के लिए वक्तृत्व, विज्ञान मॉडल एवं प्रश्नमंच प्रतियोगिता।

इस कार्यक्रम का उद्घाटन जिला शिक्षा अधिकारी, जिला प्राथमिक शिक्षा अधिकारी, श्री एन जे. भट्ट प्रधान-वीएसएसई, श्रीमती नीलू सेठ, उप निदेशक (राभा), श्री सोनू जैन, सहायक निदेशक (राभा) सैक-इसरो की उपस्थिति में हुआ। विद्यालय के छात्रों ने सरस्वती वंदना और स्वागत नृत्य द्वारा मंचासीन अतिथियों का अभिनंदन किया। अतिथियों का पुष्पगुच्छ एवं पुस्तक देकर स्वागत किया गया। श्रीमती नीलू सेठ ने कार्यक्रम का परिचय दिया। जिला शिक्षा अधिकारी ने अपने उद्बोधन में छात्रों को विज्ञान की उपयोगिता के बारे में बताया एवं प्रश्न पूछने और जिज्ञासा जाहिर करने के लिए प्रोत्साहित किया। श्री एन. जे. भट्ट ने अपने भाषण से छात्रों को विज्ञान विषय के प्रति प्रेरित किया। स्थानीय न्यूज चैनल में कार्यक्रम का कवरेज

दिखाया गया तथा समाचार-पत्र में समाचार प्रकाशित हुआ।

उद्घाटन के पश्चात् दो व्याख्यानों का आयोजन किया गया। अंतरिक्ष उपयोग केंद्र के वैज्ञानिक श्री निलेश मकवाणा ने 'भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम, समाज, विज्ञान एवं सुरक्षा के लिए अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी का उपयोग- एक परिचय' विषय पर हिंदी और गुजराती भाषा में तथा श्री हर्ष त्रिवेदी ने 'गगनयान - भारत का पहला समानव अंतरिक्ष अभियान' विषय पर गुजराती एवं हिंदी में रोचक तरीके से ज्ञानवर्धक एवं उपयोगी व्याख्यान दिए। व्याख्यानों के दौरान एवं पश्चात् छात्रों से विभिन्न प्रश्न भी पूछे गए। प्रश्नोत्तर सत्र में बच्चों ने अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी और विज्ञान से संबंधित बड़े ही रोचक प्रश्न पूछे और वैज्ञानिकों ने उनकी जिज्ञासाओं का समाधान किया। इसके बाद छात्रों के लिए प्रश्नमंच एवं वक्तृत्व प्रतियोगिताएँ आयोजित की गईं। श्री सोनू जैन एवं श्रीमती नीलू सेठ ने वक्तृत्व प्रतियोगिता को संचालित किया एवं अंत में प्रश्नमंच एवं वक्तृत्व प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कृत किया गया।

इस कार्यक्रम के लिए कुछ उत्साही छात्रों को एक दिन पहले अंतरिक्ष प्रदर्शनी के कुछ मॉडलों की संक्षिप्त जानकारी दी गई थी। कार्यक्रम के दिन इन छात्रों ने स्वयंसेवा देते हुए अपने साथी छात्रों को बहुत ही अच्छी तरह से इन मॉडलों के बारे में जानकारी प्रदान की। इससे स्वयं उनके ज्ञान तथा आत्मविश्वास में वृद्धि हुई और अन्य छात्रों को भी प्रेरणा मिली। छात्रों द्वारा विज्ञान मॉडल भी प्रदर्शित किए गए, जिसके लिए उन्हें पुरस्कृत किया गया।



झलकियाँ – राजभाषा कार्यशाला



सैक/ डेकू के नवनियुक्त कर्मचारियों के लिए 02 जून 2021 को आयोजित एक दिवसीय राजभाषा कार्यशाला की झलकियाँ। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता श्री शशिकांत ए. शर्मा, समूह निदेशक, वीआरजी, एप्सा ने की।



सैक/ डेकू के नवनियुक्त कर्मचारियों के लिए 28 जुलाई 2021 को आयोजित एक दिवसीय राजभाषा कार्यशाला की झलकियाँ। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता श्री आशीष बी. मिश्रा, समूह निदेशक, एसईजी, सेडा ने की।



सैक/ डेकू के नवनियुक्त कर्मचारियों के लिए 27 अक्टूबर 2021 को आयोजित एक दिवसीय राजभाषा कार्यशाला की झलकियाँ। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता डॉ. सी.वी.एन. राव, समूह निदेशक, एमएसटीजी, एमआरएसए ने की।



सैक/ डेकू के प्रकार्यात्मक पदनामित अधिकारियों के लिए 26 नवंबर 2021 को कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में तिमाही प्रगति रिपोर्ट भरने तथा राजभाषा नीति-नियमों के संबंध में जानकारी प्रदान की गई। कार्यशाला की अध्यक्षता श्री नीलेश देसाई, निदेशक, सैक ने की।

सैक मुख्य परिसर एवं बोपल परिसर में स्वतंत्रता दिवस समारोह का आयोजन



अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन



- नीलू सेठ
उप निदेशक (राजभाषा)

दिनांक : 13-14 नवंबर 2021

स्थल : दीनदयाल हस्तकला संकुल (व्यापार सुविधा केंद्र एवं शिल्प संग्रहालय), वाराणसी

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय अपने संवैधानिक दायित्वों के अंतर्गत केंद्र सरकार के कार्यालयों/विभागों/बैंकों आदि में राजभाषा हिंदी के प्रसार और प्रभावी कार्यान्वयन के लिए उत्तरदायी है। इसी क्रम में राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा दिनांक 13 एवं 14 नवंबर 2021 को उत्तर प्रदेश के वाराणसी शहर में प्रथम अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन का आयोजन किया गया। अंतरिक्ष उपयोग केंद्र, इसरो अहमदाबाद की ओर से मुझे सम्मेलन में प्रतिभागिता के लिए नामित किया गया।

माननीय गृह एवं सहकारिता मंत्री की अध्यक्षता में आयोजित इस द्वि-दिवसीय राजभाषा सम्मेलन में विभिन्न सत्रों में राजभाषा हिंदी की वर्तमान स्थिति पर चर्चा की गई। इस सम्मेलन में देशभर से लगभग दो हजार से अधिक विद्वत्जन, अधिकारियों व शोध छात्रों ने प्रतिभागिता की।

13 नवंबर 2021 को प्रातः 10 बजे कार्यक्रम का उद्घाटन सत्र आयोजित किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री अमित शाह, माननीय गृह एवं सहकारिता मंत्री, भारत सरकार रहे। उन्होंने अपने उद्घोषण में कहा कि हिंदी बोलने में शर्म नहीं, गर्व महसूस करना चाहिए। यह सोच हिंदी को सर्वमान्य भाषा का दर्जा दिलाएगी। देशभर के अभिभावकों से उन्होंने अपील कि वे अपने बच्चों के साथ मातृभाषा में बात करें। इससे भाषा का तो भला होगा ही, बच्चों को भी लाभ मिलेगा, क्योंकि मौलिक चिंतन अपनी भाषा में ही संभव है। अपने उद्घोषण में उन्होंने कहा कि आजादी के अमृत महोत्सव के तहत पहली बार देश की राजधानी के बाहर यह आयोजन हो रहा है। आगे उन्होंने कहा कि जो देश अपनी भाषा खो देता है वो अपनी सभ्यता, संस्कृति और मौलिक चिंतन खो देता है। हमें हिंदी का मान वैश्विक स्तर पर बढ़ाना है। गृहमंत्री ने कहा कि हिंदी स्थानीय भाषाओं की सहेली है और मुझे अपनी मातृभाषा गुजराती से ज्यादा हिंदी से प्यार है। हमें अपनी राजभाषा को मजबूत करने के लिए

सरल शब्दावली का विकास करना चाहिए। उन्होंने कहा कि भारत जब स्वतंत्रता का अमृत महोत्सव मना रहा हो तो राजभाषा एवं क्षेत्रीय भाषाएं इतनी प्रभावी हो जानी चाहिए कि हमें किसी विदेशी भाषा पर निर्भर न रहना पड़े।

उपर्युक्त के अतिरिक्त गृह मंत्री के उद्घोषण की मुख्य बातें निम्नानुसार थीं -

- ❖ गृह मंत्रालय में 100 फीसदी कार्य हिंदी में हो रहा है, अन्य विभाग भी प्रयास करें।
- ❖ देश का इतिहास, संस्कृति अलग-अलग भाषा में विभिन्न राज्यों में भरी पड़ी है। राजभाषा में अनुवाद की मुहिम चलनी चाहिए।
- ❖ दुनिया में सबसे ज्यादा बोली जाने वाली लिपिबद्ध भाषाएं भारत में हैं।

कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि माननीय मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ, उ.प्र. सरकार ने भी अपने उद्घोषण में स्थानीय भाषा में साहित्य सृजन के महत्व पर बल दिया। इस अवसर पर केंद्रीय मंत्री डॉ. महेंद्रनाथ पांडेय, गृह राज्यमंत्री श्री अजय कुमार मिश्रा, गृह राज्य मंत्री श्री नित्यानंद राय, गृह राज्यमंत्री श्री निशित प्रामाणिक, राज्यसभा के उप सभापति हरिवंश नारायण, प्रदेश विधानसभा स्पीकर हृदयनारायण दीक्षित, पूर्व राज्यपाल केशरीनाथ त्रिपाठी, प्रदेश अध्यक्ष स्वतंत्र देव सिंह आदि उपस्थित रहे।

उद्घाटन सत्र के पश्चात् विविध विषयों पर समानांतर सत्र संचालित किए गए। सायंकाल में प्रतिभागियों के लिए सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। अगले दिन प्रतिभागियों को प्रेमचंद संस्थान, लमही के दर्शन हेतु ले जाया गया। यह मेरा परम सौभाग्य था कि मुंशी प्रेमचंद की जन्मस्थली के दर्शन कर उन्हें श्रद्धासुमन अर्पित करने का अवसर प्राप्त हुआ। लमही से वापसी के पश्चात् पुनः दो समानांतर सत्र आयोजित हुए, जिनमें समसामयिक विषयों पर परिचर्चा की गई। तत्पश्चात् अपराह्न में समापन सत्र के दौरान दो दिवसीय सम्मेलन का सार प्रस्तुत किया गया।

यह दो दिवसीय सम्मेलन भारतीय स्तर पर प्रथम प्रयास था, जिसमें हिंदी की गरिमा को और अधिक बढ़ावा मिला। वाराणसी की पावन स्थली पर जाकर प्रतिभागियों ने गंगा आरती के दर्शन का भी सौभाग्य प्राप्त किया।

अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन - वाराणसी



हिंदी माह पुरस्कार वितरण समारोह 2021



भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम की झलकियाँ



अंतरिक्ष उपयोग केंद्र (सैक)
भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो)
अंतरिक्ष विभाग, भारत सरकार
अहमदाबाद - 380015